(51वां खजुराहो नृत्य समारोह के प्रकाशित समाचार)

भोपाल में 13 फरवरी, 2025 को आयोजित प्रेस वार्ता के समाचार

Khajuraho Dance Festival from Feb 20-26

Longest mega classical dance marathon to get into Guinness World record

Our Staff Reporter
BHOPAL

The department of culture is going to organise the longest mega classical dance marathon (relay) including all major Indian classical dances to get into the Guinness World record at International Khajuraho Dance Festival 2025. The seven-day dance festival will start from February 20-26.

Artistes from Madhya Pradesh will perform the classical dances including Kathak, Bharatanatyam, Kuchipudi, Odissi for more than 24 hours to get into the record. Choreographed and directed by actor and disciple of Pandit Birju Maharaj, Prachi Shah from Mumbai, the dance marathon will begin February 19 at 2 pm and will continue till February 20 at 5 pm at Adivart Museum, Khajuraho. The final performance will be held in presence of Chief Minister Mohan Yadav at 5pm. Kaushik Basu from Mumbai will compose and direct the dance performance.

Representational pic

Artistes to perform for more than 24 hours under direction of actor and disciple of Pandit Birju Maharaj, Prachi Shah

Initially 25 groups of 5 artists each will be formed in which around 125 artists will participate. Students of senior art gurus of departmental music college/university and dance have been invited for the presentation.

Director culture N P Namdeo has told the Free Press that the Khajuraho temples have been declared a World Heritage Site by UNESCO. "So, the department is trying to highlight Khajuraho at the global level through dance," he said.

In a first, Children's Dance Festival

Besides, Khajuraho Children's Dance Festival is also being organised for the first time to preserve the Indian classical dance tradition and to increase cultural awareness among the young generation. Online applications were sought for participation; 50 applications were received for Bharatnatyam, 13 for Odissi, 2 for Kuchipudi, 222 for Kathak, 1 for Mohiniyattam and 22 for traditional. Of them, 14 children have been selected for the performance by the selection committee of senior dance gurus. The performances of the selected dancers will be held on a special stage from 4 to 5:30 pm," Namdeo added.

खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव, प्रणाम, सृजन और नाद जैसे नवाचार

51वां खजुराहो नृत्य समारोह 20 से, वृहद नृत्य मैराथन रिले से बनेगा विश्व रिकॉर्ड

ब्यूरो, भोपाल। संस्कृति, पर्यटन और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने कहा कि खजुराहो में 51वां खजुराहो नृत्य समारोह 20 से 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित किया जायेगा। खजुराहो स्थित कंदरिया महादेव मंदिर एवं देवी जगदंबा मंदिर के मध्य मंदिर प्रांगण में आयोजित होने वाले इस समारोह में इस वर्ष कई नए आयाम तथा अनुषांगिक गतिविधियां जोड़ी गई हैं। विशेष रूप से सभी प्रमुख भारतीय शास्त्रीय नृत्यों यथा कथक, भरतनाट्यम, कुचीपुड़ी, ओडिसी आदि के साथ सबसे लम्बा वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन (रिले) प्रस्तुति की जा रही है, जिसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज करने का प्रयास रहेगा।

प्रमुख सचिव, संस्कृति एवं पर्यटन शिव शेखर शुक्ला ने बताया कि 51वां खजुराहो नृत्य समारोह का शुभारम्भ 20 फरवरी, 2025 को सायं 6:30 बजे माननीय मुख्यमंत्री जी की गरिमामयी उपस्थिति में होगा। इस अवसर पर मध्यप्रदेश राज्य रूपंकर कला पुरस्कार अलंकरण समारोह भी आयोजित किया जाएगा। समारोह में नृत्य प्रस्तुतियां प्रतिदिन सायं 6:30 बजे से प्रारम्भ होंगी। सबसे लंबे वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन (रिले) प्रस्तुति में निरन्तर 24 घंटे से भी अधिक नृत्य प्रस्तुतियां होंगी। यह गतिविधि आदिवर्त संग्रहालय, खजुराहो में होगी। गतिविधि का शुभारम्भ 19 फरवरी, 2025 को दोपहर 2 बजे होगा जो निरन्तर 20 फरवरी, 2025 को सायं 5 बजे तक आयोजित की जाएगी।

समारोह में खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव के अंतर्गत मध्यप्रदेश के मूल निवासी 10 से 16 साल के युवा नृत्य कलाकार एक पृथक मंच पर अपनी प्रस्तुति देंगे। ये प्रस्तुतियां खजुराहो नृत्य समारोह परिसर में स्थित पृथक मंच पर सायं 5 से 6 बजे तक होंगी। खजुराहो नृत्य समारोह में इस वर्ष एक नई अनुषांगिक गतिविधि प्रणाम को जोड़ा गया है। इस गतिविधि के अंतर्गत सुविख्यात नृत्यांगना और पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के जीवन और कला अवदान को अभिव्यक्त करते आयोजन होंगे। जिनमें डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के जीवन और कला अवदान पर एकाग्र प्रदर्शनी, व्याख्यान एवं संवाद सह प्रदर्शन भी शामिल होंगे।

पद्म पुरस्कार प्राप्त और एसएनए अवॉर्डी कलाकार देंगे नृत्य प्रस्तुतियां

खजुराहो नृत्य समारोह में कुचिपुड़ी की सुप्रसिद्ध नृत्यांगना पद्मभूषण विदुषी राधा-राजा रेड्डी, मणिपुरी नृत्य कलाकार पद्मश्री दर्शना झवेरी, छाऊ नृत्य कलाकार पद्मश्री शशधर आचार्य, ओडिसी नृत्य कलाकार प्रवत कुमार स्वाइन, मोहिनीअट्टम नृत्य कलाकार पद्मश्री विदुषी भारती शिवाजी, कथक नृत्य कलाकार पद्मश्री विदुषी शोभना नारायण, सत्रीय नृत्य कलाकार पद्मश्री गुरु जतिन गोस्वामी अपने नृत्य का प्रदर्शन करेंगे।

स्वदेश

भोपाल - संस्करण

14 Feb 2025

51वां खजुराहो नृत्य महोत्सव 20 से, मुख्यमंत्री करेंगे शुभारंभ

'शास्त्रीय नृत्य मैराथन' का विश्व कीर्तिमान बनाने की तैयारी

विशेष संवाददाता ■ भोपाल

खजुराहो के एक हजार साल पुराने दो मंदिरों के प्रांगण में 51वें खजुराहो नृत्य महोत्सव का शुभारंभ 20 फरवरी को शाम 6.30 बजे मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव करेंगे। समारोह 26 फरवरी तक चलेगा। मप्र शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी भोपाल द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मप्र पर्यटन एवं जिला प्रशासन के सहयोग से आयोजित किए जा रहे इस समारोह में शास्त्रीय नृत्य मैराथन का विश्व कीर्तिमान बनाने की भी तैयारी की गई है। इसके अलावा खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव, प्रणाम, सृजन और नाद जैसे नवाचार भी होंगे।

मप्र के संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास और धर्मस्व मंत्री धर्मेन्द्र लोधी एवं प्रमुख सचिव पर्यटन शिवशेखर शुक्ला ने आयोजन की जानकारी मीडिया से साझा करते हुए बताया कि इस बार महोत्सव में भारतीय संस्कृति और कलाओं से परिचित कराती अनुसांगिक गतिविधियां आकर्षण का केन्द्र होंगी। कार्यक्रम में पद्मभूषण, पद्मश्री,

एसएनए अवॉर्ड प्राप्त नृत्य कलाकारों के साथ ही युवाओं को भी प्रदर्शन का अवसर मिलेगा। इस अवसर पर मप्र राज्य रूपंकर कला पुरस्कार अलंकरण समारोह भी होगा। समारोह में नृत्य प्रस्तुतियां प्रतिदिन शाम 6.30 बजे से प्रारंभ होंगी।

24 घंटे निरंतर नृत्य से बनेगा कीर्तिमान

लोधी ने बताया कि भारतीय शास्त्रीय नृत्यों जैसे कथक, भरतनाट्यम, कुचीपुड़ी, ओडिसी आदि के साथ लम्बे, वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन (रिले) की प्रस्तुति होगी, जिसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज करने का प्रयास होगा। इसमें निरंतर 24 घंटे से अधिक नृत्य प्रस्तुतियां होंगी। इसका शुभारंभ 19 फरवरी को दोपहर 2 बजे होगा, जो निरंतर 20 फरवरी की शाम 5 बजे तक चलेगी। इसमें नृत्य निर्देशन कथक नृत्यांगना एवं फिल्म अभिनेत्री श्रीमती प्राची शाह एवं संगीत निर्देशक कौशिक बसु द्वारा किया जाएगा। इसके लिए 5-5 नृत्य कलाकारों के 25 समूह तैयार किए गए हैं।

समिट में शामिल मेहमानों-निवेशकों को देंगे आमंत्रण

खजुराहो नृत्य महोत्सव के बीच ही 24 एवं 25 फरवरी को राजधानी भोपाल में ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट का आयोजन होना है। मंत्री धर्मेन्द्र लोधी ने बताया कि समिट में शामिल मेहमानों को भी महोत्सव का आमंत्रण देंगे तथा इच्छुक सभी अतिथियों को महोत्सव में ले जाकर उन्हें भारतीय नृत्य कला-संस्कृति से परिचित कराएंगे।

श्री लोधी ने बताया कि खजुराहो बाल महोत्सव में मप्र के 10 से 16 साल आयु के चयनित 15 कलाकार मंच पर अपनी प्रस्तुति देंगे।

यह भी होंगे आयोजन

प्रणाम कार्यक्रम में वरिष्ठ भरतनाट्यम नृत्यांगना पद्म विभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के जीवन एवं कला अवदान पर एकाग्र प्रदर्शनी एवं व्याख्यान होंगे। इसके अलावा पद्म पुरस्कार प्राप्त और एसएनए अवॉर्डी कलाकार नृत्य प्रस्तुतियां देंगे।

नाद कार्यक्रम में भारतीय लोक एवं शास्त्रीय संगीत में उपयोगी वाद्यों की प्रदर्शनी, चित्र कथन में नृत्योत्सव का सजीव चित्रांकन, सृजन, हुनर और स्वाद, कलावार्ता में कलाविदों एवं कलाकारों के मध्य संवाद, मप्र पर्यटन की गतिविधियां होंगी। प्रमुख सचिव श्री शुक्ला ने बताया कि खजुराहो नृत्य महोत्सव विश्व का सर्वश्रेष्ठ नृत्य उत्सव है जो 1974 में प्रारंभ हुआ।

हरिभूमि

epaper.haribhoomi.com
Bhopal Main - 14 Feb 2025 - Page 10

51वां खजुराहो नृत्य समारोह 20 से 26 तक

खजुराहो में इस बार बनेगा 'वृहद नृत्य मैराथन रिले' का वर्ल्ड रिकॉर्ड

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

स्काई डाइविंग, हॉट एयर बैलून, कैम्पिंग, विलेज टूर जैसी रोमांचक पर्यटन गतिविधियां होंगी खास

यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज साइट खजुराहो के एक हजार वर्ष प्राचीन मंदिरों की दिव्य आभा में 51वां खजुराहो नृत्य समारोह 20 से 26 फरवरी तक आयोजित किया जाएगा। खजुराहो स्थित कंदरिया महादेव मंदिर एवं देवी जगदंबा मंदिर के मध्य मंदिर प्रांगण में आयोजित होने वाले इस अंतर्राष्ट्रीय नृत्य समागम की भव्यता इस वर्ष अपने उरूज पर होगी। समारोह में इस वर्ष खास रुप से लगातार 24 घंटे तक विविध नृत्य प्रस्तुतियां 'वृहद नृत्य मैराथन रिले' के द्वारा प्रदेश के 125 कलाकार लगातार नृत्य करेंगे और वर्ल्ड रिकार्ड बनाएंगे। इसके साथ ही महोत्सव में स्काई डाइविंग, हॉट एयर बैलून, कैम्पिंग, विलेज टूर जैसी रोमांचक पर्यटन गतिविधियां होंगी खास होंगी। यह कहना है संस्कृति, पर्यटन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) धर्मेंद्र सिंह लोधी का, जो गुरुवार को जनजातीय संग्रहालय में आयोजित प्रेस वार्ता में बोल रहे थे।

बाल नृत्य महोत्सव के रूप में जोड़ी नई गतिविधि

प्रमुख सचिव, संस्कृति एवं पर्यटन शिव शेखर शुक्ला ने बताया कि 51वां खजुराहो नृत्य समारोह का शुभारम्भ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में किया जाएगा। इस अवसर पर मप्र राज्य रूपंकर कला पुरस्कार अलंकरण समारोह भी आयोजित होगा। इस अवसर पर संचालक संस्कृति एनपी नामदेव, निदेशक, उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी डॉ. धर्मेंद्र पारे उपस्थित रहे। शुक्ला ने कहा कि खजुराहो नृत्य समारोह में पहली बार एक नई गतिविधि जोड़ी है, जिसमें 310 नृत्य कलाकारों के आवेदन प्राप्त हुए थे और वरिष्ठ नृत्य गुरुओं की चयन समिति द्वारा 15 कलाकारों का चयन किया गया।

डिजिटल मीडिया में प्रेस वार्ता

द टाइम्स ऑफ इंडिया

https://timesofindia.indiatimes.com/city/bhopal/khajurao-fest-to-begin-with-dancemarathon-world-record-attempt/articleshow/118223488.cms

डीबी डिजिटल

https://www.bhaskar.com/local/mp/bhopal/news/51st-khajuraho-dance-festival-from-20-to-26-february-134472770.html

पंजाब केसरी

https://www.punjabkesari.com/other-states/madhya-pradesh/dance-festival-in-khajuraho-from-february-20-in-mp-world-record-attempt-in-classical-dance-marathon

हिन्दुस्थान

https://www.hindusthansamachar.in/Encyc/2025/2/13/51st-Khajuraho-Dance-Festival-at-UNESCO-World-Heri.php

जी न्यूज

https://zeenews.india.com/hindi/india/madhya-pradesh-chhattisgarh/mp/khajuraho-125-artists-will-create-guinness-book-world-record-by-dancing-for-24-hours-in-madhya-pradesh/2646005

न्यूज प्लस

https://newsplus21.com/51st-khajuraho-dance-festival-will-be-held-in-khajuraho-from-20th-to-26th-february-bundeli-dance-will-get-a-platform-local-craftsmen-will-display-their-art

अमर उजाला

https://www.amarujala.com/photo-gallery/madhya-pradesh/chhatarpur/mp-news-khajuraho-dance-festival-will-start-from-february-20-cm-dr-yadav-will-inaugurate-the-festival-2024-02-18?pageId=4

एनडीटीवी

https://mpcg.ndtv.in/madhya-pradesh-news/khajuraho-dance-festival-2025-padma-awardee-classical-dancers-in-51st-international-dance-festival-world-record-know-the-complete-schedule-7703311

लाइव न्यूज

https://livevns.news/state/madhyapradesh/51st-khajuraho-dance-festival-at-unesco-world-heriphp/cid16222022.htm

के न्यूज इंडिया

https://knewsindia.in/big-breaking-2/51st-khajuraho-dance-festival-from-20th-to-26th-february-world-record-will-be-created-with-the-mega-dance-marathon-relay/

द नारदमुनि

https://www.thenaradmuni.com/news/51st-khajuraho-dance-festival-from-20-to-26-february

युगवार्ता

https://www.yugwarta.com/Encyc/2025/2/13/51st-Khajuraho-Dance-Festival-from-20th-to-26th-Fe.html

पीपुल्स अपडेट

https://peoplesupdate.com/51st-khajuraho-dance-festival-from-20th-to-26th-february-dance-marathon-relay-will-create-a-world-record/

समय जगत

https://www.youtube.com/watch?v=0YKrsBh5-pQ

थॉमसन न्यूज

https://thomson-news.com/?p=104812

अनोखा तीर

https://anokhateer.com/archives/124742#:~:

अड्डा 247

https://currentaffairs.adda247.com/51st-khajuraho-dance-festival-2025-a-celebration-of-classical-art-and-heritage/

दिनांक 20 फरवरी, 2025

भरतनाट्यम से शुरू हुई 24 घंटे तक चलने वाली शास्त्रीय नृत्यों की मैराथन

खजुराहो | 51वें नृत्य समरोह के एक दिन पूर्व बुधवार को खजुराहो के आदिवर्त जनजतीय लोक कला राज्य संग्रहालय के मंच पर शास्त्रीय नृत्य की सबसे लंबी मैराथन रिले का आयोजन किया। कलेक्टर पार्थ जैसवाल के मुख्य आतिथि और एसपी अगम जैन के विशिष्ट आतिथ्य रहे। इस मैराथन की शुरुआत भरत नाट्यम नृत्य से हुई। इस अवसर पर वर्ल्ड गिनीज बुक अवार्ड के अधिकारी निश्चल बलोट ने कहा कि यह शास्त्रीय नृत्य ऐतिहासिक है। कोऑर्डिनेटर प्रत्यूष दाधीच ने बताया कि इस मैराथन में भरत नाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी, ओडिसी और मोहिनीअट्टम नृत्य के 139 नृत्यकार भाग ले रहे हैं। जो 24 घंटे तक लगातार नृत्य कर रिकार्ड ब्रेक करेंगे। गौरतलब है कि पहले राउंड में भरतनाट्यम नृत्यकारों ने दोपहर 2.33 बजे से 2.45 बजे तक लगातार नृत्य किया। इसके तुरंत बाद कथक नृत्यकारों ने अपना नृत्य मैराथन के रूप में प्रस्तुत किया। बता दें कि यह मैराथन कल 20 फरवरी को चार बजे तक लगातार दिन- रात चलेगी। 51 वें नृत्योत्सव समारोह का शुभारंभ कथकली से होगा और इसी संध्या पर दूसरे चरण में पल्लवी कृष्णनन मोहिनीअट्टम और तीसरे चरण में कल्याणी फारे ओडिसी नृत्य प्रस्तुत करेंगी।

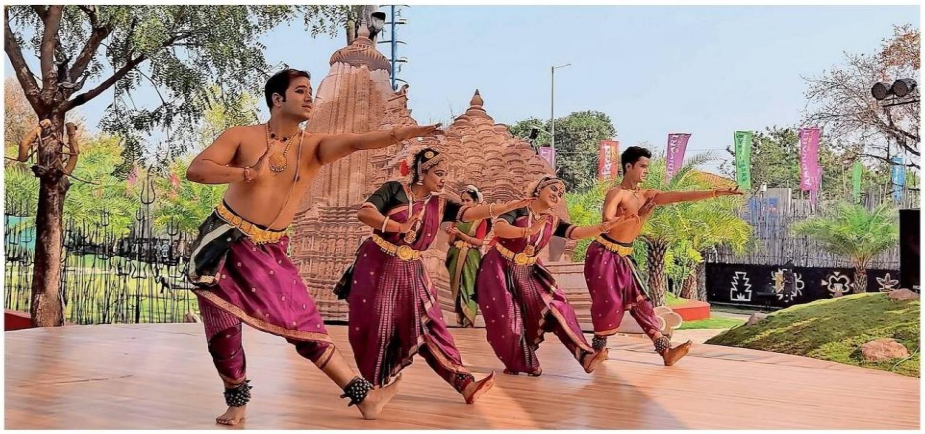

THE TIMES OF INDIA, BHOPAL
THURSDAY, FEBRUARY 20, 2025

139 dancers to attempt a world record at Khajuraho fest today

Vinita.Chaturvedi
@timesofindia.com

Khajuraho dance festival begins today; it will conclude on Feb 26

Bhopal: In its 51st edition, MP's biggest classical dance fiesta has set the standards a few notches higher with a world record attempt that is not only extremely ambitious but also celebrates Indian culture with a panache. As Khajuraho dance festival begins today at UNESCO World Heritage Site Khajuraho in Chhatarpur district, the classical dance aficianados are in for week-long treats that will overwhelm their senses.

This mega festival organised by department of culture and tourism, MP and Ustad Allauddin Khan Sangeet Evam Kala Academy, will be inaugurated by chief minister Mohan Yadav; it will see some of the doyens of classical dance forms captivating the attention of the audience.

But on the inaugural day, all eyes are riveted on 139 dancers striving to ink their names in the Guinness Book Of World Records. The mega dance marathon began on Wednesday with students of Raja Mansingh Tomar University presenting Vinayak Pushpanjali and Mallari in Bharatanatyam tradition. The event continued non-stop with students from dance schools of Indore, Jabalpur, Bhopal, Ujjain, Mansaur and Narsinghgarh presenting diverse classical dance forms of India.

Other highlights of day-one of the festival would be Bal Nritya Mahotsav, a first at Khajuraho. The main event, however, will commence at 6.30pm, where the audience will get up close with the dancing acumen of Pallavi Krishnan and Kalyani-Vaidehi Phagre.

खजुराहो में वृहद नृत्य मैराथन का हुआ शुभारंभ, 136 कलाकार दे रहे प्रस्तुति

» खजुराहो डांस फेस्टिवल में कथकली, मोहिनीअट्टम और ओडिसी की प्रस्तुति आज

सिटी भास्कर | छतरपुर

इस बार खजुराहो नृत्य समारोह में कई आयोजन किए जा रहे हैं। इसके तहत बुधवार को नृत्य मैराथन की शुरूआत हुई। आदिवर्त कला संग्रहालय में 24 घंटे तक लगातार चलने वाली वृहद नृत्य मैराथन का शुभारंभ कलेक्टर पार्थ जैसवाल ने किया। गुरुवार से कंदरिया महादेव और देवी जगदंबा मंदिर के बीच स्थित प्रांगण में 51वें खजुराहो नृत्य महोत्सव का शुभारंभ होगा। पहले दिन कथकली, मोहिनीअट्टम और ओडिसी की प्रस्तुति होगी।

छतरपुर| आदिवर्त म्यूजियम में बुधवार को वृहद नृत्य मैराथन की शुरुआत हुई। इसमें कलाकार 24 घंटे नृत्य की प्रस्तुति दे रहे हैं।

24 घंटे चलेगी नृत्य मैराथन

बुधवार को आदिवर्त म्यूजियम में 24 घंटे से अधिक लगातार चलने वाले वृहद नृत्य मैराथन का कलेक्टर पार्थ जैसवाल ने दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ किया। इस अवसर पर एसपी अगम जैन उपस्थित रहे। कार्यक्रम सफल होने पर सबसे लंबे वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन प्रस्तुति में निरन्तर 24 घंटे से भी अधिक नृत्य प्रस्तुतियों का रिकॉर्ड बनेगा। इनमें 4 मुख्य नृत्य कलाकार कथक, भरतनाट्यम, ओडिसी, कुचिपुड़ी की प्रस्तुति दे रहे हैं। गतिविधि का शुभारम्भ बुधवार को दोपहर 2 बजे प्रारंभ होकर निरंतर गुरुवार को शाम 5 बजे तक चलेगा। इसका नृत्य निर्देशन एवं संयोजन कथक नृत्यांगना तथा फिल्म अभिनेत्री प्राची शाह, संगीत निर्देशन एवं संयोजन कौशिक बसु द्वारा किया जा रहा है। इसमें प्रारंभिक रूप से 5-5 कलाकारों के 25 ग्रुप भाग ले रहे हैं, जिसमें लगभग 136 कलाकारों ने भाग ले रहे हैं, जो विभागीय संगीत महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय एवं नृत्य के वरिष्ठ कलागुरुओं के साधनारत शिष्य हैं। इस अवसर पर कलेक्टर पार्थ जैसवाल ने कहा कि इस बार का खजुराहो नृत्य समारोह कई मायनों में खास है। इस बार कई गतिविधियों

का समायोजन नृत्य समारोह में किया गया है। जहां बच्चों के लिए अलग से महोत्सव आयोजित हो रहा है, वहीं नृत्य कलाकारों की भाव-भंगिमाओं को चित्रकार पेंटिंग में संजोएंगे। इस बार का आयोजन को उत्कृष्ट बनाने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं।

दैनिक भास्कर
Thu, 20 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76870507

कला-संस्कृति में प्रदेश ने रच दिया इतिहास

51वें खजुराहो नृत्य समारोह के बाद मप्र के नाम दर्ज होंगे 5 वर्ल्ड रिकॉर्ड

हरिभूमि न्यूज HH भोपाल

बनेगा पांचवा वर्ल्ड रिकॉर्ड

20-26 फरवरी को खजुराहो में आयोजित होने जा रहे 51वें खजुराहो नृत्य समारोह में 136 नृत्यकलाकार अलग अलग ग्रुप्स में लगातार 24 घंटे तक नृत्य प्रस्तुतियां देंगे। [illegible] शास्त्रीय नृत्य मैराथन (रिले) प्रस्तुति में निरन्तर 24 घंटे से भी अधिक नृत्य प्रस्तुतियां होंगी। गतिविधि का शुभारंभ 19 फरवरी को दोपहर 2 बजे से हुआ और यह गतिविधि निरंतरता में 20 फरवरी को शाम 5 बजे तक की जाएगी। जिसमें नृत्य निर्देशन कथक नृत्यांगना तथा फिल्म अभिनेत्री प्राची शाह, मुंबई एवं संगीत संयोजन कौशिक बसु, मुंबई करेंगे। प्रारंभिक रूप से 5-5 कलाकारों के मान से 25 ग्रुप तैयार किए गए।

खजुराहो डांस फेस्ट में 1484 कलाकारों ने बनाया था रिकॉर्ड

20 फरवरी 2024 को खजुराहो में 1484 कलाकारों ने एक साथ कथक नृत्य कर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था। खजुराहो में [illegible] की लय पर 1484 कथक नृत्य साधकों के [illegible] ने 20 से 26 फरवरी तक चलने वाले 50वें खजुराहो नृत्य समारोह में गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड बनाकर प्रदेश को गौरवान्वित किया। इस प्रस्तुति में कलाकारों ने हाथों में दीपक लेकर लय और ताल के साथ एक जैसी मुद्रा में नृत्य प्रस्तुत कर सबको को हैरत में डाल दिया था।

बनाया रिकॉर्ड

सात हजार प्रतिभागियों ने किया सामूहिक गीता पाठ

11 दिसंबर 2024 को 11 दिसंबर को भोपाल में गीता जयंती के अवसर पर 7 हजार प्रतिभागियों ने सामूहिक गीता पाठ किया। इसमें 3721 आचार्य और बटुक शामिल थे। मोतीलाल नेहरू स्टेडियम में हुए गीता के तीसरे अध्याय 'कर्म योग' का सस्वर पाठ करके वर्ल्ड रिकार्ड बनाया। इस मौके पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी मौजूद रहे।

कला और संस्कृति से धन्य मप्र की भूमि ने अब नया रिकार्ड रचा है। साल 2024 में मध्य प्रदेश ने खजुराहो नृत्य समारोह, गीता पाठ, डमरू वादन में विश्व रिकार्ड बनाया। वहीं साल के अंत में तानसेन समारोह में विश्व रिकार्ड बनाकर अपनी अलग पहचान बनाई। एक के बाद एक चार वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम करने के बाद अब 20 फरवरी को 51वें खजुराहो नृत्य समारोह में मप्र पांचवा वर्ल्ड रिकार्ड अपने नाम दर्ज करने जा रहा है।

1500 लोगों ने डमरू बजाकर बनाया था विश्व रिकॉर्ड

5 अगस्त 2024 को महाकाल की नगरी उज्जैन ने एक नया कीर्तिमान अपने नाम किया। महाकाल लोक स्थित शक्तिपथ पर 1500 डमरू वादकों ने प्रस्तुति देकर यह रिकॉर्ड बनाया और इस प्रकार 1500 डमरू एक साथ बजाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बन गया।

ग्वालियर में वर्ल्ड रिकॉर्ड, 546 कलाकारों ने बजाए थे वाद्ययंत्र

15 दिसंबर 2024 को ग्वालियर में 100वें तानसेन संगीत समारोह में एक नया कीर्तिमान रच गया। जिसमें 546 कलाकारों ने 9 भारतीय वाद्य यंत्रों पर राग मल्हार, मियां की तोड़ी और दरबारी कान्हड़ा का एक साथ वादन करके गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड बनाया।

पत्रिका

139 भारतीय शास्त्रीय नृत्य कलाकार कर रहे हैं सहभागिता

वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन शुभारंभ, 24 घंटे से अधिक समय तक होगा नृत्य

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

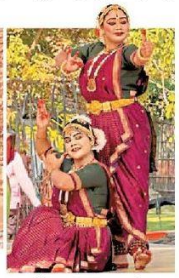

छतरपुर. ऐतिहासिक खजुराहो नगर एक बार फिर कला और संस्कृति के रंगों से भर गया है। मध्यप्रदेश के संस्कृति विभाग द्वारा आयोजित 51वें खजुराहो नृत्य समारोह के उपलक्ष्य में वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन (रिले) का आरंभ हुआ है। इस विशेष आयोजन का उद्देश्य गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाना है और 24 घंटे से अधिक समय तक शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुतियां दी जाएंगी।

कार्यक्रम का शुभारंभ आदिवर्त संग्रहालय परिसर में हुआ, जहां छतरपुर कलेक्टर पार्थ जैसवाल, पुलिस अधीक्षक अगम जैन और संस्कृति विभाग के संचालक एनपी नामदेव ने इस अनूठी नृत्य यात्रा का उद्घाटन किया। गिनीज टीम के निश्चल बारोट ने इस नृत्य रिले की विशेषता और नियमों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सबसे पहले भगवान विनायक को पुष्पांजलि अर्पित कर भरतनाट्यम नृत्य की शुरुआत की गई। इसके बाद अन्य शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुतियां जैसे कृष्ण कीर्तनम, शिव पंचाक्षर स्तोत्रम और काल भैरवाष्टकम का प्रदर्शन हुआ। राजा मानसिंह तोमर विश्वविद्यालय के नृत्य विभाग के कलाकारों ने भी अपनी प्रस्तुति दी। इस ऐतिहासिक आयोजन में 139 नृत्य कलाकारों ने सहभागिता की है, जो भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी और कुचिपुड़ी विधाओं में नृत्य प्रस्तुत करेंगे। गिनीज टीम ने बताया कि यह पहली बार इस प्रकार का रिकॉर्ड बनने जा रहा है।

इस प्रयास से कलाकारों को प्रेरणा मिलेगी

भरतनाट्यम नृत्यांगना सुश्री तनिष्का हतवलने ने कहा यह प्रयास नृत्य क्षेत्र के लिए बहुत प्रेरणादायक है। इससे नृत्य के प्रति युवाओं का उत्साह बढ़ेगा। नृत्य गुरु सुश्री पूर्वा पाण्डेय ने कहा, यह नृत्य कला में उत्कृष्टता का मार्गदर्शन करेगा और कलाकारों को प्रेरणा मिलेगी। कथक नृत्यांगना सुश्री पलक पांचाल ने कहा, यह एक अनूठा अवसर है और हम संस्कृति विभाग के आभारी हैं। इस आयोजन का समापन 20 फरवरी 2025 को होगा और उसी दिन 51वां खजुराहो नृत्य समारोह भी उद्घाटित होगा। इस समारोह में अंतरराष्ट्रीय कथकली और मोहिनीअट्टम की प्रस्तुतियां होंगी और प्रमुख नृत्य कलाकारों द्वारा कोरियोग्राफिक नृत्य प्रदर्शन भी किया जाएगा।

20/02/2025 | Chhatarpur | Page : 1
Source : https://epaper.patrika.com/

दिनांक 21 फरवरी, 2025

139 कलाकारों ने 24 घंटे लगातार नृत्य कर बनाया विश्व रिकॉर्ड

सीएम ने गिनीज बुक का सर्टिफिकेट कलाकारों को सौंपा, नृत्य समारोह के दौरान ऊर्जा और उत्साह से भरपूर रहीं बाल नृत्य प्रस्तुतियां

सिटी भास्कर | छतरपुर

मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग द्वारा वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन में विश्व रिकॉर्ड बनाया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कलाकारों का उत्साह वर्धन करते हुए उन्हें गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज सर्टिफिकेट सौंपा।

आदिवर्त संग्रहालय में 24 घंटे 9 मिनट 26 सेकंड तक विविध नृत्य शैलियों में 139 कलाकारों ने नृत्य किया। शुभारम्भ के अवसर पर वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन में प्रतिभागिता करने वाले 139 नृत्य कलाकारों द्वारा तराना अनंत की प्रस्तुति दी गई। अनंत भगवान शिव का ही एक नाम है, जो तीनों लोकों के स्वामी हैं। अनंत का अर्थ है शाश्वत। शिव अपने अर्द्धनारीश्वर स्वरूप में शक्ति को समाहित करते हैं और ब्रह्मांड के प्रत्येक पुरुष और स्त्री तत्व में सर्वव्यापी हैं। इस प्रस्तुति को प्रख्यात तालवादक कौशिक बसु द्वारा संकल्पित, संगीतबद्ध और निर्मित किया गया है। यह राग किरवानी पर आधारित और 4/4 कहरवा ताल में रचित है। प्रसिद्ध फ़िल्म अभिनेत्री और कथक नृत्यांगना प्राची शाह पांड्या एवं उनके सहयोगी अभिनव मुखर्जी द्वारा उक्त नृत्य मैराथन को कोरियोग्राफ़ किया गया। यह अद्भुत नृत्य प्रत्युष पुरु दाधीच के समन्वय में भारतीय शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न प्रमुख शैलियों में प्रस्तुत किया गया।

म्यूजियम में 5 संस्कृतियों को सहेजा : संस्कृति विभाग द्वारा गुरुवार को आदिवर्त संग्रहालय में प्रदेश के पांच सांस्कृतिक जनपदों क्रमशः मालवा, निमाड़, चंबल, बुंदेलखंड और बघेलखंड के जीवन को अभिव्यक्त करते उनके घर, घरेलू वस्तुएं और लोक देवता को आकर्षक ढंग से निर्मित कर लोकार्पित किया गया। लोकार्पण सांसद खजुराहो वीडी शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्कृति मंत्री धर्मस्व श्री धर्मेंद्र सिंह लोधी, विधायक अरविन्द पटेरिया की भी उपस्थिति रही। विभाग का यह प्रयत्न है कि आदिवर्त संग्रहालय को देखने आने वाला देशी और विदेशी पर्यटक प्रदेश की समृद्ध संस्कृति की एक झलक यहां अनुभव कर सके।

छतरपुर| मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने खजुराहो में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में नाम दर्ज करवाने का सर्टिफिकेट नृत्य कलाकारों को सौंपा।

दैनिक भास्कर
Fri, 21 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76850129

भोपाल 21-02-2025

दैनिक भास्कर

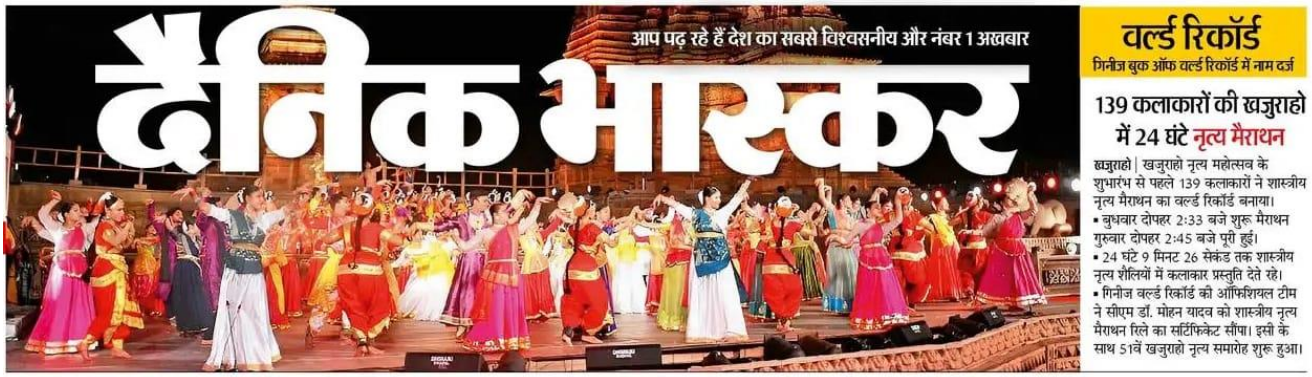

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

वर्ल्ड रिकॉर्ड

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज

139 कलाकारों की खजुराहो में 24 घंटे नृत्य मैराथन

खजुराहो | खजुराहो नृत्य महोत्सव के शुभारंभ से पहले 139 कलाकारों ने शास्त्रीय नृत्य मैराथन का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।

- बुधवार दोपहर 2:33 बजे शुरू मैराथन गुरुवार दोपहर 2:45 बजे पूरी हुई।
- 24 घंटे 9 मिनट 26 सेकंड तक शास्त्रीय नृत्य शैलियों में कलाकार प्रस्तुति देते रहे।
- गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड की ऑफिशियल टीम ने सीएम डॉ. मोहन यादव को शास्त्रीय नृत्य मैराथन रिले का सर्टिफिकेट सौंपा। इसी के साथ 51वें खजुराहो नृत्य समारोह शुरू हुआ।

THE TIMES OF INDIA, BHOPAL
FRIDAY, FEBRUARY 21, 2025

GUINNESS RECORD AT KHAJURAHO FEST

A Moeed Faruqui

A unique Guinness World Record was created when 139 classical dancers performed for a marathon 24 hours 9 minutes 26 seconds at the 51st Khajuraho Dance Festival on Thursday. CM Mohan Yadav said it was a moment of pride for the country. The record featured Odissi, Kathak, Bharatnatyam, Kuchipudi and Mohiniyattam dancers

खजुराहो : 24 घंटे नृत्य कर बनाया गिनीज ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड, सीएम को सौंपा

भोपाल। खजुराहो नृत्य महोत्सव के 51वें संस्करण का शुभारंभ गुरुवार को हेरिटेज सिटी खजुराहो में हुआ। 139 कलाकारों ने लगातार 24 घंटे 9 मिनट और 26 सेकंड तक शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुत कर नया वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। शास्त्रीय नृत्य मैराथन (रिले) के लिए गिनीज बुक वर्ल्ड रिकॉर्ड मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को दिया गया। आयोजन 20 से 26 फरवरी तक चलेगा। कुचिपुड़ी, कथक, भरतनाट्यम और ओड़िसी जैसे भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की अनवरत प्रस्तुति ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अद्भुत नृत्य मैराथन का निर्देशन सुप्रसिद्ध अभिनेत्री एवं कथक नृत्यांगना प्राची शाह ने किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री धर्मेंद्र लोधी और सीएस शिवशेखर शुक्ला भी उपस्थित रहे।

पीपुल्स समाचार

यहां का मनुष्य चमके तो बुंदेला और पत्थर चमके तो हीरा और कला चमके तो खजुराहो की कला कहलाएं - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

-51वें खजुराहो नृत्य समारोह में बना वर्ल्ड रिकॉर्ड, मुख्यमंत्री डॅ. मोहन यादव ने दीप प्रज्वलन कर किया 51वां खजुराहो नृत्य समारोह का शुभारंभ
-मुख्यमंत्री ने कंदरिया महादेव को उच्च कोटि की शानदार विरासत बताया, वृहद नृत्य मैराथन (रिले) में बना वर्ल्ड रिकॉर्ड
-25 ग्रुप ने लगातार 24 घंटे से अधिक समय तक परफॉर्मेंस देकर बनाया रिकॉर्ड, पहले दिन कथकली, मोहिनीअट्टम् और ओडिसी नृत्य की हुई शानदार प्रस्तुति

छतरपुर। 51वें खजुराहो नृत्य समारोह का शुभारंभ डॉ. मोहन यादव ने दीप प्रज्वलन कर शुभरंभ किया। नृत्य समारोह का आयोजन खजुराहो में स्थित कंदरिया महादेव मंदिर एवं देवी जगदंबा मंदिर के मध्य मंदिर प्रांगण में शुरू हुआ। जहां प्रथम दिवस की प्रस्तुतियां दी गई। इसी क्रम में 19 फरवरी से आदिवर्त म्यूजियम में 24 घंटे से अधिक लगातार चलने वाले वृहद नृत्य मैराथन (रिले) में विश्व रिकॉर्ड बनाया गया है। जिनमें 4 नृत्य कलाकार कथक, भरतनाट्यम, ओडिसी, कुचिपुड़ी के कलाकारो द्वारा प्रस्तुतियां दी गई। इसका नृत्य निर्देशन एवं संयोजन कथक नृत्यांगना तथा फिल्म अभिनेत्री प्राची शाह, मुम्बई एवं संगीत निर्देशन एवं संयोजन कौशिक बसु द्वारा किया गया था। जिसमें प्रारंभिक रूप से 5-6 कलाकारों के 25 ग्रुप तैयार किए गए थे जिसमें लगभग 136 कलाकारों ने भाग लिया। जो विभागीय संगीत महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय एवं नृत्य के वरिष्ठ कलागुरुओं के साधनारत शिष्य हैं। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में सांसद खजुराहो वी.डी. शर्मा, संस्कृति विभाग के मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी, विधायक राजनगर अरविंद पटेरिया, छतरपुर विधायक ललिता यादव, प्रमुख सचिव शिवशेखर शुक्ला, संचालक संस्कृति विभाग एन.पी. नामदेव, अधीक्षण पुरातत्व विद, निदेशक उस्ताद अलाउद्दीन खां अकादमी मंचासीन रहे।

बाल नृत्य की हुई प्रस्तुतियां

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा बाल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने और नई पीढ़ी को नृत्य के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से 51वें खजुराहो नृत्य समारोह में पहली बार खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का आयोजन किया गया। इसका शुभारम्भ सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और नृत्यांगना प्राची शाह, कलेक्टर छतरपुर पार्थ जैसवाल, पुलिस अधीक्षक छतरपुर अगम जैन, संचालक संस्कृति एन.पी. नामदेव और निदेशक उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी डॉ. धर्मेंद्र पारे ने किया। बाल प्रतिभाओं ने ऊर्जा से भरपूर नृत्य प्रस्तुतियां दी। इस गतिविधि के लिए परिसर में विशेष मंच बनाया गया था। पहली प्रस्तुति कुचिपुड़ी नृत्यांगना कुमारी निकिता अहिरवार की थी। उन्होंने कृष्ण शब्दम और कृष्ण तरंगम की मनमोहक प्रस्तुति से समा बांधा। इसके बाद नायिका माहेश्वरी की भरतनाट्यम की प्रस्तुति हुई। उन्होंने पुष्पांजलि, अष्टपदी और अर्धनारीश्वर की प्रस्तुति दी। अंतिम प्रस्तुति स्वस्तिका जैन की रही, उन्होंने कथक नृत्य में ताल बसंत की मात्रा और बसंत गीत की प्रस्तुति दी।

प्रथम दिवस में कथकली (इंटरनेशनल सेंटर फॉर कथकली, दिल्ली), मोहिनीअट्टम् (पल्लवी कृष्णन, केरल) और ओडिसी (कल्याणी वैदेही फगरे, मध्यप्रदेश) की शानदार प्रस्तुति दी गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अभिनव, अविराम और सतत 24 घंटे से 139 कलाकारों और उनकी साधना को प्रणाम करते हुए कहा कि कथककली भगवान कृष्ण की नृत्य के माध्यम से कथा करने की विधा है। उन्होंने कहा 1 हजार साल पुराना कंदरिया महादेव उस काल के अंदर उच्च कोटि की शानदार विरासत है। उन्होंने कहा कला संस्कृति बुंदेलखण्ड का इलाका वाकई में अद्भुत है। किसी बात के लिए परमात्मा ने कोई कमी नहीं रखी है। उन्होंने कहा यहां का पत्थर भी चमके तो दुनिया उसको अपने पास रखती है। ये बुंदेलखण्ड की धरती है। यहां मनुष्य चमके तो बुंदेला कहलाएं और पत्थर चमके तो हीरा कहलाएं और कला चमके तो खजुराहो की कला कहलाएं। इसको नित्य साधो तो अपना जीवन धन्य कर लेंगे। आज कला साधकों ने जो कला का 24 घंटे का क्रम बताया है। उन्होंने कहा सरकार का उत्तरदायित्व है अपनी संस्कृति के लिए काम करें। उन्होंने कहा दुर्लभ वाद्ययंत्रों के माध्यम से, कभी नृत्य की विधा को लेकर, कभी ताल दरबार जैसे सारे कामों से कल्पनाशीलता और गतिशीलता दिखाई देती है। उन्होंने इस विशेष समारोह के लिए संस्कृति विभाग और सभी कलाकारों को बधाई देते हुए अपनी वाणी को विराम दिया।

छतरपुर भास्कर 22-02-2025

खजुराहो नृत्य समारोह • आयोजन की दूसरी संध्या पर मणिपुरी, भरतनाट्यम और छाऊ शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुतियां

नृत्यांगना दर्शना ने अपने गुरु की 50 साल की यात्रा का चित्रण किया, कृष्ण रास मणिपुरी शैली में पेश

भास्कर संवाददाता | खजुराहो

नृत्य समारोह की दूसरी संध्या पर मणिपुरी, भरतनाट्यम और छाऊ शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुतियां हुईं। मणिपुरी नृत्यांगना दर्शना झावेरी ने भगवान कृष्ण की लीलाओं को बेहद ही आकर्षक अंदाज में पेश किया। मणिपुरी नृत्य की प्रस्तुति ने दर्शकों पर अमिट छाप छोड़ी।

मणिपुरी नृत्यांगना ने अपने गुरु की 50 साल की यात्रा का खूबसूरत चित्रण किया। उन्होंने अपनी दूसरी प्रस्तुति मंगल चरण से की। इसमें दर्शना झावेरी ने राधा के रूप में मणिपुरी नृत्य शैली में भगवान कृष्ण के प्रेम प्रसंग का चित्रण लयात्मक ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने समूह के नृत्यकारों के साथ होलिका कारीदा की प्रस्तुति दी। इसमें नृत्यकारों ने वसंत रास पर राधा कृष्ण और गोपियों के साथ रंग गुलाल के साथ होली खेलने का चित्रण किया।

उन्होंने जब महाभजन प्रस्तुति में राधा के विरह का चित्रण किया तो दर्शक स्तब्ध और रोमांचित हो गए। इसमें राधा भगवान कृष्ण की रातभर प्रतीक्षा करती है। श्याम अपने समय पर नहीं आते जिस पर राधा भगवान कृष्ण से नाराज हो जाती है, जब श्याम सलोने बड़े सुबह राधा के पास पहुंचते हैं तो राधा उनसे बात नहीं करती और कहती है कहां विताई श्याम ये रात क्योंकि उनके शरीर पर अनेक चिह्न दिखते हैं प्रेम क्रीड़ा और रास रचाने के। वहीं कृष्ण अपनी प्रेयसी राधा को प्रेम वशीभूत कर मना लेते हैं और आलिंगन करते हैं। इसके बाद मणिपुरी नृत्यांगना दर्शना ने मणिपुरी शैली में इस नृत्य के शुद्ध पक्ष को भी प्रस्तुत किया।

वहीं दूसरी प्रस्तुति भरतनाट्यम नृत्यांगना श्रेयासी गोपीनाथ ने साथी कलाकारों के साथ दी। उन्होंने भरतनाट्यम शैली नृत्य नाटिका को प्रस्तुत किया। इसमें महाभारत में कर्ण के चरित्र को प्रदर्शित किया। अंतिम प्रस्तुति छाऊ नृत्यकार शशधर आचार्य ने दी। उन्होंने गरुण नाम की प्रस्तुति दी, इसमें गरुण के जीवन के संघर्ष को नृत्य से चित्रित किया गया।

खजुराहो | मणिपुरी शैली में कृष्ण की लीलाओं को प्रस्तुत करते नृत्य कलाकार।

अव्यवस्था का सामना करना पड़ा, ढाई घंटे की देरी से हुई कलावार्ता

खजुराहो नृत्य महोत्सव में कलाकारों और कलाप्रेमियों को अव्यवस्था का सामना करना पड़ रहा है। समारोह के दौरान दिन में होने वाली कलावार्ता ढाई घंटे की देरी से हुई। दरअसल हर साल यह आयोजन दिन के ग्यारह बजे हुआ करता था। इस बार समय बदलकर दोपहर दो बजे कर दिया गया है। इसमें भाग लेने के लिए कलाकारों और कलाओं में रुचि रखने वाले लोग कलावार्ता स्थल पर पहुंच गए पर मंच खाली देखकर लौट गए। कोई वहां उस समय बताने वाला भी नहीं था। कलावार्ता चार बजे तक भी शुरू नहीं हो पाई। इस संबंध में आदिवर्त जनजातीय लोक कला राज्य संग्रहालय के भास्कर पारखे ने बताया इस आयोजन में वक्ता के रूप में कला समीक्षक नारायण व्यास आ रहे थे पर किसी कारण वो अभी तक नही पहुंचे। इस कारण व्यवस्था बिगड़ गई। कलावार्ता में शामिल होने पहुंचे कला रसिक देव ऋषि त्रिपाठी ने अफसोस व्यक्त करते हुए इस घटना को कलावार्ता प्रबंधन की लापरवाही साबित होती है। बाद में 4.30 बजे महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्व विद्यालय के डॉ. सुधीर कुमार छारी ने छतरपुर जिले की शैल चित्र एवं खजुराहो की मूर्ति कला, विषय पर कला वार्ता की।

प्रदर्शनी में विश्वविख्यात चित्रकारों की लगी पेंटिंग

नृत्य समारोह कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय चित्रकला प्रदर्शनी लगाई है। कला प्रदर्शनी की शुरुआत में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऑनलाइन 134 विश्व प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा ऑनलाइन पंजीयन कराया गया था। इसके बाद निर्णायक मंडल जूरी की भूमिका में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार डॉ. कनुप्रिया राठौर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, डॉ. कीर्ति सिंह ठाकुर भोपाल, डॉ. बीना जैन जयपुर, डॉ. अंजू चौधरी कानपुर, डॉ. यतीन्द्र महोबे नरसिंहपुर, डॉ. कुमुद बाला कानपुर, डॉ. गुलाब धर चित्रकूट, डॉ. मनोज प्रजापति शांतिनिकेतन कोलकाता के द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पेंटिंग्स का चयन किया गया। जिनमें दुबई, ओमान, बांग्लादेश और भारत से बेंगलुरु, कोलकाता, पुणे महाराष्ट्र, ऋषिकेश उत्तराखंड, जयपुर एवं इंदौर भोपाल के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर छतरपुर एवं टीकमगढ़ के कलाकारों की पेंटिंग्स का चयन किया गया। प्रदर्शनी के शुभारंभ के बाद खजुराहो नृत्य महोत्सव देखने देश के कोने-कोने से आने वाले पर्यटकों ने सुबह से देररात तक प्रदर्शनी का अवलोकन किया और सभी पेंटिंग्स की सराहना की।

51वें खजुराहो नृत्य समारोह का मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शुभारंभ किया

बुंदेलखंड की कला-संस्कृति के उत्थान के लिए तत्पर है सरकार : सीएम

भास्कर न्यूज़ | खजुराहो

पर्यटन नगरी में 51वें खजुराहो नृत्य समारोह का शुभारंभ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दीप प्रज्वलन कर किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि बुंदेलखंड की कला-संस्कृति वास्तव में अद्भुत है। सरकार का उत्तरदायित्व है कि वह अपनी संस्कृति के उत्थान के लिए काम करें। इस दिशा में पूरे प्रयास हो रहे हैं। नृत्य समारोह का आयोजन गुरुवार को खजुराहो में स्थित कंदरिया महादेव मंदिर एवं देवी जगदम्बा मंदिर के मध्य मंदिर प्रांगण में शुरू हुआ। पहले दिन इंटरनेशनल सेंटर फॉर कथकली दिल्ली के कलाकारों ने कथकली की, केरल की पल्लवी कृष्णन ने मोहिनीअट्टम और मप्र की कल्याणी वैदेही फगरे ओडिसी की शानदार प्रस्तुति दी। नृत्य समारोह के शुभारंभ के अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि एक हजार साल पुराना कंदरिया महादेव उस काल में उच्च कोटि की शानदार विरासत है। बुंदेलखंड की कला संस्कृति वास्तव में अद्भुत है। यहां किसी बात के लिए परमात्मा ने कोई कमी नहीं रखी है। उन्होंने कहा कि यहां का पत्थर भी चमके तो दुनिया उसको अपने पास रखती है। यहां मनुष्य चमके तो बुंदेला कहलाए और पत्थर चमके तो हीरा कहलाए और कला चमके तो खजुराहो की कला कहलाए। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में सांसद वीडी शर्मा, संस्कृति मंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी, विधायक राजनगर अरविंद पटेरिया, छतरपुर विधायक ललिता यादव, प्रमुख सचिव शिव शेखर शुक्ला मंचासीन रहे।

खजुराहो| मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने खजुराहो नृत्य समारोह का शुभारंभ किया।

राज्य रूपंकर कला पुरस्कार प्रदान किए

खजुराहो नृत्य समारोह के शुभारंभ पर राज्य रूपंकर कला पुरस्कार प्रदान किए गए। मंचासीन अतिथियों ने दत्तात्रय दामोदर देवलालीकर पुरस्कार दिव्या पोरवाल को, रघुनाथ कृष्णराव फड़के पुरस्कार वीना सिंह को, नारायण श्रीधर बेंद्रे पुरस्कार रश्मि कुरिल, मुकुन्द सखाराम भांड पुरस्कार नीतेश पंचाल को, देवकृष्ण जटाशंकर जोशी पुरस्कार उज्जवल ओझा, जगदीश स्वामीनाथन पुरस्कार प्रीति पोतदार जैन, सैय्यद हैदर रजा पुरस्कार मनीष सिंह, लक्ष्मी सिंह पुरस्कार पल्लवी वर्मा को, राममनोहर सिन्हा पुरस्कार शुभमराज अहिरवार को और विष्णु चिंचालकर पुरस्कार लकी जायसवाल को दिया।

नृत्य मैराथन के विश्व रिकॉर्ड को सराहा

इसी क्रम में यहां के आदिवर्त म्यूजियम में गुरुवार को 24 घंटे से अधिक लगातार चलने वाले वृहद नृत्य मैराथन (रिले) में विश्व रिकॉर्ड बनाया गया है। इनमें 4 नृत्य कलाकार कथक, भरतनाट्यम, ओडिसी, कुचिपुड़ी के कलाकारों द्वारा प्रस्तुति दी गई। इसमें प्रारंभिक रूप से 5-5 कलाकारों के 25 ग्रुप तैयार किए गए थे, जिसमें लगभग 139 कलाकारों ने भाग लिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 139 कलाकारों की 24 घंटे की प्रस्तुति को सराहते हुए कहा कि कथकली भगवान कृष्ण की नृत्य के माध्यम से कथा करने की विधा है। आज कला साधकों ने जो 24 घंटे की प्रस्तुति दी है, वह यादगार रहेगी।

Fri, 21 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76850109

हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Bhopal Main - 21 Feb 2025 - Page 9

24 घंटे 9 मिनट 26 सेकंड तक वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन में रचा गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

खजुराहो नृत्य समारोह में 139 कलाकारों ने 24 घंटे से अधिक समय नृत्य कर रचा विश्व कीर्तिमान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

घुंघरुओं की झंकार और ताल-थाप की सुमधुर लहरियों से एक बार पुनः ऐतिहासिक खजुराहो नगर गूंजित हो रहा है। कला की सौंदर्यपूर्ण छटाएं वर्ल्ड हेरिटेज साइट में बिखर रही है। अवसर है 51वें खजुराहो नृत्य समारोह के उपलक्ष्य में वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन (रिले) का। अपनी कला और संस्कृति से विश्व में अलग पहचान बनाने वाला मप्र राज्य ने एक और कीर्तिमान रचा। मौका था मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन में रचा गया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड का। जिसमें 24 घंटे 9 मिनट 26 सेकंड तक विविध शास्त्रीय नृत्य शैलियों में 139 कलाकारों ने नृत्य करके प्रदेश का गौरव बढ़ाया। इस अवसर पर सीएम डॉ. यादव मुख्य रूप से मौजूद रहे।

भाजपा सरकार कला, संस्कृति की विरासत को संभालने का कार्य कर रही है : सीएम

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा ने गुरुवार को खजुराहो में खजुराहो नृत्य समारोह एवं अलंकरण समारोह को संबोधित किया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार कला, संस्कृति की विरासत को संभालने का कार्य कर रही है। नृत्य साधना में हमारे पूर्वजों की कल्पनाशीलता व गतिशीलता की झलक दिखाई देती है। नृत्य मुद्राओं को महाकाल महालोक में शिल्पकला के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने नृत्य स्मारिका का विमोचन कर कलाकारों को मध्यप्रदेश राज्य रूपांकर कलाकार सम्मान से सम्मानित किया।

नृत्य में पूर्वजों की कल्पनाशीलता व गतिशीलता की झलक

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि बुंदेलखंड वीरों की धरती है। 24 घंटे कत्थकली नृत्य प्रस्तुत कर विश्व रिकॉर्ड बनाने के लिए आप सभी कलाकारों को बधाई। नृत्य साधना में हम सभी के पूर्वजों की कल्पनाशीलता व गतिशीलता की झलक दिखाई देती है। मप्र की मजबूत सरकार नृत्य मुद्राओं को महाकाल महालोक में शिल्पकला के माध्यम से प्रदर्शित करने का कार्य कर रही है। एक हजार साल पुराना कंदरिया महादेव मंदिर हमारी सांस्कृतिक विरासत है। नृत्य साधना व कलाओं की विधाओं के माध्यम से हमें संस्कृति की धारा को प्रवाहित करने का अटूट संकल्प लेना है।

दिनांक 22 फरवरी, 2025

छतरपुर भास्कर
नौगांव ▶ खजुराहो ▶ बड़ामलहरा ▶ बकस्वाहा ▶ महाराजपुर ▶ घुवारा ▶ हरपालपुर ▶ लवकुशनगर ▶ राजनगर ▶ बिजावर
सागर, शनिवार, 22 फरवरी, 2025 फाल्गुन कृष्ण पक्ष - 9, 2081

खजुराहो नृत्य समारोह • आयोजन की दूसरी संध्या पर मणिपुरी, भरतनाट्यम और छाऊ शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुतियां

नृत्यांगना दर्शना ने अपने गुरु की 50 साल की यात्रा का चित्रण किया, कृष्ण रास मणिपुरी शैली में पेश

भास्कर संवाददाता | खजुराहो

नृत्य समारोह की दूसरी संध्या पर मणिपुरी, भरतनाट्यम और छाऊ शास्त्रीय नृत्य की प्रस्तुतियां हुईं। मणिपुरी नृत्यांगना दर्शना झावेरी ने भगवान कृष्ण की लीलाओं को बेहद ही आकर्षक अंदाज में पेश किया। मणिपुरी नृत्य की प्रस्तुति ने दर्शकों पर अमिट छाप छोड़ी।

मणिपुरी नृत्यांगना ने अपने गुरु की 50 साल की यात्रा का खूबसूरत चित्रण किया। उन्होंने अपनी दूसरी प्रस्तुति मंगल चरण से की। इसमें दर्शना झावेरी ने राधा के रूप में मणिपुरी नृत्य शैली में भगवान कृष्ण के प्रेम प्रसंग का चित्रण लयात्मक ढंग से प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने समूह के नृत्यकारों के साथ होलिका कारीदा की प्रस्तुति दी। इसमें नृत्यकारों ने वसंत रास पर राधा कृष्ण और गोपियों के साथ रंग गुलाल के साथ होली खेलने का चित्रण किया।

उन्होंने जब महाभजन प्रस्तुति में राधा के विरह का चित्रण किया तो दर्शक स्तब्ध और रोमांचित हो गए। इसमें राधा भगवान कृष्ण की रातभर प्रतीक्षा करती है। श्याम अपने समय पर नहीं आते जिस पर राधा भगवान कृष्ण से नाराज हो जाती है, जब श्याम सलोने बड़े सुबह राधा के पास पहुंचते हैं तो राधा उनसे बात नहीं करती और कहती है कहां बिताई श्याम ये रात क्योंकि उनके शरीर पर अनेक चिह्न दिखते हैं प्रेम क्रीड़ा और रास रचाने के। वहीं कृष्ण अपनी प्रेयसी राधा को प्रेम वशीभूत कर मना लेते हैं और आलिंगन करते हैं। इसके बाद मणिपुरी नृत्यांगना दर्शना ने मणिपुरी शैली में इस नृत्य के शुद्ध पक्ष को भी प्रस्तुत किया।

वहीं दूसरी प्रस्तुति भरतनाट्यम नृत्यांगना श्रेयासी गोपीनाथ ने साथी कलाकारों के साथ दी। उन्होंने भरतनाट्यम शैली नृत्य नाटिका को प्रस्तुत किया। इसमें महाभारत में कर्ण के चरित्र को प्रदर्शित किया। अंतिम प्रस्तुति छाऊ नृत्यकार शशधर आचार्य ने दी। उन्होंने गरुण नाम की प्रस्तुति दी, इसमें गरुण के जीवन के संघर्ष को नृत्य से चित्रित किया गया।

खजुराहो | मणिपुरी शैली में कृष्ण की लीलाओं को प्रस्तुत करते नृत्य कलाकार।

अव्यवस्था का सामना करना पड़ा, ढाई घंटे की देरी से हुई कलावार्ता

खजुराहो नृत्य महोत्सव में कलाकारों और कलाप्रेमियों को अव्यवस्था का सामना करना पड़ रहा है। समारोह के दौरान दिन में होने वाली कलावार्ता ढाई घंटे की देरी से हुई। दरअसल हर साल यह आयोजन दिन के ग्यारह बजे हुआ करता था। इस बार समय बदलकर दोपहर दो बजे कर दिया गया है। इसमें भाग लेने के लिए कलाकारों और कलाओं में रुचि रखने वाले लोग कलावार्ता स्थल पर पहुंच गए पर मंच खाली देखकर लौट गए। कोई वहां उस समय बताने वाला भी नहीं था। कलावार्ता चार बजे तक भी शुरू नहीं हो पाई। इस संबंध में आदिवर्त जनजातीय लोक कला राज्य संग्रहालय के भास्कर पारखे ने बताया इस आयोजन में वक्ता के रूप में कला समीक्षक नारायण व्यास आ रहे थे पर किसी कारण वो अभी तक नही पहुंचे। इस कारण व्यवस्था बिगड़ गई। कलावार्ता में शामिल होने पहुंचे कला रसिक देव ऋषि त्रिपाठी ने अफसोस व्यक्त करते हुए इस घटना को कलावार्ता प्रबंधन की लापरवाही साबित होती है। बाद में 4.30 बजे महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्व विद्यालय के डॉ. सुधीर कुमार शारी ने छतरपुर जिले की शैल चित्र एवं खजुराहो की मूर्ति कला, विषय पर कला वार्ता की।

प्रदर्शनी में विश्वविख्यात चित्रकारों की लगी पेंटिंग

नृत्य समारोह कार्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय चित्रकला प्रदर्शनी लगाई है। कला प्रदर्शनी की शुरुआत में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऑनलाइन 134 विश्व प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा ऑनलाइन पंजीयन कराया गया था। इसके बाद निर्णायक मंडल जूरी की भूमिका में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार डॉ. कनुप्रिया राठौर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, डॉ. कीर्ति सिंह ठाकुर भोपाल, डॉ. बीना जैन जयपुर, डॉ. अंजू चौधरी कानपुर, डॉ. यतीन्द्र महोबे नरसिंहपुर, डॉ. कुमुद बाला कानपुर, डॉ. गुलाब धर चित्रकूट, डॉ. मनोज प्रजापति शांतिनिकेतन कोलकाता के द्वारा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पेंटिंग्स का चयन किया गया। जिनमें दुबई, ओमान, बांग्लादेश और भारत से बेंगलुरु, कोलकाता, पुणे महाराष्ट्र, ऋषिकेश उत्तराखंड, जयपुर एवं इंदौर भोपाल के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर छतरपुर एवं टीकमगढ़ के कलाकारों की पेंटिंग्स का चयन किया गया। प्रदर्शनी के शुभारंभ के बाद खजुराहो नृत्य महोत्सव देखने देश के कोने-कोने से आने वाले पर्यटकों ने सुबह से देररात तक प्रदर्शनी का अवलोकन किया और सभी पेंटिंग्स की सराहना की।

बुंदेलखंड की बुलंद आवाज़

छतरपुर भास्कर

आज का मौसम...
छतरपुर 29.2 12.6
सूर्योदय आज 06.43 am
सूर्यास्त आज 06.13 pm

bhaskarhindi.com

नौगांव . खजुराहो . महाराजपुर . लवकुशनगर . बिजावर . बकस्वाहा . बड़ामलहरा . घुवारा . गौरिहार

छतरपुर, शनिवार, 22 फरवरी 2025 | 13

श्रेयसी गोपीनाथ

पद्मश्री दर्शना ने होलिका फ्रीडम और शशधर आचार्य ने गरुड़ का शौर्य दिखाकर छोड़ा प्रभाव

51वें खजुराहो नृत्य समारोह का दूसरा दिन : दर्शना झावेरी, श्रेयसी गोपीनाथ एवं शशधर आचार्य की प्रस्तुतियां हुईं

भास्कर न्यूज | खजुराहो

पर्यटन नगरी में चल रहे 51वें खजुराहो नृत्य समारोह की दूसरी शाम देश के सुप्रसिद्ध नृत्य कलाकारों ने कंदरिया महादेव मंदिर की आभा में बने मंच पर संस्कृति के अनूठे रंग बिखेर दिए। जैसे-जैसे सांझ की रोशनी धुंधलाती गई, नृत्य का संसार जगमगा उठा और रात होते-होते समारोह परवान चढ़ा। नृत्य समारोह में दूसरी शाम तीन प्रस्तुतियां हुईं। समारोह में शुक्रवार की शाम सबसे पहली प्रस्तुति सुप्रसिद्ध मणिपुरी नृत्यांगना और पद्मश्री दर्शना झावेरी एवं उनके शिष्यों ने दी। गुरु बिपिन सिंह के मणिपुरी घराने की आला दर्जे की नृत्यांगना दर्शना ने अपनी प्रस्तुति का आरम्भ पारंपरिक रूप से ईश्वर की वंदना से किया। मंगलाचरण में उन्होंने भगवान श्री कृष्ण और राधा को नमन किया। इसके बाद बसंत रास का प्रमुख उत्सव होली मंच पर साकार हुआ। जिसके केंद्र में थे कृष्ण, राधा और गोपियां।

होलिका क्रीडम प्रस्तुति ने दर्शकों को ब्रज की होली सदृश्य दिखाई। होली के रंगों के बाद मनभजन प्रस्तुति दी, जो जयदेव रचित गीत गोविंदम् पर आधारित थी। इसमें भगवान श्री कृष्ण और राधा की मधुमयी नोंक-झोंक को दर्शाया। इसके बाद प्रबंद नर्तम, सप्ता, नायिकाभेदा, मांडिला नर्तन और अंत में मृदंग वादन की प्रस्तुति से विराम दिया।

नृत्य नाटिका में दिखाया गरुड़ का शौर्य

समारोह के तीसरे दिन अंतिम प्रस्तुति छऊ की रही। इसे पद्मश्री शशधर आचार्य एवं साथी झारखंड ने प्रस्तुत किया। उनकी प्रस्तुति का नाम महानायक गरुड़ था। इस नृत्यनाटिका में उन्होंने नृत्य के माध्यम से बड़े प्रभावी ढंग से दिखाया कि भारतीय आध्यात्मिक वांग्मय में संघर्ष की पताकाओं से प्रकाशित गरुड़ एक महानायक के रूप में प्रतिबिंबित होता है, जो अपने अक्षय शौर्य से गरुड़ भास्कर, गरुड़ वासुकी, गरुड़ वाहन, नरकासुर वध जैसे चरित्रों का अनुपालन करता है और धर्म ग्रंथों में अपनी पूज्य स्थिति को प्राप्त करता है। धर्म ग्रंथों में विदित कथाओं के अनुसार गरुड़ का जन्म समय से पूर्व हो गया, इसके बावजूद उसमे अपार ऊर्जा संग्रहित थी। अपनी ऊर्जा की प्रचंडता के कारण वह अपने माता के मना करने पर भी सूर्य को निगलने के लिए चल पड़ा। वह अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए भगवान विष्णु को चुनौती देता है और उनसे युद्ध कर उन्हें और उनके सभी अस्त्रों को पराजित करता है। इसके बाद भगवान विष्णु ने उन्हें अपने वाहन के रूप में स्थान प्रदान किया। इस चरित्र की विविधता को दर्शाने के लिए छऊ की तीन शैलियां सरायकेला, मयूरभंज और पुरुलिया तीनों में अद्भुत कलात्मक सामंजस्य दिखाई दिया। जहां सरायकेला छऊ इसे शास्त्रीय छुअन प्रदान कर रहा था, वहीं मयूरभंज छऊ इसे स्पष्ट रूप से चित्रित कर रहा था। पुरुलिया छऊ इसकी आक्रामक तेवर को प्रस्तुत करने में अद्भुत तारतम्यता को दर्शा रहा था।

द व्हील ऑफ चॉइसेस से श्रेयसी गोपीनाथ ने किया प्रभावित : महाभारत के कर्ण की दुखद नियति को दर्शाया

मणिपुरी के बाद भरतनाट्यम नृत्य को देखने का अवसर था। दिल्ली की युवा नृत्यांगना श्रेयसी गोपीनाथ एवं डांस अवतदमी के कलाकारों ने 'द व्हील ऑफ चॉइसेस' को प्रस्तुत किया। इसमें उन्होंने मानव स्वभाव की जटिलताओं को प्रदर्शित किया। जहां चरित्र न केवल अपने कार्यों से बल्कि दूसरों के कर्मों से भी लगातार संचालित होते हैं। चक्र (व्हील) के मूल में महाभारत का काला नायक कर्ण है। व्यापक कथा के केंद्र में, उसकी पहचान और यकीनन दुखद नियति उसे एक आकर्षक और रहस्यमय व्यक्ति बनाती है। अपने महान गुणों के बावजूद, कर्ण की यात्रा आंतरिक संघर्षों, नैतिक दुविधाओं, विकल्पों और भाग्य के अथक हाथ से चिह्नित है।

दैनिक भास्कर
Sat, 22 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76870517

bhaskarhindi.com
छतरपुर, शनिवार, 22 फरवरी 2025 | 14

खजुराहो नृत्य समारोह के मंच पर साकार हुई बालमन की कल्पनाएं

नई पीढ़ी हो रही पारंगत : इस बार खजुराहो नृत्य समारोह के दौरान बच्चों को भी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिल रहा

सिटी भास्कर | छतरपुर

51वें खजुराहो नृत्य समारोह की दूसरी शाम का शंखनाद बालमन की नृत्य प्रस्तुतियों के साथ हुआ। खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव के दूसरे दिन शुक्रवार को भरतनाट्यम और कथक प्रस्तुतियों से मंच सजा। पहली प्रस्तुति इदीका देवेन्द्र भोपाल की भरतनाट्यम नृत्य की हुई। उनकी प्रथम प्रस्तुति नटेश कौतुवम् थी। जो राग नट्टै एवं ताल आदि में निबद्ध थी। इस प्रस्तुति में समस्त ऋषि-मुनि, देवता और असुरों द्वारा पूजित, नृत्य के स्वामी नटराज को नमन किया गया। दूसरी प्रस्तुति शब्दम की थी। यह एक पारंपरिक भरतनाट्यम रचना है जो ताल मिश्र चापू और रागमालिका में निबद्ध है। इसमें नायिका श्री कृष्ण की लीलाओं को दर्शाती है और उनके मनमोहक रूप का वर्णन करती है।

अंतिम प्रस्तुति तिल्लाना थी, जिसका अर्थ है ताल में लीन नृत्यांगना। यह प्रस्तुति नृत्य की ओर आत्मसमर्पण है, साधना की परिकाष्ठा है। इसके साहित्य में भगवान् कार्तिकेय की स्तुति की गई। यह रचना राग शिवरंजिनी और ताल आदि में निबद्ध थी। इसके बाद कथक की प्रस्तुति ग्वालियर की सौम्य जैन ने दी। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में सर्वप्रथम भगवान शिव को समर्पित शिव रुद्राकष्टकम, जिसके बोल नमामि शमीशन निर्वाणरूपम थे। दूसरी प्रस्तुति में शुद्ध नृत्य प्रस्तुत किया। जो ताल तीनताल में निबद्ध था। तीसरी प्रस्तुति ठुमरी की थी, जिसमें राधा कृष्ण का प्रेम और पनघट की स्नेहिल छेड़छाड़ को बड़े ही मनमोहक ढंग से नृत्य में बांधा। अंतिम प्रस्तुति में जयपुर घराने का तिरवत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर बाल नृत्य कलाकारों का मनोबल बढ़ाने सुप्रसिद्ध कला समीक्षक डॉ. ताप्ति चौधरी भी पधारीं।

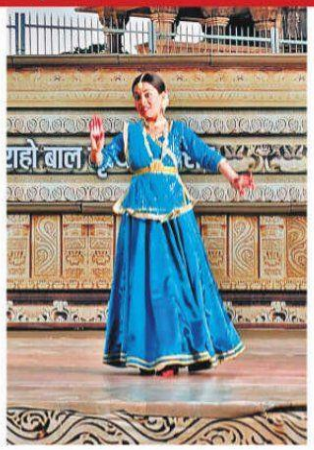

प्रणाम में डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की सुदीर्घ कला यात्रा

51वें खजुराहो नृत्य समारोह में विशेष रूप से वरिष्ठ नृत्यांगना और पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के कला अवदान पर केंद्रित प्रणाम प्रदर्शनी भी संयोजित की गई है। इसमें डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की कला यात्रा की स्मृतियां छायाचित्रों में दिखाई दे रही हैं। एक नृत्यांगना की सुदीर्घ साधना, अथक परिश्रम और लगन, जिसके परिणाम में उसे मिलता है अनेक कलाप्रेमियों का स्नेह, प्रतिष्ठित मंच, अनेक देशों की यात्राएं और सम्मान। साथ ही यहां डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम द्वारा डिजाइन की गई नृत्य पोशाक, उनके शोध आधारित पुस्तकें इत्यादि भी प्रदर्शित की जा रही हैं। यह प्रदर्शनी उन नृत्य कलाकारों के लिए प्रेरणा है, जो नृत्य में भविष्य देखते हैं।

दैनिक भास्कर
Sat, 22 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76870519

आयोजन खजुराहो में नृत्य महोत्सव के तहत अतिथियों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी का शुभारंभ किया गया

134 विश्व प्रसिद्ध कलाकारों ने चित्रकला प्रदर्शनी में कराया पंजीयन

भास्कर न्यूज़ | छतरपुर

खजुराहो नृत्य महोत्सव में इस बार चित्रकला प्रदर्शनी का भी आयोजन किया जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय पर्यटन और कला स्थल के रूप में विश्व विख्यात खजुराहो में शुक्रवार को अंतर्राष्ट्रीय चित्रकला प्रदर्शनी का शुभारंभ अतिथियों द्वारा फीता काटकर हुआ। प्रदर्शनी का डॉ. जेपी शाक्य, डॉ. सुमति प्रकाश जैन, डॉ. आरएस सिसोदिया ने शुभारंभ किया। छतरपुर ललित कला की कला साधक ख्याति अग्रवाल एवं उनके सहयोगी वरुण रावत, गरिमा मिश्रा के संयुक्त संयोजन में कला प्रदर्शनी का शुभारंग हुआ। यह प्रदर्शनी 25 फरवरी तक चलेगी। यह आयोजन डॉ. एसके छारी के निर्देशन में किया जा रहा है। कला प्रदर्शनी की शुरुआत में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 134 विश्व प्रसिद्ध कलाकारों के द्वारा ऑनलाइन पंजीयन कराया गया है। निर्णायक मंडल जूरी की भूमिका में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार डॉ कनुप्रिया राठौर बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, डॉ. कीर्ति सिंह ठाकुर भोपाल, बीना जैन जयपुर, अंजू चौधरी कानपुर, यतीन्द्र महोबे नरसिंहपुर, कुमुद बाला कानपुर, गुलाबधर चित्रकूट, डॉ मनोज प्रजापति शांतिनिकेतन कोलकाता के द्वारा दुबई, ओमान, बांग्लादेश एवं भारत से बेंगलुरु, कोलकाता, पुणे, ऋषिकेश, जयपुर एवं इंदौर भोपाल के साथ स्थानीय स्तर पर छतरपुर एवं टीकमगढ़ के कलाकारों की पेंटिंग्स का चयन किया है।

» छतरपुर जिले के शिल्प सर्वाधिक प्राचीन : डॉ. छारी

कलाविदों एवं कलाकारों के मध्य संवाद की लोकप्रिय गतिविधि कलावार्ता का पहला दिन खजुराहो के शिल्प सौंदर्य और छतरपुर जिले के शैल चित्र पर केंद्रित रहा। इसमें महाराजा छत्रसाल यूनिवर्सिटी के शोध निदेशक एवं विभागाध्यक्ष डॉ. सुधीर कुमार ने कलाप्रेमियों से कहा कि छतरपुर जिले में 3 हजार से अधिक शैल चित्रों की खोज की है। जो 45 हजार से 20 हजार ईस्वी पूर्व के हैं। ये शैल चित्र विश्व के सर्वाधिक प्राचीन शैल चित्र हैं। उन्होंने इनकी तकनीक, रंग और विषय पर बात की। उन्होंने बताया कि ये सीधी रेखा में बनाए गए चित्र हैं और इन्हें बनाने के लिए केवल लाल रंग का उपयोग किया गया है, जबकि दूसरी जगहों पर अन्य रंग के शैल चित्र भी पाए गए हैं। उन्होंने बताया कि खजुराहो के शिल्पों में अनूठा सौंदर्य देखने को मिलता है, जिसमें स्त्री पेंटिंग करती, अंगड़ाई लेती इत्यादि मुद्राओं में हैं, जो सौंदर्य से भरपूर है।

epaper.bhaskarhindi.com.wl6.demo.readwhere.com

दैनिक भास्कर
Sat, 22 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76858855

51वां खजुराहो नृत्य समारोह में दूसरा दिन

नृत्य के रूप में साकार हुआ संस्कृति का सौंदर्य, मणिपुरी नृत्य से की कृष्ण वंदना

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

छतरपुर. मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के सहयोग से आयोजित 51वां खजुराहो नृत्य समारोह का दूसरा दिन संस्कृति के रंगों से भरा रहा। इस दिन कंदरिया महादेव मंदिर के आशीर्वाद से मंच पर ईश्वर की वंदना, नृत्य कथाओं और परंपराओं का जगमगाता संसार देखा गया।

समारोह के दूसरे दिन की शुरुआत मणिपुरी नृत्यांगना और पद्मश्री सुश्री दर्शना झावेरी की प्रस्तुति से हुई। उन्होंने नृत्य के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण और राधा की वंदना की। इसके बाद, बसंत रास का उत्सव, होलिका क्रीडम और जयदेव रचित गीत 'गोविंदम' पर आधारित मनभजन की प्रस्तुति की। उन्होंने इस नृत्य में कृष्ण और राधा की मधुर नोंक-झोंक को सजीव किया।

इसके बाद, दिल्ली की युवा नृत्यांगना सुश्री श्रेयसी गोपीनाथ ने 'द व्हील ऑफ चॉइसेस' के माध्यम से मानव स्वभाव की जटिलताओं को दर्शाया। उन्होंने महाभारत के कर्ण के जीवन संघर्षो, नैतिक दुविधाओं और भाग्य के प्रभाव को बखूबी चित्रित किया।

अंतिम प्रस्तुति छाऊ नृत्य की थी, जिसे पद्मश्री शशधर आचार्य एवं उनकी टीम ने प्रस्तुत किया। 'महानायक गरुड़' नृत्यनाटिका में गरुड़ के संघर्षों और उसकी विजय को नृत्य के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया।

कलावार्ता में शिल्प व शैल चित्रों पर चर्चा

51वें खजुराहो नृत्य समारोह में कलावार्ता का आयोजन हुआ, जिसमें छतरपुर जिले के शैल चित्रों पर चर्चा की गई। डॉ. सुधीर कुमार छारी ने बताया कि छतरपुर जिले में 3000 से अधिक शैल चित्र पाए गए हैं, जो 45000 से 20000 ईस्वी पूर्व के हैं। इन चित्रों की तकनीक, रंग और विषय पर चर्चा करते हुए उन्होंने छतरपुर के शिल्प सौंदर्य को भी उजागर किया।

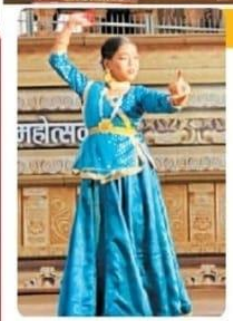

छतरपुर. 51वें खजुराहो नृत्य समारोह की दूसरी शाम बालमन की साकार कल्पनाओं से रोशन हुई। खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव के दूसरे दिन मंच पर भरतनाट्यम और कथक की नृत्य प्रस्तुतियों का शानदार आयोजन हुआ।

मंच पर साकार हुई बालमन की कल्पनाएं

पहली प्रस्तुति कुमारी इदीका देवेन्द्र, भोपाल की भरतनाट्यम नृत्य कला की थी। उनकी प्रारंभिक प्रस्तुति नटेश कौतुवम् थी, जो राग नट्टै और ताल आदि में निबद्ध थी। इसमें नटराज के पूजन के साथ देवताओं और असुरों द्वारा नृत्य के स्वामी नटराज को नमन किया गया। इसके बाद, उन्होंने शब्दम की प्रस्तुति दी, जो पारंपरिक भरतनाट्यम रचना थी और रागमालिका तथा ताल मिश्र चापू में निबद्ध थी। इसमें श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया गया। आखिरी प्रस्तुति 'तिल्लाना' थी, जो नृत्य के आत्मसमर्पण और साधना की परिकाष्ठा को दर्शाती है। इसके बाद, ग्वालियर की कुमारी सौम्य जैन ने कथक की प्रस्तुति दी। उन्होंने पहले शिव रुद्राकष्टकम में भगवान शिव को समर्पित नृत्य किया, फिर शुद्ध नृत्य प्रस्तुत किया जो तीनताल में निबद्ध था। तीसरी प्रस्तुति में उन्होंने राधा कृष्ण के प्रेम को ठुमरी के रूप में नृत्य में प्रस्तुत किया। अंतिम प्रस्तुति जयपुर घराने का तिरवत थी। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध कला समीक्षक डॉ. ताप्ती चौधरी ने बाल नृत्य कलाकारों का हौसला बढ़ाया। वरिष्ठ नृत्यांगना और पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की कला यात्रा पर आधारित प्रणाम प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इस प्रदर्शनी में डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की नृत्य यात्रा के छायाचित्रों के माध्यम से उनकी सुदीर्घ साधना, अथक परिश्रम श लगन को प्रदर्शित किया।

51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह का दूसरा दिन

नृत्य के रूप में मंच पर साकार हुआ संस्कृति का सौंदर्य, ईश्वर की वंदना, कथा–कहानियों और परंपराओं का जगमगाया संसार

कलावार्ता में छतरपुर के शैल चित्रों पर बात, खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव में बालमन की कल्पनाएं और प्रणाम में सच्ची साधक की कला यात्रा

तुलसीदास सोनी

परिहार गर्जना न्यूज। खजुराहो। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग एवं जिला प्रशासन छतरपुर के सहयोग से आयोजित 51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह की दूसरी शाम देश के सुप्रसिद्ध नृत्य कलाकारों ने कंदरिया महादेव मंदिर की आभा में बने मंच पर संस्कृति के अनूठे रंग दमक उठे। सांझ की धुंधलाती रोशनी में नृत्य का संसार जगमगा उठा और रात होते–होते परवान चढ़ा।

भारतीय कला–संस्कृति का प्रतीक बन चुके खजुराहो के इस मंच पर दूसरी शाम तीन नृत्य प्रस्तुतियां सुधिजनों के सामने आईं। इसमें पहली प्रस्तुति थी सुप्रसिद्ध मणिपुरी नृत्यांगना और पद्मश्री सुश्री दर्शना झावेरी एवं उनके शिष्यों की। एक ऐसी नृत्यांगना जिसने नृत्य को न सिर्फ किया, बल्कि उसे आत्मसात भी किया। अपनी गुरु परम्परा को नृत्य के आकाश में बुलंदियों तक लेकर आईं। गुरु बिपिन सिंह के मणिपुरी घराने की आला दर्जे की नृत्यांगना ने अपनी प्रस्तुति का आरम्भ पारंपरिक रूप से ईश्वर की वंदना से किया। मंगलाचरण में उन्होंने भगवान श्री कृष्ण और राधा को नमन किया। इसके बाद बसंत रास का प्रमुख उत्सव होली मंच पर साकार हुआ। जिसके केंद्र में थे कृष्ण, राधा और गोपियां। होलिका क्रीड़म प्रस्तुति ने सुधिजनों को ब्रज की होली सदृश्य दिखाई। होली के रंगों के बाद मनभजन प्रस्तुति दी, जो जयदेव रचित गीत गोविंदम पर आधारित थी। इसमें भगवान श्री कृष्ण और राधा की मधुमयी नोंक — झोंक को दर्शाया। इसके बाद प्रबंद नर्तम, सासा, नायिकाभेदा, माँइला नर्तन और अंत में मृदंग वादन की प्रस्तुति से विराम दिया।

मणिपुरी के बाद अवसर था भरतनाट्यम नृत्य को देखने का और मंच पर नमूदार हुईं युवा नृत्यांगना सुश्री श्रेयसी गोपीनाथ, दिल्ली। उनकी प्रस्तुति थी द व्हील ऑफ चॉइसेस, जिसे श्रेयसी गोपीनाथ डांस अकादमी के कलाकारों ने प्रस्तुत किया। इसमें उन्होंने मानव स्वभाव की जटिलताओं को प्रदर्शित किया। जहाँ चरित्र न केवल अपने कार्यों से बल्कि दूसरों के कर्मों से भी लगातार संचालित होते हैं। चक्र के मूल में महाभारत का काला नायक कर्ण है। व्यापक कथा के केंद्र में, उसकी पहचान और यकीनन दुखद नियति उसे एक आकर्षक और रहस्यमय व्यक्ति बनाती है। अपने महान गुणों के बावजूद, कर्ण की यात्रा आंतरिक संघर्षों, नैतिक दुविधाओं, विकल्पों और भाग्य के अथक हाथ से चिह्नित है।

अंतिम प्रस्तुति छऊ की रही। जिसे प्रस्तुत किया पद्मश्री शशधर आचार्य एवं साथी, झारखंड ने। उनकी प्रस्तुति का नाम महानायक गरुड़ था। इस नृत्यनाटिका में उन्होंने नृत्य के माध्यम से बड़े प्रभावी ढंग से दिखाया कि भारतीय आध्यात्मिक वाङ्मय में संघर्ष की पराकाष्ठा से प्रकाशित गरुड़ एक महानायक के रूप में प्रतिबिंबित होता है, जो अपने अदम्य शौर्य से गरुड़ भास्कर, गरुड़ वासुकी, गरुड़ वाहन, नरकासुर वध जैसे चरित्रों का अनुपालन करता है और धर्म ग्रंथो में अपनी पूज्य स्थिति को प्राप्त करता है। धर्म ग्रंथो में विदित कथाओ के अनुसार गरुड़ का जन्म समय से पूर्व ही हो गया बावजूद इसके उसमें अपार ऊर्जा संग्रहित था। अपनी ऊर्जा की प्रचंडता के कारण वह अपने माता के मना करने पर भी सूर्य को निगलने के लिए चल पड़ा। वह अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए भगवान विष्णु को चुनौती देता है और उनसे युद्ध कर उन्हें और उनके सभी अस्त्रों को पराजित करता है तत्पश्चात भगवान विष्णु ने उन्हें अपने वाहन के रूप में स्थान प्रदान किया। इस चरित्र की विविधता को दर्शाने के लिए छऊ की तीन शैलियां सरायकेला, मयूरभंज और पुरुलिया तीनों में अद्भुत कलात्मक सामंजस्य दिखाई दिया। जहां सरायकेला छऊ इसे शास्त्रीय छुअन प्रदान कर रहा था, वहीं मयूरभंज छऊ इसे स्पष्ट रूप से चित्रित कर रहा था। पुरुलिया छऊ इसकी आक्रामक तेवर को प्रस्तुत करने में अद्भुत तारतम्यता को दर्शा रहा था।

छतरपुर जिले के शिल्प सर्वाधिक प्राचीन- डॉ सुधीर कुमार छारी

कलाविदों एवं कलाकारों के मध्य संवाद की लोकप्रिय गतिविधि कलावार्ता का पहला दिन खजुराहो के शिल्प सौंदर्य और छतरपुर जिले के शैल चित्र पर केंद्रित रहा। महाराजा छत्रसाल यूनिवर्सिटी के शोध निदेशक एवं विभागाध्यक्ष डॉ. सुधीर कुमार छारी मुखातिब हो रहे थे कलाकारों और कलाप्रेमियों से। उन्होंने कहा कि छतरपुर जिले में उन्होंने 3000 से अधिक शैल चित्रों की खोज की है। जो 45000 से 20000 ईस्वी पूर्व के हैं। ये शैल चित्र विश्व के सर्वाधिक प्राचीन शैल चित्र हैं। उन्होंने इनकी तकनीक, रंग और विषय पर बात की। उन्होंने बताया कि ये सीधी रेखा में बनाए गए चित्र हैं और इन्हें बनाने के लिए केवल लाल रंग का उपयोग किया गया है, जबकि दूसरी जगहों पर अन्य रंग के शैल चित्र भी पाए गए हैं। उन्होंने बताया कि खजुराहो के शिल्पों में अनूठा सौंदर्य देखने को मिलता है, जिसमें स्त्री पेंटिंग करती, अंगड़ाई लेती, बाल बनाती, श्रृंगार करती इत्यादि मुद्राओं में हैं, जो सौंदर्य से भरपूर है।

मंच पर साकार हुई बालमन की कल्पनाएं

51वें खजुराहो नृत्य समारोह की दूसरी शाम का शंखनाद हुआ बालमन की नृत्य प्रस्तुतियों के साथ। खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव के दूसरे दिन भरतनाट्यम और कथक प्रस्तुतियों से मंच सजा। पहली प्रस्तुति कुमारी इदीका देवेन्द्र, भोपाल की भरतनाट्यम नृत्य की हुई। उनकी प्रथम प्रस्तुति नटेश कौतुवम् थी। जो राग नट्टै एवं ताल आदि में निबद्ध थी। इस प्रस्तुति में समस्त ऋषि मुनि, देवता और असुरों द्वारा पूजित, नृत्य के स्वामी नटराज को नमन किया गया। दूसरी प्रस्तुति थी शब्दम, यह एक पारंपरिक भरतनाट्यम रचना है जो ताल मिश्र चापू और रागमालिका में निबद्ध है। इसमें नायिका श्री कृष्ण की लीलाओं को दर्शाती है और उनके मनमोहक रूप का वर्णन करती है। अंतिम प्रस्तुति तिल्लाना थी, जिसका अर्थ है ताल में लीन नृत्यांगना। यह प्रस्तुति नृत्य की ओर आत्मसमर्पण है, साधना की पराकाष्ठा है। यह तिल्लाना चतुरस्त्र जाति (4 मात्रा) खंड जाति (5 मात्रा) एवं संकीर्ण जाति (9 मात्रा) में निबद्ध है। इसके साहित्य में भगवान् कार्तिकेय की स्तुति की गई। यह रचना राग शिवरंजिनी और ताल आदि में निबद्ध थी। इसके बाद कथक की प्रस्तुति ग्वालियर की कुमारी सौम्य जैन ने दी। उन्होंने अपनी प्रस्तुति में सर्वप्रथम भगवान शिव को समर्पित शिव रुद्राकाष्टकम, जिसके बोल थे नमामि शमीशान निर्वाणरूपम...। दूसरी प्रस्तुति में शुद्ध नृत्य प्रस्तुत किया, जो ताल तीनताल में निबद्ध था। तीसरी प्रस्तुति ठुमरी की थी, जिसमें राधा कृष्ण का प्रेम और पनघट की खेहल छेड़ छाड़ को बड़े ही मनमोहक ढंग से नृत्य में बांधा। अंतिम प्रस्तुति में जयपुर घराने का तिरवत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर बाल नृत्य कलाकारों का मनोबल बढ़ाने सुप्रसिद्ध कला समीक्षक डॉ.ताती चौधरी भी पधारीं।

प्रणाम में डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की सुदीर्घ कला यात्रा

51वें खजुराहो नृत्य समारोह में विशेष रूप से वरिष्ठ नृत्यांगना और पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के कला अवदान पर केंद्रित प्रणाम प्रदर्शनी भी संयोजित की गई है। जिसमें डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की कला यात्रा की स्मृतियां छायाचित्रों में दिखाई दे रही हैं। एक नृत्यांगना की सुदीर्घ साधना, अथक परिश्रम और लगन, जिसके परिणाम में उसे मिलता है अनेक कलाप्रेमियों का स्नेह, प्रतिष्ठित मंच, अनेक देशों की यात्राएं और सम्मान। साथ ही डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम द्वारा डिजाइन की गई नृत्य पोशाक, उनके शोध आधारित पुस्तकें इत्यादि भी प्रदर्शित की जा रही हैं। यह प्रदर्शनी उन नृत्य कलाकारों के लिए प्रेरणा है जो नृत्य में भविष्य देखते हैं।

51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह का दूसरा दिन

नृत्य के रूप में मंच पर साकार हुआ संस्कृति का सौंदर्य, ईश्वर की वंदना, कथा—कहानियों और परंपराओं का जगमगाया संसार

कलावार्ता में छतरपुर के शैल चित्रों पर बात, खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव में बालमन की कल्पनाएं और प्रणाम में सच्ची साधक की कला यात्रा

तुलसीदास सोनी

छतरपुर भ्रमण न्यूज। खजुराहो। मध्यप्रदेशशासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग एवं जिला प्रशासन छतरपुर के सहयोग से आयोजित 51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह की दूसरी शाम देश के सुप्रसिद्ध नृत्य कलाकारों ने कंदरिया महादेव मंदिर की आभा में बने मंच पर संस्कृति के अनूठे रंग दमक उठे। सांझ की धुंधलाती रोशनी में नृत्य का संसार जगमगा उठा और रात होते—होते परवान चढ़ा।

भारतीय कला—संस्कृति का प्रतीक बन चुके खजुराहो के इस मंच पर दूसरी शाम तीन नृत्य प्रस्तुतियां सुधिजनों के सामने आईं। इसमें पहली प्रस्तुति थी सुप्रसिद्ध मणिपुरी नृत्यांगना और पद्मश्री दर्शना झावेरी एवं उनके शिष्यों की। एक ऐसी नृत्यांगना जिसने नृत्य को न सिर्फ किया, बल्कि उसे आत्मसात भी किया। अपनी गुरु परम्परा को नृत्य के आकाश में बुलंदियों तक लेकर आईं गुरु बिपिन सिंह के मणिपुरी घराने की आला दर्जे की नृत्यांगना ने अपनी प्रस्तुति का आरम्भ पारंपरिक रूप से ईश्वर की वंदना से किया। मंगलाचरण में उन्होंने भगवान श्री कृष्ण और राधा को नमन किया। इसके बाद बसंत रास का प्रमुख उत्सव

...शेष पृष्ठ दो पर

नृत्य के रूप में मंच पर साकार... प्रथम पृष्ठ का शेष-

हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Bhopal Main - 22 Feb 2025 - Page 10

खजुराहो नृत्य समारोह का दूसरा दिन

मंच पर साकार हुआ संस्कृति का सौंदर्य, ईश्वर की वंदना

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

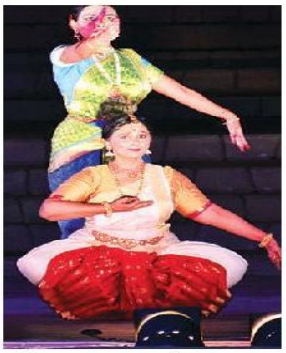

51वां खजुराहो नृत्य समारोह की दूसरी शाम देश के सुप्रसिद्ध नृत्य कलाकारों ने कंदरिया महादेव मंदिर की आभा में बने मंच पर संस्कृति के अनूठे रंग दमक उठे। सांझ की धुंधलाती रोशनी में नृत्य का संसार जगमगा उठा और रात होते—होते परवान चढ़ा।

भारतीय कला—संस्कृति का प्रतीक बन चुके खजुराहो के इस मंच पर दूसरी शाम तीन नृत्य प्रस्तुतियां सुधिजनों के सामने आईं। इसमें पहली प्रस्तुति थी सुप्रसिद्ध मणिपुरी नृत्यांगना और पद्मश्री दर्शना झावेरी एवं उनके शिष्यों की। नृत्यांगना ने मंगलाचरण में भगवान श्री कृष्ण और राधा को नमन किया। इसके बाद बसंत रास का प्रमुख उत्सव होली मंच पर साकार हुआ। जिसके केंद्र में थे कृष्ण, राधा और गोपियां। होलिका क्रीड़म प्रस्तुति ने सुधिजनों को ब्रज की होली सदृश्य दिखाई। होली के रंगों के बाद मनभजन प्रस्तुति दी, जो जयदेव रचित गीत गोविंदम पर आधारित थी।

मंच पर नमूदार हुईं युवा नृत्यांगना श्रेयसी

इसके बाद अवसर था भरतनाट्यम नृत्य को देखने का और मंच पर नमूदार हुईं युवा नृत्यांगना श्रेयसी गोपीनाथ, दिल्ली। उनकी प्रस्तुति थी द व्हील ऑफ चॉइसेस, जिसे श्रेयसी गोपीनाथ डांस अकादमी के कलाकारों ने प्रस्तुत किया। अंतिम प्रस्तुति छाऊ की रही। जिसे प्रस्तुत किया पद्मश्री शशधर आचार्य एवं साथी, झारखंड ने। उनकी प्रस्तुति का नाम महानायक गरुड़ था। इस नृत्यनाटिका में उन्होंने नृत्य के माध्यम से बड़े प्रभावी ढंग से दिखाया कि भारतीय आध्यात्मिक वांग्मय में संघर्ष की पराकाष्ठा से प्रकाशित गरुड़ एक महानायक के रूप में प्रतिबिंबित होता है।

दिनांक 23 फरवरी, 2025

दैनिक भास्कर

छतरपुर भास्कर 23-02-2025

खजुराहो नृत्य समारोह • कुचीपुड़ी, कथक, मोहिनीअट्टम व कथकली नृत्य की प्रस्तुतियां

कुचिपुड़ी नृत्यांगना ने शिव-पार्वती परिणय, थक्कुवेमि ने राम की स्तुति का चित्रण किया

भास्कर संवाददाता | छतरपुर/खजुराहो

नृत्य समारोह के तीसरी संध्या कुचीपुड़ी, कथक, मोहिनीअट्टम और कथकली नृत्य की प्रस्तुतियां हुई। प्रथम चरण में कुचिपुड़ी नृत्यांगना दीपिका रेड्डी ने अपने नृत्य की शुरुआत शिव पार्वती परिणय से की जिसमे उन्होंने भक्तों द्वारा शिव पार्वती की प्रशंसा का नृत्य चित्रण किया उनकी यह प्रस्तुति तिसरा गति की रचना एवं आरिभी राग में निबद्ध थी। जिसका नृत्य संयोजन स्वाम दीपिका रेड्डी एवं संगीत संयोजन दीएसवी शास्त्री द्वारा किया गया था।

अगले क्रम में थक्कुवेमि मनकु की प्रस्तुति हुई। सौराष्ट्र रागम् और आदि तालम् में निबद्ध यह प्रस्तुति तेलंगाना के प्रसिद्ध वाग्गेयकार रामदासु द्वारा रचित एक मधुर रचना है। वह भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त थे। इस गीत में कवि हर्षपूर्वक भगवान राम की स्तुति करते हुए कहते हैं कि, यदि श्रीराम हमारे साथ हैं, तो हमें किसी चीज की कमी नहीं है। हमारा विश्वास है कि भगवान विष्णु ने धर्म की रक्षा और अधर्म के विनाश के लिए मानव कल्याण हेतु विभिन्न अवतार (दशावतार) धारण किए हैं। इसके उपरांत दीपिका एवं समूह ने

छतरपुर | शिव-पार्वती परिणय की प्रस्तुति कुचिपुड़ी नृत्य में।

रुद्रमा प्रवेशम प्रस्तुति दी। जिसमे उनकी शिष्या स्लोका ने रुद्रमा के रूप में एवं भद्रकलिका के रूप में नृत्यांगना दीपिका रेड्डी ने नृत्य किया। जिसमें काकतीय वंश की योद्धा रानी रुद्रमा देवी की वीरता का नृत्य के माध्यम से चित्रण किया। दूसरी प्रस्तुति कथक की थी, जिसे प्रस्तुत करने मंच पर आई एलियोनोरा पेट्रोवा और तातियाना नाजारोवा, रूस, उन्होंने अपनी प्रस्तुति की शुरुआत बसंत की बंदिश से की। इसके बाद ध्रुपद पूजन चली महादेव को अपनी आकर्षक भाव-भंगिमाओं से व्यक्त करते हुए दर्शकों का मन मोह लिया। अगली प्रस्तुति जयपुर घराने से संबद्ध थी, जिसे तीनताल में प्रस्तुत किया। अंतिम प्रस्तुति पारम्परिक गजल बहार प्रस्तुत कर विराम दिया। दूसरे चरण में गायत्री मधुसूदन ने दक्षिण भारत के पारंपरिक नृत्य मोहिनीअट्टम नृत्य में रामायण के प्रसंगों के तहत गरुण का लार्ड राम की सेवा में अपना सब कुछ समर्पित करने का चित्रण किया। केरल के सदानम हरिकुमार ने पुरुषों द्वारा किए जाने वाला केरल का शानदार नृत्य कथकली किया। जिसमें अनेक प्रसंग महाभारत एवं रामायण से लिए गए थे। जिसे नृत्यकारों ने अपनी नयन मुद्रा हस्त संचालन को पारंपरिक वाद्यों पर किया। तीसरे दिन की अंतिम प्रस्तुति कथकली की थी।

खजुराहो के मंदिरों के नाम समय-समय पर परिवर्तित हुए : डॉ. शिवाकांत द्विवेदी

कलाकारों और कलाविदों के मध्य संवाद का लोकप्रिय सत्र कलावार्ता के दूसरे दिन जीवाजी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के रिटायर्ड विभागाध्यक्ष डॉ. शिवाकांत द्विवेदी ने खजुराहो मंदिर सहस्त्राब्दी पूर्ण होने एवं ऐतिहासिक यात्रा पर व्याख्यान दिया। उन्होंने मंदिरों का स्थापत्य, नक्काशी, मिथुन मूर्तियों पर प्रकाश डाला। डॉ. शिवाकांत द्विवेदी ने बताया कि इन मंदिरों के नाम समय-समय पर परिवर्तित होते रहे हैं। ब्रिटिश काल में जो शोध कार्य प्रारंभ हुआ उसमें एफसी. मैसी, टीएस बर्ड और एलेक्जेंडर कनिंग्स ने यहां के मंदिरों का सर्वेक्षण किया, नोट्स और ड्राइंग्स भी बनाए। जिसके एल्बम इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन में सुरक्षित रखे हुए हैं। उन्होंने कहा कि खजुराहो के मंदिर के भ्रमण पर आने वाले पर्यटकों की दृष्टि केवल मनोरंजन होती है। जबकि, इन्हें आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ देखा जाना चाहिए। दैवीय आपदा से सुरक्षित रखने के लिए इनका आंकन हुआ होगा या शैव धर्म के कौल कापलिक संप्रदाय की साधना पद्धति को प्रकाशित करने के लिए हुआ होगा। उन्होंने कहा कि सामंतवादी आदर्शों और व्यवहारों की अभियंजना के लिए भी इनका निर्माण हुआ होगा। मेरी दृष्टि से इन मंदिरों का निर्माण सृष्टि की उत्पत्ति की ओर इशारा करती है।

बाल नृत्य महोत्सव में कथक नृत्य हुआ

खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव के मंच पर बालमन की कल्पना और ऊर्जा से नृत्य प्रेमी प्रभावित हो रहे हैं। खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का तीसरा दिन कथक के नाम रहा। पहली प्रस्तुति कुमारी शुभदा मेड़तिया की थी। उन्होंने सर्वप्रथम राम वंदना की। इसके बाद अपनी कथक के शुद्ध पक्ष को प्रस्तुत किया। दूसरी प्रस्तुति ग्वालियर की प्रतिभाशाली कथक नृत्यांगना ज्योति तोमर की रही। वे विगत तीन वर्षों से गुरु शिवा नायक जी के सानिध्य में कथक की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

दैनिक भास्कर

छतरपुर भास्कर 23-02-2025

दौरान महाराजपुर नगर में मस्जिद के पास उसकी मौत हो गई। मौके पर पहुंचे। इस दौरान वन परिवार के लोग उठ घर के अंदर

भास्कर खास नृत्य महोत्सव में वाद्ययंत्रों की प्रदर्शनी, सरकार इसे स्थायी रूप से स्थापित करेगी

प्रदर्शनी में 26 राज्यों और 6 देशों के 630 लोक वाद्ययंत्र

डॉ. मुरादअली | खजुराहो

नृत्य महोत्सव में पहली बार देश विदेश के लोक वाद्य यंत्रों की प्रदर्शनी लगाई है। इस प्रदर्शनी में 630 वाद्य यंत्रों को प्रदर्शित किया गया है। इनमें प्राचीन लोक संगीत में उपयोग किए जाने वाले वाद्ययंत्रों को भी शामिल किया गया है। इनमें कई वाद्ययंत्र विलुप्त होने की कगार पर हैं।

मध्य प्रदेश संस्कृति विभाग ने वाद्ययंत्रों की यह प्रदर्शनी लगाई है। इस प्रदर्शनी का संचालन मप्र संस्कृति विभाग उज्जैन का त्रिवेणी संग्रहालय कर रहा है। खजुराहो में नृत्य महोत्सव के पास एक विशाल डोम में देश के 26 राज्यों और विदेश के 6 देशों के लोक वाद्य यंत्रों की प्रदर्शनी लगाई है। यह जो अद्भुत है। 20 फरवरी से शुरू हुई प्रदर्शनी 26 फरवरी तक चलेगी। त्रिवेणी संग्रहालय उज्जैन के प्रभारी अशोक मिश्रा ने बताया कि उन्होंने अभी तक 1100 लोक वाद्य यंत्रों को ट्रेस किया है। इनमें से 630 वाद्य यंत्रों को संग्रहित कर लिया गया है। देश के लिए यह पहली प्रदर्शनी है जो मध्य प्रदेश के लोक रंग समारोह भोपाल, तानसेन समारोह ग्वालियर और अब खजुराहो डांस फेस्टिवल में लगाई गई है। उन्होंने कहा सरकार जल्द ही इस प्रदर्शनी को स्थायी रूप से स्थापित करेगी।

वाद्ययंत्रों की प्रदर्शनी में केरल की नागफनी नाग वीना, मणिपुर का राह कबुआई, उत्तर भारत का काछवा सितार, छत्तीसगढ़ का गुडुमबजा, दक्षिण भारत का तृसद, उड़ीसा का रंगीन मृदंग, महाराष्ट्र का नाशी ढोल, राजस्थान की घेरू ढफली, मालवा का तम्बूर और बुंदेलखंड के रमतूला जैसे वाद्ययंत्र को इस संकलन में शामिल किया गया है।

6 अन्य देशों के वाद्य यंत्र

प्रदर्शनी में विदेशी वाद्य यंत्रों को भी स्थान दिया गया है। इनमें ऑस्ट्रेलिया का डफ, रूस का डेडजी, श्रीलंका की शंखली, तिब्बत का कना ढोल, नेपाल का नरसिम्हा, अफ्रीका जम्बे ड्रम शामिल है।

संतूर: यह भारतीय संगीत का एक मुख्य तार वाद्य है, जिसका संगीत बहुत ही कर्णप्रिय होता है। इसे 100 तारों की वीणा के रूप में भी जाना जाता है। यह लकड़ी के एक चौकोर बक्से की तरह दिखाई देता है। इस पर धातु के तार बंधे होते हैं।

नेपाली सारंगी: लकड़ी से बने इस वाद्ययंत्र में चर्मपत्र और धातु का भी उपयोग किया जाता है। नेपाल का गंधर्व समुदाय इस वाद्य यंत्र का बजाता है। नेपाल में इसे संदेश या समाचार पहुंचाने के माध्यम के रूप में भी उपयोग किया जाता है।

रबाब: इस मूलत: अफगानिस्तान का वाद्य यंत्र है। इसे अफगानिस्तान के लोक संगीत में बजाया जाता है। इसके साथ ही जम्मू कश्मीर के चक्करी, सूफियाना कलाम और कश्मीर के अन्य लोक शैलियों में उपयोग किया जाता है।

रुद्रवीणा: इसका प्राचीनतम उल्लेख चौथी सदी के नारदकृत संगीत मकरंद में मिलता है। रुद्रवीणा में स्थापित एक सप्तक में 12 स्वर स्थानों के कारण भारतीयों ने ग्यारह रुद्र और एक महारुद्र के दर्शन किए। इसलिए इसे रुद्रवीणा कहा जाने लगा। इसमें दो बड़े तुम्बे रहते हैं और बांस के दण्ड से उन्हें जोड़ा जाता है। एक तूम्बे को कन्धे के सहारे रखकर इसका वादन किया जाता है। इसमें परदे होते हैं।

खजुराहो नृत्य समारोह : दीपिका रेड्डी, एलियोनोरा-तातियाना, गायत्री मधुसूदन व सदानम हरिकुमार की प्रस्तुतियां हुईं

शिव के सौंदर्य, पार्वती से विवाह और विष्णु के दशावतारों पर केंद्रित रही तीसरी शाम

दीपिका रेड्डी

भास्कर न्यूज | खजुराहो

खजुराहो नृत्य समारोह की तीसरी शाम कुचीपुड़ी, कथक, मोहिनीअट्टम और कथकली नृत्य से सजी। यहां समारोह परिसर में चहुं ओर कला-संस्कृति के रंग बिखरे हुए हैं। कहीं सजीव चित्रांकन तो कहीं पारंपरिक शिल्प से स्टॉल सजे हुए हैं। नृत्य के आनंद उत्सव की तीसरी शाम का आगाज संगीत नाटक अकादमी अवॉर्डी दीपिका रेड्डी के कुचिपुड़ी नृत्य से हुआ। दीपिका ने प्रस्तुति की शुरुआत शिव-पार्वती परिणय से की। तिसरा गति और आरभि रागम की इस प्रस्तुति में भक्तगण भगवान शिव और उनकी पत्नी पार्वती की प्रशंसा में गाते और नृत्य करते हैं, साथ ही वे इस दिव्य विवाह की कहानी को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप इन दैवीय जोड़े की शादी हुई थी। अगले क्रम में थक्कुवेमि मनकु की प्रस्तुति हुई। सौराष्ट्र रागम् और आदि तालम् में निबद्ध यह प्रस्तुति तेलंगाना के प्रसिद्ध वाग्गेयकार रामदासु द्वारा रचित है।

वे भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त थे। इस गीत में कवि हर्षपूर्वक भगवान राम की स्तुति करते हुए कहते हैं कि यदि श्रीराम हमारे साथ हैं, तो हमें किसी चीज की कमी नहीं है। हमारा विश्वास है कि भगवान विष्णु ने धर्म की रक्षा और अधर्म के विनाश के लिए मानव कल्याण हेतु विभिन्न अवतार (दशावतार) धारण किए हैं। अगली प्रस्तुति रुद्रमा प्रवेशम् की थी। इस रचना को दीपिका रेड्डी की पुत्री श्लोका रेड्डी द्वारा प्रस्तुत किया गया। श्लोका ने इस प्रस्तुति में दिखाया कि अपने पिता, राजा गणपति देव द्वारा पुत्र के समान पाली-पोसी गई रुद्रमादेवी, भारत की उन गिनी-चुनी महिलाओं में से थीं, जिन्होंने सम्राट के रूप में शासन किया। अंतिम प्रस्तुति मधुरम् मधुरम् में भगवान श्री कृष्ण के दिव्य और चंचल क्रियाकलापों के दृश्यों का आकर्षक चित्रण था। इस रचना का समापन मनमोहक नृत्य से हुआ, जिसमें नर्तकी पीतल की थाली के किनारे खड़ी होकर नृत्य के जटिल और लयबद्ध कदमों का प्रदर्शन करती है, जो नटुवन्नार और तबलावादक के साथ तालमेल में होता है। यह कुचिपुड़ी की विशेषता है।

» मोहिनी अट्टम में कैलाश पर्वत पर विराजमान शिव की सुंदरता का वर्णन

तीसरी प्रस्तुति गायत्री मधुसूदन ने केरल के मोहिनीअट्टम नृत्य की दी। उन्होंने शशिसेकरा स्तुति में भगवान शिव का सुंदर वर्णन किया, जो पवित्र भस्म से सुशोभित हैं, जो सफेद बादलों के समूह की तरह चमकते हैं। कैलाश पर्वत पर बैठे हैं, जो हिमालय पर एक चांदी के मुकुट जैसा दिखता है। इसके बाद, 'मुखाचलम' प्रस्तुत किया गया। इसमें मोहिनीअट्टम के विशिष्ट गति पैटर्न को प्रदर्शित किया गया, जिसमें इसकी विशिष्ट तरंगें और डुबकी शामिल थीं। जीवंत रागमालिका और थलमालिका पर आधारित यह रचना केरल के लोकप्रिय लय पैटर्न को सहजता से मिश्रित कर रही थी, जिसमें कवलम की विशिष्ट शैली है। अगली प्रस्तुति पुन्नागवराली थी। इसमें जीमूथवाहन की कहानी दर्शायी गई, जो एक धर्मी राजा था, जिसने अपने वृद्ध माता-पिता के लिए शांतिपूर्ण शरण पाने के लिए अपना राज्य त्याग दिया था। यह प्रस्तुति रागमालिका और थालमालिका में निबद्ध थी, जिसका संगीत कोट्टकल मधु द्वारा रचित है और गीतकार मानव वर्मा हैं।

गायत्री मधुसूदन

कथकली में दर्शाई पांडवों के वनवास की कथा

तीसरे दिन की अंतिम प्रस्तुति संगीत नाटक अकादमी अवॉर्डी केरल के सदानम के हरिकुमार ने कथकली के रूप में प्रस्तुत की। कथकली में भारतीय महाकाव्यों से ली गई कथाओं का नाटकीकरण किया जाता है। इसमें दिखाया जब पांडव वनवास में जंगल में रह रहे थे, तो एक दिन वायु देवता ने द्रौपदी के सामने सुंदर सौगंधिकम फूल गिराया, जो भीम के पिता और द्रौपदी के ससुर थे। द्रौपदी ने भीम को ऐसे फूल और लाने के लिए मना लिया। हनुमान को अपने छोटे भाई की परीक्षा लेना चाहते थे। एक बूढ़े बंदर के रूप में हनुमान ने भीम की कार्य में बाधा डाली। सच्चाई से अंजान, भीम ने हनुमान की पूंछ को उठाने और हटाने की कोशिश करते समय अपना गदा हनुमान की पूंछ के नीचे खो दिया। भीम की विनती पर हनुमान ने अपनी असली पहचान बताई और भीम ने अपने बड़े भाई के चरणों में प्रणाम किया। हनुमान के आशीर्वाद से भीम सौगंधिकम फूल इकट्ठा करने के लिए आगे बढ़े। इस प्रस्तुति में भीम का किरदार सदनम् विपीन चन्द्रं, द्रौपदी का किरदार कलामंडलम श्रीराम और हनुमान का किरदार डॉ. सदनम हरिकुमार ने निभाया।

रूसी कलाकारों ने पूजन चली महादेव में भावों से मन मोहा

दूसरी प्रस्तुति कथक की थी, जिसे रूस की एलियोनोरा पेट्रोवा और तातियाना नाजारोवा ने प्रस्तुत किया। उन्होंने शुरुआत बसंत की बंदिश से की। इसके बाद ध्रुपद 'पूजन चली महादेव' को अपनी आकर्षक भाव-भंगिमाओं से व्यक्त करते हुए दर्शकों का मन मोह लिया। अगली प्रस्तुति जयपुर घराने से संबद्ध थी, जिसे तीनताल में प्रस्तुत किया। अंतिम प्रस्तुति पारम्परिक गजल 'बहार' प्रस्तुत कर विराम दिया।

दैनिक भास्कर
Sun, 23 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76862250

ऊर्जा और उत्साह का पर्याय बन रहा खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव

तीसरे दिन शुभदा मेड़तिया ने राम वंदना, ज्योति तोमर ने कथक की बेहतरीन प्रस्तुति से प्रभावित किया

सिटी भास्कर | छतरपुर

51वें खजुराहो नृत्य समारोह के एक ओर जहां मुख्य मंच पर देश-विदेश के नृत्य कलाकारों की साधना देखने को मिल रही है, वहीं दूसरी ओर खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव के मंच पर बालमन की कल्पना और ऊर्जा से नृत्यप्रेमी प्रभावित हो रहे हैं। खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का तीसरा दिन कथक के नाम रहा। पहली प्रस्तुति कुमारी शुभदा मेड़तिया की थी। उन्होंने सर्वप्रथम राम वंदना की। इसके बाद अपनी कथक के शुद्ध पक्ष को प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने ताल त्रिताल में आमद, थाट, परने, प्रिमलू और तिहाहियां, लड़ी एवं कवित्व शामिल थे। अंत में राग कलावती त्रिताल दुरत लय में निबद्ध तराने से प्रस्तुति को विराम दिया। दूसरी प्रस्तुति ग्वालियर की प्रतिभाशाली कथक नृत्यांगना ज्योति तोमर की रही। वे विगत तीन वर्षों से गुरु शिवा नायक के सान्निध्य में कथक की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव में एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां हो रही हैं।

कलाप्रेमियों के मध्य लोकप्रिय हो रही नाद प्रदर्शनी

51वें खजुराहो नृत्य समारोह में पहली बार एक अनूठी प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है, जिसका नाम है नाद। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ध्वनि या साउंड। यह ध्वनि कहां से उत्पन्न होती है, जिसे सुनने के बाद आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होती है। यह ध्वनि उत्पन्न होती है वाद्यों या साजों से। जिसका संगीत में महत्त्वपूर्ण स्थान है। लोक, जनजातीय और शास्त्रीय संगीत में प्रयोग होने वाले वाद्यों को नाद प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया है। यह प्रदर्शनी कलाप्रेमियों के मध्य लोकप्रिय हो रही है, क्योंकि यहां कई दुर्लभ वाद्य भी प्रदर्शित किए गए हैं। इसमें दक्षिणी ओडिसा के परजा समुदाय द्वारा अपने गीतों और नृत्यों के दौरान उपयोग किया जाने वाला वाद्य टमक है। यह धातु एवं चर्मपात्र से निर्मित किया जाता है। वहीं वायलिन और सेलो के समान वाला उच्च स्वर वाला तार वाद्य वायोला भी प्रदर्शित है। यह वायलिन से बड़ा होता है। इसकी आवाज कम और गहरी होती हैए लेकिन सेलो से ऊंची होती है। इसमें चार तार होते हैं। यहां रुपका वाद्य भी प्रदर्शित किया गया है। जो एक द्विमुखी ढोल है, जिसका उपयोग झारखंड प्रदेश में जनजातियों द्वारा पारंपरिक उत्सवों में किया जाता है।

खजुराहो के मंदिरों के नाम समय-समय पर परिवर्तित हुए : डॉ. शिवाकांत

कलाकारों और कलाविदों के मध्य संवाद का सत्र कलावार्ता के दूसरे दिन जीवाजी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के रिटायर्ड विभागाध्यक्ष डॉ. शिवाकांत द्विवेदी ने खजुराहो मंदिर सहस्त्राब्दी पूर्ण होने एवं ऐतिहासिक यात्रा पर व्याख्यान दिया। उन्होंने मंदिरों का स्थापत्य, नक्काशी, मिथुन मूर्तियों पर प्रकाश डाला। डॉ. शिवाकांत द्विवेदी ने बताया कि इन मंदिरों के नाम समय-समय पर परिवर्तित होते रहे हैं। ब्रिटिश काल में जो शोध कार्य प्रारंभ हुआ उसमें एफसी मैसी, टीएस बर्ड और एलेक्जेंडर कलिंग्स ने यहां के मंदिरों का सर्वेक्षण किया, नोट्स और ड्राइंग्स भी बनाए। जिसके एल्बम इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन में सुरक्षित रखे हुए हैं। उन्होंने कहा कि खजुराहो के मंदिर के भ्रमण पर आने वाले पर्यटकों की दृष्टि केवल मनोरंजन होती है। जबकि, इन्हें आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ देखा जाना चाहिए। दैवीय आपदा से सुरक्षित रखने के लिए इनका आंकन हुआ होगा या शैव धर्म के कौल कापलिक संप्रदाय की साधना पद्धति को प्रकाशित करने के लिए हुआ होगा। उन्होंने कहा कि सामंतवादी आदर्शों और व्यवहारों की अभियंजना के लिए भी इनका निर्माण हुआ होगा। उन्होंने कहा कि मेरी दृष्टि से इन मंदिरों का निर्माण सृष्टि की उत्पत्ति की ओर इशारा करती है।

दैनिक भास्कर
Sun, 23 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76870531

51वां खजुराहो नृत्य समारोहः शास्त्रीय रागम व ताल का अद्भुत मिश्रण दिखा

रूस की नृत्यांगनाओं के कथक ने शिव की परंपरा व भारतीय संस्कृति को मंच पर उकेरा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

छतरपुर, खजुराहो के सिद्ध मंच पर आयोजित 51वें खजुराहो नृत्य समारोह का तीसरा दिन नृत्य कला प्रेमियों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव बना। इस दिन के आयोजन में देश-विदेश के प्रमुख कलाकारों ने शिव की परंपरा और भारतीय नृत्य कला की गरिमा को दर्शाया। विभिन्न नृत्य रूपों में प्रस्तुतियों का आनंद लेने के लिए श्रद्धालु और कला रसिक खजुराहो में एकत्रित हुए।

नृत्य उत्सव की शुरुआत कुचिपुड़ी नृत्य से हुई, जिसे संगीत नाटक अकादमी अवॉर्डी सुश्री दीपिका रेड्डी ने प्रस्तुत किया। उनका प्रदर्शन विशेष रूप से शिव पार्वती परिणय पर आधारित था, जिसमें भक्तगण भगवान शिव और उनकी पत्नी पार्वती के विवाह की सुंदरता और दिव्यता को नृत्य के माध्यम से दर्शाते हैं। इसके बाद, दीपिका ने 'थक्कुवेमि मनकु' और 'रुद्रमा प्रवेशम्' जैसी और भी आकर्षक प्रस्तुतियां दीं, जिसमें शास्त्रीय रागम और ताल के अद्भुत मिश्रण से दर्शकों का मन मोह लिया।

इसके बाद मंच पर रूस की प्रसिद्ध नृत्यांगनाएं एलियोनोरा पेट्रोवा और तातियाना नाजारोवा, जिन्होंने कथक नृत्य की प्रस्तुतियां दीं। इन कलाकारों ने बसंत की बंदिश और ध्रुपद 'पूजन चली महादेव' पर अपने भावपूर्ण नृत्य से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके बाद, जयपुर घराने की प्रस्तुति ने भी दर्शकों को खींच लिया।

समारोह का अंतिम आकर्षण कथकली नृत्य था, जिसे केरल के प्रसिद्ध कलाकार सदानम के. हरिकुमार और उनके साथियों ने प्रस्तुत किया। कथकली, जो भारतीय महाकाव्यों की कथाओं पर आधारित नृत्य शैली है, ने खजुराहो के मंच पर अपनी पूरी गरिमा और शास्त्रीयता के साथ अपनी छाप छोड़ी। 'भीम और हनुमान' की कथा पर आधारित इस प्रस्तुति में भीम के किरदार को सदानम विपीन चन्द्र, द्रौपदी का किरदार कलामंडलम श्रीराम और हनुमान का किरदार डॉ. सदानम हरिकुमार ने शानदार तरीके से निभाया।

कला प्रेमियों को मिली नई ऊर्जा

इस दिन की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को न केवल भारतीय नृत्य की समृद्धि से अवगत कराया, बल्कि शिव की परंपरा और भारतीय संस्कृति की गहरी समझ भी प्रदान की। खजुराहो नृत्य समारोह हर साल अपने स्तर और कला के प्रति समर्पण से कला प्रेमियों को एक नई दिशा और ऊर्जा प्रदान करता है, जो भारतीय संस्कृति की महानता को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मोहिनी अट्टम नृत्य की एक खूबसूरत प्रस्तुति

तीसरी प्रस्तुति के रूप में मोहिनीअट्टम नृत्य की एक खूबसूरत प्रस्तुति देखने को मिली, जिसे केरल की प्रसिद्ध नृत्यांगना गायत्री मधुसूदन ने प्रस्तुत किया। उन्होंने 'शशिसेकरास्तुति' से शुरुआत की, जिसमें भगवान शिव का वर्णन किया गया। गायत्री की प्रस्तुति ने नृत्य कला की विशिष्टता और सुंदरता को बखूबी दर्शाया। इसके बाद उन्होंने 'मुखाचलम' और 'पुन्नागावराली' जैसी प्रस्तुतियां दीं, जिनमें रागमालिका और थलमालिका के अद्भुत मिश्रण से नृत्य को और भी शानदार बना दिया। इस दौरान उपस्थित दर्शकों ने कार्यक्रम का भरपूर लुत्फ उठाया और आनंद लिया।

हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Bhopal Main - 23 Feb 2025 - Page 10

खजुराहो के सिद्ध मंच पर देश-विदेश के साधनारत कलाकारों ने साकार की भगवान शिव की परंपरा

51वां खजुराहो नृत्य समारोह का तीसरा दिन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ खजुराहो

नेपथ्य में मंदिर की पाषाढ़ मूर्तियां, ऊपर खुला आसमान, सामने देश और विदेश से पधारे सुधि कला रसिक और मध्य में रचे गए मंच पर शिव की परम्परा को साकार करते देश-विदेश के साधनारत कलाकारों का अविस्मरणीय प्रस्तुतीकरण। कुछ ऐसा ही दृश्य बना खजुराहो नृत्य समारोह की तीसरी शाम। नृत्य की गरिमा और शास्त्रीयता को समर्पित यह आनंद उत्सव अपने 51वें संस्करण में प्रवेश कर चुका है। समारोह परिसर में चहुं ओर कला-संस्कृति के रंग बिखरे हुए हैं। कहीं सजीव चित्रांकन तो कहीं पारंपरिक शिल्प से स्टॉल सजे हुए हैं। यह कलाकार और कला प्रेमियों का भारतीय कलाओं के प्रति अनंत आस्था और समर्पण ही है जो खजुराहो नृत्य समारोह जैसे अनुष्ठान साल दर साल समृद्ध और प्रसिद्ध होते जा रहे हैं।

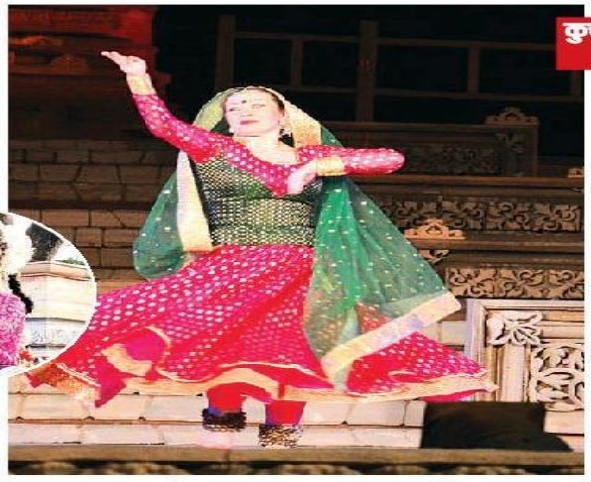

कथक के नाम रहा खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का तीसरा दिन

इसके साथ ही खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव के तीसरा दिन कथक के नाम रहा। पहली प्रस्तुति कुमारी शुभद्रा मेड़तिया की थी। उन्होंने सर्वप्रथम राम वंदना की। इसके बाद अपनी कथक के शुद्ध पक्ष को प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने ताल त्रिताल में आमद, थाट, परने, प्रिमलू और तिहाहियां, लड़ी एवं कवित्त शामिल थे।

कुचीपुड़ी, कथक, मोहिनीअट्टम के नाम तीसरी शाम

तीसरी शाम कुचीपुड़ी, कथक, मोहिनीअट्टम और कथकली नृत्य से सजी। इसका आगाज हुआ संगीत नाटक अकादमी अवॉर्डी दीपिका रेड्डी के कुचिपुड़ी नृत्य से। उनकी प्रस्तुति की शुरुआत शिव पार्वती परिणय से हुई। तिसरा गति और आरभि रागम की इस प्रस्तुति में भक्तगण भगवान शिव और उनकी पत्नी पार्वती की प्रशंसा के साथ दैवीय जोड़े की शादी हुई। अगले क्रम में थक्कुवेमि मनकु ने सौराष्ट्र रागम और आदि तालम में निबद्ध प्रस्तुति तेलंगाना के प्रसिद्ध वाग्गेयकार रामदासु द्वारा रचित एक मधुर रचना पर आधारित दी।

51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह का तीसरा दिन

खजुराहो के सिद्ध मंच पर देश–विदेश के साधनारत कलाकारों ने साकार की शिव की परम्परा

खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का तीसरा दिन कथक के नाम रहा, गुरु जनों की तालीम को ऊर्जा के मंच पर लाए बाल नृत्य कलाकार

खजुराहो। नेपथ्य में मंदिर की पाषाढ़ मूर्तियां, ऊपर खुला आसमान, सामने देश और विदेश से पधारे सुधि कला रसिक और मध्य में रचे गए मंच पर शिव की परम्परा को साकार करते देश–विदेश के साधनारत कलाकारों का अविस्मरणीय प्रस्तुतीकरण। कुछ ऐसा ही दृश्य बना खजुराहो नृत्य समारोह की तीसरी शाम। नृत्य की गरिमा और शास्त्रीयता को समर्पित यह आनंद उत्सव अपने 51वें संस्करण में प्रवेश कर चुका है।

समारोह परिसर में चहुं ओर कला–संस्कृति के रंग बिखरे हुए हैं। कहीं सजीव चित्रांकन तो कहीं पारंपरिक शिल्प से स्टॉल सजे हुए हैं। यह कलाकार और कला प्रेमियों का भारतीय कलाओं के प्रति अनंत आस्था और समर्पण ही है जो खजुराहो नृत्य समारोह जैसे अनुष्ठान साल दर साल समृद्ध और प्रसिद्ध होते जा रहे हैं। ऐसे समारोह को देख भारतीय संस्कृति गर्व का अनुभव कर रही है और अपने सच्चे पहरेदारों पर नाज कर रही है।

नृत्य के इस आनंद उत्सव की तीसरी शाम कुचीपुड़ी, कथक, मोहिनीअट्टम और कथकली नृत्य से सजी। इसका आगाज हुआ संगीत नाटक अकादमी अवॉर्डी सुश्री दीपिका रेड्डी के कुचिपुड़ी नृत्य से। उनकी प्रस्तुति की शुरुआत शिव पार्वती परिणय से हुई। तिस्रा गति और आरंभ रागम की इस प्रस्तुति में भक्तगण भगवान शिव और उनकी पत्नी पार्वती की प्रशंसा में गाते और नृत्य करते हैं, साथ ही वे इस दिव्य विवाह की कहानी को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप इन दैवीय जोड़े की शादी हुई थी। इसका संगीत डी. एस. वी. शास्त्री का था, जबकि कोरियोग्राफी दीपिका रेड्डी ने की। अगले क्रम में धकुवेमि मनकु की प्रस्तुति हुई। सौराष्ट्र रागम् और आदि तालम् में निबद्ध यह प्रस्तुति तेलंगाना के प्रसिद्ध वाग्गेयकार रामदास् द्वारा रचित एक मधुर रचना है। वे भगवान श्रीराम के अनन्य भक्त थे। इस गीत में कवि हर्षपूर्वक भगवान राम की स्तुति करते हुए कहते हैं कि यदि श्रीराम हमारे साथ हैं, तो हमें किसी चीज की कमी नहीं है। हमारा विश्वास है कि भगवान विष्णु ने धर्म की रक्षा और अधर्म के विनाश के लिए मानव कल्याण हेतु विभिन्न अवतार (दशावतार) धारण किए हैं। अगली प्रस्तुति रुद्रमा प्रवेशम् की थी। समुद्र प्रिया एवं धेनुका रागम् तथा आदि एवं खंडचापु तालम् की इस रचना को दीपिका रेड्डी की पुत्री और शिष्या श्लोका रेड्डी द्वारा प्रस्तुत किया गया। श्लोका ने आकर्षक ढंग से इस प्रस्तुति में दिखाया कि अपने पिता, राजा गणपति देव द्वारा पुत्र के समान पाली-पोसी गई रुद्रमादेवी, भारत की उन गिनी-चुनी महिलाओं में से थीं जिन्होंने सम्राट के रूप में शासन किया। इस नृत्य रचना में उनके वंश, साहसी व्यक्तित्व, घुड़सवारी में दक्षता और एक प्रशिक्षित योद्धा के रूप में उनकी तलवारबाजी की कुशलता को दर्शाया गया। अंतिम प्रस्तुति मधुरम् मधुरम् की रही। यह भगवान श्री कृष्ण के दिव्य और चंचल क्रियाकलापों, बचपन की शरारतों, चमत्कारों और कृष्ण लीला के दृश्यों का आकर्षक चित्रण था। इस रचना का समापन एक मनमोहक नृत्य के साथ हुआ, जिसमें नर्तकी पीतल की थाली के किनारे खड़ी होकर नृत्य के जटिल और लयबद्ध कदमों का प्रदर्शन करती है, जो नट्टुवनार और तबलावादक के साथ तालमेल में होता है। यह कुचिपुड़ी की विशेषता है। इसके गीतकार रामभट्टला नरसिंह शर्मा, संगीत डी. एस. वी. शास्त्री और कोरियोग्राफी दीपिका रेड्डी की थी। दूसरी प्रस्तुति कथक की थी, जिसे प्रस्तुत करने मंच पर पधारीं एलियोनोरा पेट्रोवा और तातियाना नाजारोवा, रूस। उन्होंने अपनी प्रस्तुति की शुरुआत वर्सत की बंदिश से की। इसके बाद ध्रुपद पूजन चली महादेव को अपनी आकर्षक भाव–भंगिमाओं से व्यक्त करते हुए दर्शकों का मन मोह लिया। अगली प्रस्तुति जयपुर घराने से संबद्ध थी, जिसे तीनताल में प्रस्तुत किया। अंतिम प्रस्तुति पारम्परिक गजल बहार प्रस्तुत कर विराम दिया। तीसरी प्रस्तुति सुश्री गायत्री मधुसूदन, केरल के मोहिनीअट्टम नृत्य की थी। उन्होंने अपनी प्रस्तुति की शुरुआत शशिसेकारास्तुति से की। इस रचना को महान चित्रकार राजा रवि वर्मा द्वारा लिखे गए गीतों से सजाया गया, जो नट्टकुरिंजी राग और रूपक ताल में निबद्ध थी। इसमें भगवान शिव का सुंदर वर्णन किया, जो पवित्र भस्म से सुशोभित हैं, जो सफेद बादलों के समूह की तरह चमकते हैं। कैलाश पर्वत पर बैठे हैं, जो हिमालय पर एक चांदी के मुकुट जैसा दिखता है। गीत सत्य और धार्मिकता के मार्ग पर चलने के लिए भगवान के मार्गदर्शन की मांग करते हैं, जो शांति और पवित्रता की आभा का आह्वान करते हैं, जिसका प्रतीक सफेद रंग का प्रमुख रंग है। इसके बाद, %मुखाचलम% प्रस्तुत किया गया, जिसमें मोहिनीअट्टम के विशिष्ट गति पैटर्न को प्रदर्शित किया गया, जिसमें इसकी विशिष्ट तरंगें और डुबकी शामिल थीं। जीवंत रागमालिका और थलमालिका पर आधारित यह रचना केरल के लोकप्रिय लय पैटर्न को सहजता से मिश्रित कर रही थी, जिसमें कवलम की विशिष्ट शैली है। अगली प्रस्तुति पुन्नागवराली थी। इसमें जीमूथवाहन की कहानी दर्शायी गई, जो एक धर्मी राजा था, जिसने अपने वृद्ध माता-पिता के लिए शांतिपूर्ण शरण पाने के लिए अपना राज्य त्याग दिया था। यह प्रस्तुति रागमालिका और थालमालिका में निबद्ध थी, जिसका संगीत कोट्टक्कल मधु द्वारा रचित है और गीतकार मानव वर्मा हैं।

तीसरे दिन की अंतिम प्रस्तुति कथकली की थी। जिसे प्रस्तुत करने मंच पर नमूदार हुए संगीत नाटक अकादमी अवॉर्डी श्री सदानम के.हरिकुमार, केरल। नृत्य, संगीत और अभिनय के सौंदर्यपूर्ण मिश्रण का नृत्य कथकली, जिसमें अधिकतर भारतीय महाकाव्यों से ली गई कथाओं का नाटकीकरण किया जाता है। खजुराहो के सिद्ध मंच पर भी एक कथा नृत्य प्रेमियों को देखने मिली। जिसमें दिखाया जब पांडव अपने देश से निष्कासित होने के बाद जंगल में रह रहे थे, तो एक दिन वायु देवता ने द्रौपदी के सामने एक सुंदर सौगंधिकम फूल गिराया, जो भीम के पिता और द्रौपदी के ससुर थे। द्रौपदी ऐसे और भी फूल चाहती थीं और उन्होंने भीम को लाने के लिए मना लिया।हनुमान को अपने छोटे भाई के कारनामों के बारे में पता चला। वह उसकी वीरता और जोश की परीक्षा लेना चाहता था और उसके घमंड को चूर करना चाहता था। एक बूढ़े बंदर के रूप में हनुमान ने भीम की कार्यवाही में बाधा डाली। सच्चाई से अंजान, भीम ने हनुमान की पूंछ को उठाने और हटाने की कोशिश करते समय अपना गदा हनुमान की पूंछ के नीचे खो दिया। भीम की विनती के अनुसार हनुमान ने अपनी असली पहचान उजागर की और भीम ने अपने बड़े भाई के चरणों में प्रणाम किया। हनुमान के मार्गदर्शन और आशीर्वाद से भीम सौगंधिकम फूल इकट्ठा करने के लिए आगे बढ़ा। इस मनमोहक प्रस्तुति में भीम का किरदार सदनम् विपीन चन्द्र, द्रौपदी का किरदार कलामंडलम श्रीराम और हनुमान का किरदार डॉ. सदनम हरिकुमार ने निभाया। स्वर सदनम ज्योतिष बाबू, चेंडा सदनम रामकृष्णन, मद्दलम सदनम देवदासन, चुट्टी कलामंडलम श्रीजीत और प्रस्तुति सदनम कथकली अकादमी की थी।

खजुराहो के मंदिरों के नाम समय— समय पर परिवर्तित हुए – डॉ.शिवाकांत द्विवेदी

कलाकारों और कलाविदों के मध्य संवाद का लोकप्रिय सत्र कलावार्ता के दूसरे दिन जीवाजी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के रिटायर्ड विभागाध्यक्ष डॉ.शिवाकांत द्विवेदी ने खजुराहो मंदिर सहस्त्राब्दी पूर्ण होने एवं ऐतिहासिक यात्रा पर व्याख्यान दिया। उन्होंने मंदिरों का स्थापत्य, नक्काशी, मिथुन मूर्तियों पर प्रकाश डाला। डॉ.शिवाकांत द्विवेदी ने बताया कि इन मंदिरों के नाम समय– समय पर परिवर्तित होते रहे हैं। ब्रिटिश काल में जो शोध कार्य प्रारंभ हुआ उसमें एफ.सी. मैसी, टी एस बर्ड और एलेक्जैंडर कनिंग्स ने यहां के मंदिरों का सर्वेक्षण किया, नोट्स और ड्राइंग्स भी बनाए। जिसके एल्बम इंडिया ऑफिस लाइब्रेरी, लंदन में सुरक्षित रखे हुए हैं। उन्होंने कहा कि खजुराहो के मंदिर के भ्रमण पर आने वाले पर्यटकों की दृष्टि केवल मनोरंजन होती है। जबकि, इन्हें आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ देखा जाना चाहिए। दैवीय आपदा से सुरक्षित रखने के लिए इनका आंकन हुआ होगा या शैव धर्म के कौल कापलिक संप्रदाय की साधना पद्धति को प्रकाशित करने के लिए हुआ होगा। उन्होंने कहा कि सामंतवादी आदर्शों और व्यवहारों की अभिव्यंजना के लिए भी इनका निर्माण हुआ होगा। उन्होंने कहा कि मेरी दृष्टि से इन मंदिरों का निर्माण सृष्टि की उत्पत्ति की ओर इशारा करती है।

ऊर्जा और उत्साह का पर्याय बन रहा खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का मंच– 51वें खजुराहो नृत्य समारोह के एक ओर जहां मुख्य मंच पर देश–विदेश के नृत्य कलाकारों की साधना देखने को मिल रही है, वहीं दूसरी ओर खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव के मंच पर बालमन की कल्पना और ऊर्जा से नृत्यप्रेमी प्रभावित हो रहे हैं। खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का तीसरा दिन कथक के नाम रहा। पहली प्रस्तुति कुमारी शुभदा मेड़तिया की थी। उन्होंने सर्वप्रथम राम वंदना की। इसके बाद अपनी कथक के शुद्ध पक्ष को प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने ताल त्रिताल में आमद, थाट, परने, प्रिमलू और तिहाहियां, लड़ी एवं कवित्व शामिल थे। अंत में राग कलावती त्रिताल द्रुत लय में निबद्ध तराने से प्रस्तुति को विराम दिया।

दूसरी प्रस्तुति ग्वालियर की प्रतिभाशाली कथक नृत्यांगना ज्योति तोमर की रही। वे विगत तीन वर्षों से गुरु शिवा नायक जी के सान्निध्य में कथक की शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। ज्योति ने इस प्रतिष्ठित मंच पर अपनी नृत्य साधना को गणेश वंदना, तीनताल, चतुरंग एवं ठुमरी के माध्यम से प्रस्तुत किया।

कलाप्रेमियों के मध्य लोकप्रिय हो रही +नाद= प्रदर्शनी 51वें खजुराहो नृत्य समारोह में पहली बार एक अनूठी प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है, जिसका नाम है +नाद=। जैसे कि नाम से ही स्पष्ट है ध्वनि या साउंड। यह ध्वनि कहां से उत्पन्न होती है, जिसे सुनने के बाद आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होती है। यह ध्वनि उत्पन्न होती है वाद्यों या साजों से। जिसका संगीत में महत्वपूर्ण स्थान है। लोक, जनजातीय और शास्त्रीय संगीत में प्रयोग होने वाले वाद्यों को नाद प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया है। यह प्रदर्शनी कलाप्रेमियों के मध्य लोकप्रिय हो रही है, क्योंकि यहां कई दुर्लभ वाद्य भी प्रदर्शित किए गए हैं। इसमें दक्षिणी ओड़िसा के परजा समुदाय द्वारा अपने गीतों और नृत्यों के दौरान उपयोग किया जाने वाला वाद्य टमक है। यह धातु एवं चर्मपात्र से निर्मित किया जाता है। वहीं, वायलिन और सेलो के समान वाला उच्च स्वर वाला तार वाद्य वायोला भी प्रदर्शित है। यह वायलिन से बड़ा होता है। इसकी आवाज कम और गहरी होती है, लेकिन सेलो से ऊंची होती है। इसमें चार तार होते हैं। यहां रुपका वाद्य भी प्रदर्शित किया गया है। जो एक द्विमुखी ढोल है, जिसका उपयोग झारखंड प्रदेश में जनजातियों द्वारा पारंपरिक उत्सवों में किया जाता है।

51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह का तीसरा दिन

खजुराहो के सिद्ध मंच पर देश—विदेश के साधनारत कलाकारों ने साकार की शिव की परम्परा

खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का तीसरा दिन कथक के नाम रहा, गुरु जनों की तालीम को ऊर्जा के मंच पर लाए बाल नृत्य कलाकार

[illegible]

दिनांक 24 फरवरी, 2025

दैनिक भास्कर छतरपुर भास्कर 24-02-2025

खजुराहो नृत्य समारोह • पद्म विभूषित नृत्यकार ने नृत्य की बारीकियां सिखाईं

दुनिया में भरत का नाट्य शास्त्र ऐसा शास्त्र जिसमें सब कुछ है : डॉ. पद्मा

भास्कर संवाददाता | छतरपुर/खजुराहो

खजुराहो नृत्य समारोह की चौथी संध्या में कथक और ओडिसी नृत्य की तीन प्रस्तुतियां हुई। इसके अलावा

डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम

नृत्य समारोह के चौथे दिन प्रणाम प्रदर्शनी/व्याख्यान सह संवाद का आयोजन किया गया। जो महान नृत्यांगना के जीवन और कला अवदान पर केंद्रित है। देश के शास्त्रीय नृत्यों की विख्यात नृत्यकार एवं गुरु डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम जो पद्म विभूषण हैं, वह प्रणाम की चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करने पहुंची। उन्होंने कहा कि मैं संस्कृति विभाग की शुक्रगुजार हूं जिन्होंने मुझे बुलाया। हमारी कला वृहद है, भरत मुनि के नाट्यशास्त्र रामायण और महाभारत के धार्मिक आइडियाज हैं। जो हमारी शिक्षा का विषय हैं। इसके बाद उन्होंने खजुराहो में डांस आर्टिस्ट एवं अन्य कलाकारों को संबोधित करते हुए कहा कि, नाट्य हमारी परंपरा रही नाट्य नृत्य सीखने के लिए है।

ज्ञान भी सीखने का एक आधार है जो हमारे शरीर को नृत्य की तकनीक देते हैं। जिससे नृत्य बनता है। उससे शास्त्र अपने आप हमारे में आ जाता है। भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र लिखा आखिर उन्होंने इसलिए लिखा क्योंकि इसका संबंध धर्म से है। इसलिए एक मुनि ने लिखा। कला भी धर्म से जुड़ी है इनसे हमारे धर्म की जानकारी मिलती है। दुनिया में भरत का नाट्य शास्त्र ही ऐसा शास्त्र है। जिसमें सब कुछ है जिसे हम जीवन के लिए उपयोगी समझते हैं, प्राचीन भारत इसमें समाहित है। प्रकृति का संस्कृति से जब से संबंध था नाट्यशास्त्र तबके द्वारा पढ़ा जाता है। तमिलनाडु में इसी शास्त्र पर मूर्तिकला की उत्पत्ति की गई। उन्होंने कहा कि, जब मैंने डांस सीखना शुरू किया तो मेरे पिता ने 1942 में नृत्य स्कूल स्थापित किया जिसका नाम नृत्योदय है। जहां देश के अनेक राज्यों से अपने संस्थान में अलग अलग विधाओं के गुरु लेकर आए। जिन्होंने विद्यार्थियों को अन्य शास्त्रीय नृत्य सिखाए.मेरी मौं वीणा बजाती थी। इस प्रणाम चित्र प्रदर्शनी में मेरे नृत्य यात्रा के चित्र लगे। उन्होंने नृत्य का डिमांस्ट्रेशन भी दिया जहां देश के विभिन्न प्रान्तों से आए शास्त्रीय नृत्यकारों ने उनसे नृत्य के गुण सीखे। कार्यक्रम का संचालन डॉ मंजू मणि ने किया।

वहीं आयोजन के प्रथम चरण में कथक नृत्यांगना पलक पट वर्धन ने कृष्ण बाल लीलाओं में गोवर्धन पर्वत की लीला का मार्मिक ढंग से प्रस्तुतिकरण किया। दूसरे चरण में ओडिसी नृत्यकार प्रवत कुमार स्वाइन ने अपने नृत्य की शुरुआत रस विचित्र से करते हुए नव रसों का चित्रण ओडिसी नृत्य शैली में किया। जिसमें उन्होंने श्रृंगार रस के तहत शिव पार्वती और लार्ड गणेश के जन्म को प्रदर्शित करते हुए पार्वती के उस प्रसंग को चित्रित किया।

इसके बाद नृत्यकार ओडिसी नृत्य शांत रस में प्रदर्शित करते हैं। जिसकी प्रस्तुति दीपिका रेड्डी सद रिपु से करती हैं। अंतिम प्रस्तुति भी कथक के नाम रही। जिसे प्रस्तुत किया संगीत नाटक अकादमी अवार्डी अदिति मंगलदास, दिल्ली ने। उन्होंने अपनी प्रस्तुति समवेत में पंचतत्वों के संगम पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को दिखाया, जो सामंजस्य में एकजुट होकर शरीर, मन और आत्मा को जागृत करके संपूर्णता को प्राप्त कर एक आदर्श संतुलन स्थापित करते हैं। इस प्रस्तुति में कथक की भाषा और ध्वनि को बहुत ही सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया गया।

छतरपुर | आयोजन के चौथे दिन प्रवत कुमार स्वाइन अपने समूह के साथ ओडिसी नृत्य की प्रस्तुत देते हुए।

पहले नृत्योत्सव में नृत्य कर ने आई थीं डॉ. पद्मा

उन्होंने कहा खजुराहो नृत्योत्सव में आकर मुझे आज बहुत ही खुशी हो रही है, क्योंकि जिस खजुराहो नृत्योत्सव का 51 साल पहले उद्घाटन हुआ था। उसमें मैंने भरतनाट्यम नृत्य की प्रस्तुति दी थी। उस जमाने मे भी यह नृत्योत्सव पश्चिम मंदिर समूह में होता था। उन्होंने कहा यदि शास्त्रीय नृत्य को आगे बढ़ाना है और इसकी प्योरिटी को कायम रखना है। तो नाट्य शास्त्रों को पढ़ना होगा गुरु के संरक्षण में सीखना होगा। वरना आप परफेक्ट नृत्यकार नहीं बन सकते। आपको वीडियो की शिक्षा से बचना होगा और गुरु की ही शरण में जाना होगा तभी आप सफल शास्त्रीय नृत्य सीख पाएंगे। उन्होंने खजुराहो नृत्योत्सव की दुनिया में एक पहचान बनाने के लिए संस्कृति विभाग का अहम रोल बताया।

खजुराहो| कंदारिया महादेव और माता जगदंबी मंदिर के बीच प्रांगण में बने मंच पर रविवार की शाम पहली प्रस्तुति में पलक व उनके साथियों ने कथक के माध्यम से ठाकुर जी की प्रार्थना 'भक्त वत्सलम' की शानदार प्रस्तुति दी।

51वां खजुराहो नृत्य समारोह का चौथा दिन

कथक में कृष्ण रासलीला से छाया मधुमास, ओडिसी में भगवान शिव की महिमा हुआ वर्णन

खजुराहो नृत्य महोत्सव के चौथे दिन कथक की दो और ओडिसी नृत्य की हुईं एक प्रस्तुति ने दर्शकों को वाह-वाह करने को किया मजबूर

प्रवत कुमार और साथियों ने ओडिसी नृत्य प्रस्तुत किया।

भास्कर न्यूज | छतरपुर

खजुराहो नृत्य समारोह में इस बार देश के ख्यात प्राप्त कलाकार प्रस्तुतियां दे रहे हैं। रविवार को आयोजन की चौथी शाम पहली प्रस्तुति कथक की हुई। इसमें मप्र की ख्यात प्राप्त कलाकार पलक पटवर्धन ने शानदार प्रस्तुति दी। कंदारिया महादेव और जगदंबी माता मंदिर के बीच प्रांगण में चल रहे खजुराहो नृत्य महोत्सव में दूसरी प्रस्तुति ओडिसी नृत्य की हुई। तीसरी और अंतिम प्रस्तुति कथक की रही।

पहली प्रस्तुति मध्य प्रदेश की पलक पटवर्धन द्वारा कथक नृत्य की रही। जयपुर घराने की परम्परा का अनुगमन करने वाली पलक पटवर्धन ने सर्वप्रथम ठाकुर जी से प्रार्थना 'भक्त वत्सलम' की प्रस्तुति दी। इसके बाद आकर्षक ढंग से भगवान श्री कृष्ण की गोवर्धन लीला का वर्णन नृत्य से किया। बांसुरी रंगों की वेशभूषा में जब उन्होंने प्रेम भाव के साथ कृष्ण रासलीला का दर्शन कराया तो सुधिजनों ने वृंदावन-सा अनुभव प्राप्त किया। वसंत ऋतु का आगमन हो चुका है और प्रकृति सौंदर्य को प्राप्त हो चुकी है। इस

रविवार को आखिरी प्रस्तुति कथक की हुई। इसमें अदिति मंगलदास ने समवेत प्रस्तुत किया।

मधुमास का प्रिय उत्सव होली को पलक एवं उनके साथियों ने होली प्रस्तुति के माध्यम से दिखाया। जिसमें श्री कृष्ण राधा और गोपियां साथ में होली खेल रहे हैं। अंत में उन्होंने आश्रय का पद प्रस्तुत कर विराम दिया। उनके साथ आयुषी त्रिवेदी, काव्या शर्मा, झलक चावड़ा, तन्वी गोलेचा, जान्हवी क्षीरसागर ने मंच साझा किया। संगीत एवं पद रचना मुखिया अभिषेक व्यास, उद्घोषणा एवं पढ़ंत पं. माधव तिवारी, सितार वादन डॉ. विनीता माहुरकर, गायन एवं हारमोनियम कुलदीप दुबे, तबला वादन विनायक शर्मा, पखावज वादन ऐश्वर्य आर्य ने किया।

दूसरी प्रस्तुति सुप्रसिद्ध ओडिसी नृत्य कलाकार प्रवत कुमार स्वाइन की ओडिसी नृत्य की रही। उन्होंने सबसे पहले राग मालिका और ताल मालिका में निबद्ध 'रास विचित्र' प्रस्तुत की। इसमें नौ रसों को विस्तार से और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया। इन नौ रसों को व्यक्त करने के लिए शिव जी द्वारा गणेश जी का शीश काटे जाने वाली कथा को दिखाया। इसके बाद उन्होंने 'सदा रिपु' को प्रस्तुत किया। इसमें उन्होंने दिखाया कि मानव जीवन के छह आंतरिक शत्रु हैं 'काम', 'क्रोध', 'मद', 'मोह' और 'मश्चर्यम्'। चूंकि मन ही मनुष्य में बंधन और मुक्ति का कारण है, इसलिए यह समझना और महसूस करना आवश्यक है कि जब हम अपने आस-पास की वस्तुओं से अत्यधिक आसक्त हो जाते हैं, तो यह बंधन का कारण बनता है और यदि हम किसी भी तरह के जुनून से खुद को अलग करके खुद को नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं, तो यह मुक्ति की ओर ले जाता है। यह मुक्ति तब मिलती है, जब कोई छह 'दोषों' (आंतरिक शत्रुओं) या सदा रिपु पर विजय प्राप्त करने और उन्हें नियंत्रित करने में सक्षम होता है।

अंतिम प्रस्तुति भी कथक के नाम रही। जिसे प्रस्तुत किया संगीत नाटक अकादमी अवॉर्डी अदिति मंगलदास, दिल्ली ने। उन्होंने अपनी प्रस्तुति 'समवेत' में पंचतत्वों के संगम पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश को दिखाया, जो सामंजस्य में एकजुट होकर शरीर, मन और आत्मा को जागृत करके संपूर्णता को प्राप्त कर एक आदर्श संतुलन स्थापित करते हैं। इस प्रस्तुति में कथक की भाषा और ध्वनि को बहुत ही सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया गया।

बाल नृत्य समारोह में हुईं ओडिसी व कथक की प्रस्तुतियां

खजुराहो में नृत्य को सहेजने हो रहे कई आयोजन : प्रणाम में पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम ने नृत्य के विद्यार्थियों और नृत्य प्रेमियों से किया संवाद

सिटी भास्कर | खजुराहो

नृत्य में जीवन का आनन्द है उमंग है उल्लास है। नृत्य हमारी संस्कृति को आनंददायी अभिव्यक्ति देते हैं और खजुराहो नृत्य समारोह भारतीय संस्कृति का अनूठा उदाहरण है। एक हजार वर्ष प्राचीन मंदिरों की अलौकिक आभा में देश के सुप्रसिद्ध साधनारत कलाकार और शाम के धुंधलके में अपनी आंखों के सामने स्वप्न, कल्पना और विचार को साकार होता देखने के लिए आतुर कला रसिक। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग एवं जिला प्रशासन छतरपुर के सहयोग से आयोजित 51वां खजुराहो नृत्य समारोह के चौथे दिवस की शाम में बाल नृत्य महोत्सव में कथक और ओडिसी नृत्यों की प्रस्तुति ने सुधिजनों को नृत्य के जादुई संसार की यात्रा कराई।

अभिनय का सौंदर्य और शुद्ध कथक का प्रदर्शन

खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का चौथा दिन ओडिसी और कथक नृत्य प्रस्तुतियों के नाम रहा। अपने गुरु की तालीम और साधना को बाल नृत्य कलाकार मंच पर जिस तरह साकार कर रहे हैं, उन्हें देख यह प्रतीत हो रहा है कि भारतीय संस्कृति की इस स्वर्णिम यात्रा में कई अनेक आभूषण भविष्य में जड़े जाएंगे। चौथी शाम की पहली प्रस्तुति ओडिसी की थी, जिसे प्रस्तुत स्नेहा मिश्रा ने प्रस्तुत किया। स्नेहा ने अपने नृत्य की शुरुआत नवदुर्गा से की। अभिनय अंग के सौंदर्य को उन्होंने अपने नृत्य में बखूबी दिखाया। इसके बाद नोजा यमुना प्रस्तुत कर प्रस्तुति को विराम दिया। इसके बाद अगली प्रस्तुति कथक की थी। सुप्रसिद्ध नृत्यांगना सुचित्रा हरमलकर की शिष्या रिधि गाजरे ने अपनी गुरु परम्परा को नृत्य के माध्यम से दर्शाया।

भीतर का आंदोलन आनंद का स्वरूप लिए बाहर आता है : प्रो. मीनाक्षी जोशी

कलाविदों और कलाकारों के मध्य संवाद का लोकप्रिय सत्र कलावार्ता का तीसरा दिन भारतीय नृत्य कला दर्शन में निहित दर्शन के नाम रहा। इस विषय पर प्रयागराज से पधारीं प्रो. मीनाक्षी जोशी ने व्याख्यान दिया। उन्होंने अपनी बात के प्रारम्भ में कहा कि हर नृत्य शैली में लय होती है। लय को अनुभव करते हुए ही नृत्य किया जाता है। जब एक ही लय पर बहुत समय तक नर्तक नृत्य करता और दर्शक देखता रहता है, तब दोनों के भीतर आंदोलन होता है और यही आंदोलन आनंद के स्वरूप में बाहर आता है। आगे उन्होंने बताया कि जब हमें ऊपर की ओर जाना होता है तो सीधा घूमते हैं और नीचे की ओर जाना होता है तो उल्टा घूमते हैं। नृत्य में भी सीधा घूमा जाता है। यह स्पंदन ऊर्ध्व की ओर ले जाता है। तब दर्शक और कलाकार एकाकार को प्राप्त करते हैं। उनके व्याख्यान के बाद विद्यार्थियों और कलाप्रेमियों ने उनसे कुछ प्रश्न भी किए। इनके उत्तर देते हुए मीनाक्षी जोशी ने कहा कि नृत्य और कला में नैसर्गिक प्रतिभ सर्वश्रेष्ठ देती हैं।

भारतीय संस्कृति का होना ही श्रेष्ठ है : डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम

51वें खजुराहो नृत्य समारोह का चौथा दिन बहुत खास रहा। पहली बार आयोजित की जा रही प्रणाम प्रदर्शनी/व्याख्यान सह संवाद जिस महान नृत्यांगना के जीवन और कला अवदान पर केंद्रित है, वे नृत्य के विद्यार्थियों से रूबरू हो रही थीं। वरिष्ठ नृत्यांगना एवं पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम नृत्य संसार का एक ऐसा नाम है, जिन्हें किसी पहचान की आवश्यकता नहीं है। प्रणाम का पहला व्याख्यान सह संवाद रविवार को आयोजित किया गया।

डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम ने संवाद करते हुए कहा कि संस्कृति विभाग की आभारी हूं कि मेरे जीवन और कला अवदान पर केंद्रित गतिविधि का आयोजन खजुराहो नृत्य समारोह जैसे श्रेष्ठ समारोह में किया। यह न सिर्फ किसी व्यक्ति बल्कि कला, परम्परा और कलाकार का सम्मान है। उन्होंने कहा कि आज के जमाने में हमारी उम्र के लोग जब पाश्चात्य संस्कृति की ओर देखते हैं, तो भारतीय संस्कृति का होना ही सबसे श्रेष्ठ मालूम होता है। हमारी नाट्य कला इतनी विस्तृत और समृद्ध है कि हम उन्हें भी दे सकते हैं। हमें उनसे कुछ लेने की आवश्यकता नहीं है। हमारे नाट्य का आधार हमारी परंपराएं हैं। ये केवल मनोरंजन के लिए नहीं है, बल्कि ईश्वर से जुड़ने का माध्यम हैं। नाट्य के लिए ज्ञान और प्रज्ञता जरूरी है। प्रज्ञता कौशल प्रदान करता है, लेकिन अभ्यास जरूरी है। भरतमुनि ने नाट्य शास्त्र रचा। यही कितनी अद्भुत बात है कि किसी मुनि ने नाट्य शास्त्र रचा। क्योंकि नाट्य का सम्बन्ध धर्म से है और धर्म को जाने बगैर नाट्य नहीं लिखा जा सकता। कला भी धर्म के लिए ही है। इसके बाद जयश्री राजगोपालन और अनुराधा विक्रांत ने डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की नृत्य संरचनाओं के विविध पक्षों पर व्याख्यान दिया।

51वां खजुराहो नृत्य समारोह : कला, संस्कृति की साकार हुई अद्भुत यात्रा

महादेव व जगदंबा के आंगन में जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश का दिखा संगम

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

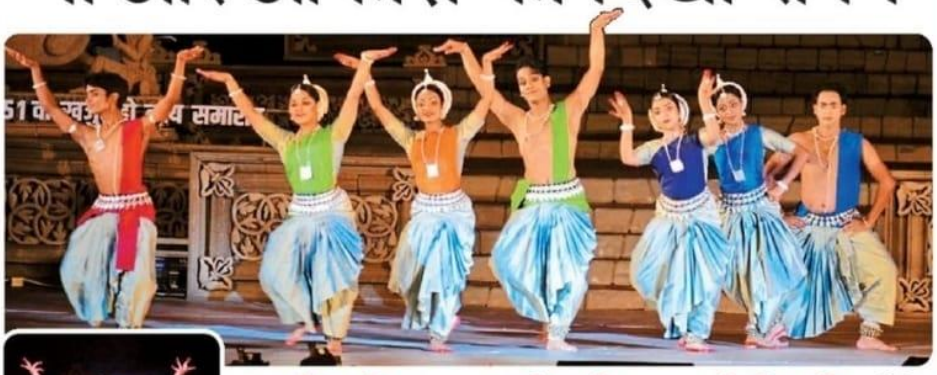

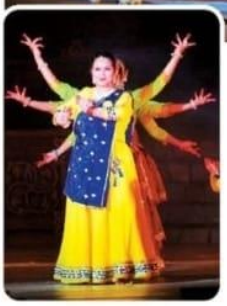

छतरपुर. भारतीय संस्कृति और नृत्य के अद्भुत संगम का गवाह बना 51वां खजुराहो नृत्य महोत्सव। इस समारोह के चौथे दिन की संध्या ने दर्शकों को भारतीय नृत्य कला की गहराई में ले जाकर उन्हें सांस्कृतिक समृद्धि का अहसास कराया। खजुराहो के प्राचीन मंदिरों की अलौकिक आभा में नृत्य प्रेमियों ने स्वप्न, कल्पना और विचारों को जीवित होते देखा। इस आयोजन में कथक और ओडिसी नृत्य के कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया और भारतीय नृत्य कला के दर्शन को विस्तार से प्रस्तुत किया।

इस दौरान एक और खास आकर्षण था कलावार्ता सत्र, जिसमें भारतीय नृत्य कला दर्शन के विषय पर व्याख्यान दिया गया। प्रयागराज से पधारीं प्रो. मीनाक्षी जोशी ने इस सत्र का आयोजन किया। उन्होंने नृत्य में लय और तंत्र के महत्व पर चर्चा करते हुए बताया कि नृत्य में एक ही लय पर लगातार नर्तक का नृत्य करते हुए और दर्शक उसे अनुभव करते हुए एक आंतरिक आंदोलन उत्पन्न होता है, जो आनंद के रूप में बाहर आता है। यह आंदोलन दर्शक और कलाकार दोनों को एकाकार करने की प्रक्रिया है, जो नृत्य के धार्मिक और मानसिक पहलुओं को समझने में मदद करता है। उनके व्याख्यान के बाद, विद्यार्थियों और कला प्रेमियों ने उनसे कई प्रश्न किए, जो इस सत्र को और भी रोचक बना गए।

महोत्सव का चौथा दिन एक विशेष कारण से याद रखा जाएगा प्रणाम सत्र। इस सत्र में नृत्य की महान हस्ती, पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम ने नृत्य के विद्यार्थियों और नृत्य प्रेमियों से संवाद किया। डॉ. सुब्रह्मण्यम ने कहा कि भारतीय नृत्य कला के अद्वितीय तत्वों को समझने के लिए हमें अपनी परंपराओं को गहरे से जानना जरूरी है। उन्होंने बताया कि नृत्य का मुख्य उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि ईश्वर से जुड़ना है और यह कार्य ज्ञान और प्रज्ञा से ही संभव होता है।

पहली प्रस्तुति : पलक पटवर्धन का कथक

खजुराहो नृत्य महोत्सव के चौथे दिन पहली प्रस्तुति पलक पटवर्धन द्वारा कथक नृत्य रही। पलक ने शुरुआत ठाकुर जी से प्रार्थना 'भक्त वत्सलम' से की। इसके बाद कृष्ण की गोवर्धन लीला का नृत्य के रूप में चित्रण किया, जिसमें कृष्ण रास लीला का जीवंत प्रदर्शन किया। बासंती रंगों में रंगी पलक और उनके सहयोगी कलाकारों ने प्रेमभाव के साथ कृष्ण और राधा की होली रास लीला की प्रस्तुति दी, जो दर्शकों को वृन्दावन के माहौल में खो जाने का अहसास करवा गई।

दूसरी प्रस्तुति : प्रवत कुमार का ओडिसी

दूसरी प्रस्तुति ओडिसी नृत्य के प्रसिद्ध कलाकार प्रवत कुमार स्वाइन ने दी। उन्होंने राग मालिका और ताल मालिका में निबद्ध 'रास विचित्र' की प्रस्तुति दी, जिसमें उन्होंने नौ रसों को विस्तार से और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुति में शिव जी द्वारा गणेश जी का शीश काटने की कथा को नृत्य के माध्यम से जीवित किया। इसके बाद, 'सदा रिपु' की प्रस्तुति में प्रवत ने मानव जीवन के आंतरिक शत्रुओं - काम, क्रोध, मद, मोह, लव और मश्चर्यम का चित्रण किया।

तीसरी प्रस्तुति : अदिति मंगलदास का कथक

खजुराहो नृत्य महोत्सव के चौथे दिन की तीसरी प्रस्तुति सुप्रसिद्ध कथक नृत्यांगना अदिति मंगलदास ने की। अदिति ने अपनी प्रस्तुति "समवेत" में पंचतत्वों - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, और आकाश के संगम को दिखाया, जो शरीर, मन और आत्मा को जागृत करके संतुलन और समग्रता की ओर ले जाते हैं। उनकी प्रस्तुति में कथक के शास्त्रीय रूपों के साथ नृत्य की सूक्ष्मता और ध्वनियों का संगम था, जो दर्शकों के लिए एक गहन अनुभव था।

युवा कलाकारों की शानदार प्रस्तुतियां

चौथे दिन की शाम का समापन खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव के साथ हुआ, जिसमें युवा कलाकारों ने अपने गुरु की तालीम और साधना को मंच पर साकार किया। ओडिसी और कथक के बाल कलाकारों ने अपनी नृत्य प्रस्तुतियों से यह साबित किया कि भारतीय नृत्य की यह स्वर्णिम धारा भविष्य में और भी समृद्ध होगी। ओडिसी कलाकार स्नेहा मिश्रा ने नवदुर्गा से अपनी प्रस्तुति की शुरुआत की और फिर नोजा यमुना की अद्भुत प्रस्तुति दी। इसके बाद, कथक कलाकार विधि गाजरे ने शुद्ध कथक की प्रस्तुति दी, जिसमें आमद, थाट, परने और रायगढ़ घराने की रचनाओं का सुंदर समागम था।

हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Bhopal Main - 24 Feb 2025 - Page 16

प्रणाम में पधारीं पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम, नृत्य के विद्यार्थियों और नृत्य प्रेमियों से किया संवाद

खजुराहो के मंदिरों की अलौकिक आभा में साक्षात हुए नृत्य प्रेमियों के स्वप्न और विचार के दर्शन

51वां खजुराहो नृत्य समारोह के चौथे दिवस का आयोजन

▶▶खजुराहो से मधुरिमा राजपाल

नृत्य में जीवन का आनन्द है, उमंग है, उल्लास है। नृत्य हमारी संस्कृति को आनंददायी अभिव्यक्ति देते है और खजुराहो नृत्य समारोह भारतीय संस्कृति का अनूठा उदाहरण है। एक हजार वर्ष प्राचीन मंदिरों की अलौकिक आभा में देश के सुप्रसिद्ध साधनारत कलाकार और शाम के धुंधलके में अपनी आंखों के सामने स्वप्न, कल्पना और विचार को साक्षात होता देखने के लिए आतुर कला रसिक। 51वां खजुराहो नृत्य समारोह के चौथे दिवस की शाम में कथक और ओडिसी नृत्यों की प्रस्तुति ने सुधिजनों को नृत्य के जादुई संसार की यात्रा कराई।

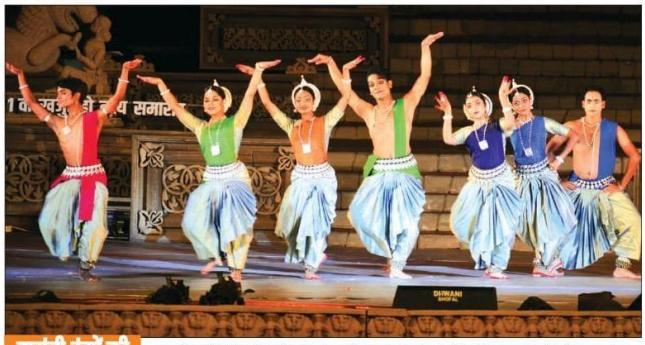

बासंती रंगों की वेशभूषा में कृष्ण रास लीला

पहली प्रस्तुति मध्यप्रदेश की पलक पटवर्धन द्वारा कथक नृत्य की रही। जयपुर घराने की परम्परा का अनुगमन करने वाली पलक पटवर्धन ने सर्वप्रथम ठाकुर जी से प्रार्थना भक्त वत्सलम की प्रस्तुति दी। इसके बाद आकर्षक ढंग से भगवान श्री कृष्ण की गोवर्धन लीला का वर्णन नृत्य से किया। बासंती रंगों की वेशभूषा में जब उन्होंने प्रेम भाव के साथ कृष्ण रास लीला का दर्शन कराया तो सुधिजनों ने वृन्दावन सा अनुभव प्राप्त किया।

काम, क्रोध, लव, मद, मोह, मश्चर्यम पर प्रस्तुति

दूसरी प्रस्तुति सुप्रसिद्ध ओडिसी नृत्य कलाकार प्रवत कुमार स्वाइन की ओडिसी नृत्य की रही। उन्होंने सबसे पहले राग मालिका और ताल मालिका में निबद्ध रास विविध प्रस्तुत की। इसमें नौ रसों को विस्तार से और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया। इन नौ रसों को व्यक्त करने के लिए शिव जी द्वारा गणेश जी का शीश काटे जाने वाली कथा को दिखाया। इसके बाद उन्होंने सदा रिपु में दिखाया कि मानव जीवन के छह आंतरिक शत्रु हैं काम, क्रोध, लव, मद, मोह और मश्चर्यम।

भारतीय संस्कृति का होना ही श्रेष्ठ है- पद्मविभूषण डॉ.पद्मा सुब्रह्मण्यम

51वें खजुराहो नृत्य समारोह में पहली बार आयोजित की जा रही प्रणाम प्रदर्शनी में डॉ पद्मा सुब्रह्मण्यम ने संवाद करते हुए कहा कि आज के जमाने में हमारी उम्र के लोग जब पाश्चात्य संस्कृति की ओर देखते हैं तो भारतीय संस्कृति का होना ही सबसे श्रेष्ठ मालूम होता है। हमारी नाट्य कला इतनी विस्तृत और समृद्ध है कि हम उन्हें भी दे सकते हैं, हमें उनसे कुछ लेने की आवश्यकता नहीं है।

दिनांक 25 फरवरी, 2025

THE TIMES OF INDIA, BHOPAL
TUESDAY, FEBRUARY 25, 2025

Day 5: An ode to Odissi, Kathak & Mohiniyattam

Vinita.Chaturvedi
@timesofindia.com

Bhopal: There are certain things that get even better with age and time; this is being proved beyond doubt at the ongoing Khajuraho Festival organised in the et-

KHAJURAHO FEST TO END TOMORROW

hereal backdrop of Kandariya Mahadev and Jagdamba temples in UNESCO Heritage Site, Khajuraho, in Chhatarpur. On day-five of the six-day event, organised by department of culture and tourism, MP and Ustad Allauddin Khan Sangeet Evam Kala Academy, the audience witnessed intense energy of some of the most revered classical Indian dance forms.

The highlights of Monday's performances at the 51st edition of Khajuraho festival were some superlative Kathak, Odissi and Mohiniyattam performances, dedicated to the stunning season of spring- the king of all seasons. Padma-awardee dance exponent Bharati Shivaji's Mohiniyattam dance recital was truly compelling; the audience watched spellbound as the celebrated dance exponent commenced her performance with a prayer to Bal Ganpati. Set in raag Nilambari to Aadi taal, it ignited pious vibes on the venue and soothed the senses of the onlookers.

Audience witnessed intense energy of some of the most revered classical Indian dance forms on Day 5 of the event

After that it was Shovana Narayan's turn to steal the hearts with a superlative Kathak performance focussed on life, death and endless life energy source-Shiva-Shakti. Ratikant Mohapatra's Odissi performance was a befitting end to day-five of the star-studded event.

दैनिक भास्कर
छतरपुर भास्कर 25-02-2025

खजुराहो नृत्य समारोह • बाल नृत्य महोत्सव मंच में चयनित 40 नृत्यकार हुनर दिखा रहे, नाद प्रदर्शनी बनी आकर्षण का केंद्र

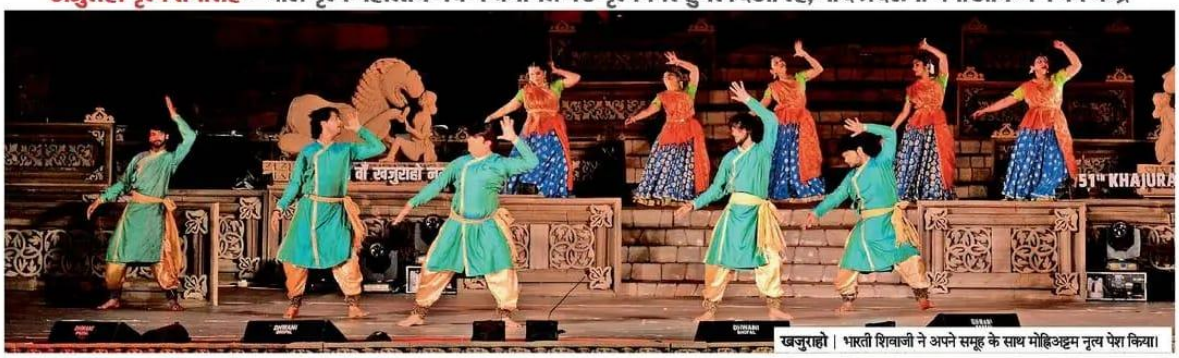

खजुराहो | भारती शिवाजी ने अपने समूह के साथ मोहिअष्टम नृत्य पेश किया।

कथक से समय, सृजन, प्रेम और मृत्यु का महत्व बताया

भास्कर संवाददाता | खजुराहो

नृत्य समारोह के पांचवी संध्या पर मोहिनीअट्टम, कथक और ओडिसी नृत्य की प्रस्तुतियां हुई। पहली नृत्य प्रस्तुति पद्मश्री विदुषी भारती शिवाजी, दिल्ली की मोहिनीअट्टम की रही। उन्होंने सर्वप्रथम बाल गणपति से अपनी प्रस्तुति की शुरुआत की। अगले क्रम में नाट्य मुक्काचलम की प्रस्तुति दी गई। इस प्रस्तुति का मंच पर प्रदर्शन करने वाले कलाकार गुरु भारती शिवाजी, दीप्ति नायर, मेघा नायर, रुक्मणी मृणालिनी सेन और आदित्य आर रहे।

इसके बाद कथक की नृत्यांगना पद्मश्री शोभना नारायण ने अपना नृत्य जीवन का पहिया नाम की प्रस्तुति से शुरू किया। जिसमें उन्होंने समय, सृजन, प्रेम और मृत्यु के महत्व पर नृत्य चित्रण किया। अंतिम प्रस्तुति रतिकांत मोहापात्रा की ओडिसी नृत्य की रही।

खजुराहो नृत्य समारोह में पहली बार बाल नृत्य महोत्सव मंच का आयोजन किया गया है। महोत्सव के पांचवें दिन की पहली प्रस्तुति भरतनाट्यम की रही। जिसमें इंदौर की अवनी जादौन ने सर्वप्रथम मल्लारी की प्रस्तुति दी। साथ ही नटेश कौथवम की प्रस्तुति दी। प्रसिद्ध संगीतकार मदुरै एम मुरलीधरन द्वारा रचित विनायगर की प्रस्तुति दी, जो एक प्रसिद्ध रचना है। अंतिम प्रस्तुति राग रेवती और आदि ताल में रचित एक कीर्तनम और तिल्लाना का मिश्रण की थी। जबलपुर की राघवी नायडू की कथक प्रस्तुति का आस्वादन दर्शकों ने किया।

अंत में उन्होंने कृष्ण भजन से नृत्य का सौंदर्य दिखाया और वृंदावन के कुंज भवन में नाचे गिरिराज भजन पर प्रस्तुति हुई।

कलाप्रेमियों में लोकप्रिय हो रही नाद प्रदर्शनी

खजुराहो नृत्य समारोह में पहली बार एक अनूठी प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है, जिसका नाम नाद है। जो नाम से ही स्पष्ट है ध्वनि या साउंड। यह ध्वनि उत्पन्न होती है वाद्यों या साजों से। जिसका संगीत में महत्वपूर्ण स्थान है। लोक, जनजातीय और शास्त्रीय संगीत में प्रयोग होने वाले वाद्यों को नाद प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया है। यह प्रदर्शनी कलाप्रेमियों के मध्य लोकप्रिय हो रही है।

नृत्य मेरा पैशन है और मैं आगे खजुराहो नृत्योत्सव के मंच पर परफॉर्म करूंगी : बाल नृत्यांगना स्नेहा

ओडिसी नृत्य की बाल नृत्यांगना स्नेह मिश्रा इंदौर ने बताया कि, वैसे तो मैं भविष्य मै एक मेडिकल डॉक्टर बनना चाहती हूं। क्योंकि मेरे माता-पिता भी डॉक्टर है पर नृत्य करना मेरा पैशन है। मेरे अंदर जुनून है कि, एक सफल नृत्यांगना के रूप मैं अपने आपको स्थापित कर पाऊं। मुझे बहुत ही गर्व हो रहा है खजुराहो बाल नृत्योत्सव में मुझे अपने ओडिसी नृत्य को परफॉर्मेंस देने का अवसर मिला। खजुराहो नृत्योत्सव के इतिहास में पहली बार बाल नृत्योत्सव का आयोजन संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश द्वारा किया गया। जिसमें 10 से 16 वर्ष की आयु वाले शास्त्रीय नृत्यकारों को परफॉर्म करने का अवसर मिला है। उन्होंने बताया कि, पूरे प्रदेश में 300 बाल नृत्यकारों ने यहां नृत्य करने के आवेदन दिए थे। जिनमें से 40 बाल नृत्यकारों का चयन हुआ। जिसमे मुझे बतौर ओडिसी नृत्य परफॉर्म करने का अवसर मिला। अब मैं आगे आने वाले दिनो में खजुराहो नृत्योत्सव में भी अपना नृत्य प्रदर्शन करने आऊंगी।

51वां खजुराहो नृत्य समारोह का पांचवां दिन

बाल नृत्य महोत्सव, कलावार्ता, प्रणाम, चित्र कथन, नाद, शिल्प मेला जैसी गतिविधियों से बना आकर्षण

खजुराहो नृत्य समारोह में लोगों को नृत्य की बारीकियां बताने के लिए कलावार्ता का आयोजन हो रहा है।

सिटी भास्कर | छतरपुर

मप्र शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी आयोजित 51वें खजुराहो नृत्य समारोह में बाल नृत्य महोत्सव, कलावार्ता, प्रणाम, चित्र कथन, नाद और शिल्प मेला भी खास आकर्षण का केंद्र है। आयोजन के पांचवें दिन बाल नृत्य महोत्सव में भरतनाट्यम की प्रस्तुति हुई। कलावार्ता में नृत्य का मंदिरों से संबंध में चर्चा हुई।

मंदिर लयात्मक ही नहीं, आध्यात्मिक अनुभूति : रजनी राव

कलाविदों और कलाकारों के मध्य संवाद का लोकप्रिय संवाद सत्र का चौथा दिन नृत्य का मंदिरों से संबंध विषय के नाम रहा। कथक केंद्र दिल्ली से संबद्ध व नृत्य गुरु पुरु कथीच की शिष्या रजनी राव ने व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि मंदिर लयात्मक ही नहीं, एक आध्यात्मिक अनुभूति भी हैं। इसका धर्म से संबंध नहीं, हमारे भीतरी मन से है। यही वजह है कि खजुराहो मंदिरों में नृत्य करने के बाद मन आध्यात्मिक आनंद से भर जाता है। रजनी राव ने कहा कि हमें तो सभागारों और मंचों पर परफॉर्म करने की आदत है। खजुराहो के मंदिरों को नृत्य समारोह के लिए चुनने वाले पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। रजनी ने कहा कि शब्द भले ही नश्वर हों पर ध्वनियां अनश्वर हैं। इसलिए यहां बोले गए शब्दों की अनुगूंज सदा रहेगी। बाद में उन्होंने कथक नृत्य का लघु प्रदर्शन भी किया, साथ ही कला रसिकों से संवाद भी किया।

कलाओं में भी है नाट्य शास्त्र : अरविंद कुमार सामी

पद्मविभूषण एवं वरिष्ठ नृत्यांगना डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के जीवन और कला अवदान पर केंद्रित प्रणाम गतिविधि में व्याख्यान शृंखला के दूसरे दिवस तीन सत्र हुए। प्रथम सत्र में गायत्री कन्नन ने डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की प्रस्तुतियों के संगीत पर बात की। उन्होंने बताया कि पद्मा अम्मनी प्रस्तुतियों का संगीत खुद रचती थीं। उन्होंने मुद्राओं के आधार पर रचित संगीत को भी विस्तार से बताया। साथ ही पद्मा के कुछ प्रोडक्शन के संगीत पर भी बात की। इसके बाद महती कन्नन ने करण उत्तीवनम पुनर्निर्माण एवं पुनरीक्षण विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि पद्मा ने वेद, शास्त्र एवं मूर्तियों से लिए करनास में अंतर्संबंध स्थापित किया। इन अंतर्संबंध से अपने करनास की निर्माण किया। अंत में सिंगापुर से पधारे अरविंद कुमार सामी ने डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम का पैन एशियाई परिप्रेक्ष्य पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि पैन एशियाई देशों के लोग ये जानते थे कि उनकी कलाओं में नाट्य शास्त्र कहां पर है। पद्मा ने उन्हें बताया कि वे जो कर रहे हैं, उसमें भी नाट्य शास्त्र है, क्योंकि उन देशों में कोई नाट्य शास्त्र नहीं है।

बाल नृत्य : अवनी जादौन ने दी भरतनाट्यम की प्रस्तुति

नई पीढ़ी को नृत्य के प्रति प्रेरित करने और युवाओं को भारतीय संस्कृति एवं कलाओं से जोड़ने के उद्देश्य के साथ खजुराहो नृत्य समारोह में पहली बार आयोजित किए जा रहे खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का मंच भी अब लोकप्रिय होता जा रहा है। इस महोत्सव के पांचवें दिन बड़ी संख्या में नृत्य प्रेमी बाल नृत्य कलाकारों का उत्साहवर्धन करने पहुंचे। पहली प्रस्तुति भरतनाट्यम की रही। इंदौर की अवनी जादौन ने सर्वप्रथम मल्लारी की प्रस्तुति दी। मल्लारी एक पारंपरिक नृत्य है, जो मंदिर उत्सव में देवता कि शोभायात्रा को दर्शाता है। उसके साथ ही नटेश कौथवम की प्रस्तुति दी। यह राग गंभीर नाइई और आदि ताल में निबद्ध था। इसके बाद प्रसिद्ध संगीतकार मदुरै एम मुरलीधरन द्वारा रचित विनायगर की प्रस्तुति दी, जो एक प्रसिद्ध रचना है। यह भगवान गणेश को समर्पित थी। यह हंसध्वनी राग और आदि ताल में निबद्ध थी। अंतिम प्रस्तुति राग रेवती और आदि ताल में रचित एक कीर्तनम और तिल्लाना का मिश्रण की थी। यह देवी दुर्गा को समर्पित था और उनके विभिन्न स्वरूपों के बारे में बताता है। तिल्लाना के बोलो को कीर्तनम के साथ बहुत ही सुंदर तरीके से पिरोया गया। इसके बाद जबलपुर की राघवी नायडू की कथक प्रस्तुति का आस्वादन दर्शकों ने किया। उन्होंने सर्वप्रथम सरस्वती वंदना, फिर तीन ताल में शुद्ध नृत्य किया, जिसमें आमद, उठान, तोड़े, टुकड़े, थाटए परने, तिहाइयां इत्यादि शामिल थीं। अंत में वृंदावन के कुंज भवन में नाचे गिरिराज भजन पर प्रस्तुति दी।

बुंदेलखंड की बुलंद आवाज़
छतरपुर भास्कर
bhaskarhindi.com
छतरपुर, मंगलवार, 25 फरवरी 2025 | 11

ओडिसी में शिव तांडव स्तोत्र की प्रस्तुति पर मुग्ध हुए दर्शक

51वां खजुराहो नृत्य समारोह का 5वां दिन : पद्मश्री भारती शिवाजी, शोवना नारायण और रतिकांत मोहापात्रा की बेहतरीन प्रस्तुतियां हुईं

भास्कर न्यूज़ | खजुराहो

पर्यटन नगरी में ऋतुओं के राजा बसंत की दस्तक के साथ नृत्य का उल्लास चरम पर है। खजुराहो नृत्य समारोह में जिज्ञासा, प्रयोग और नवाचारों से सजी प्रस्तुतियों ने दूर-दराज से आए नृत्यप्रेमियों के अंतर्मन को गुदगुदा दिया है। समारोह के 5वें दिन की शाम मोहिनीअट्टम, कथक व ओडिसी के नाम रही। यहां सोमवार की शाम पहली नृत्य प्रस्तुति पद्मश्री विदुषी भारती शिवाजी दिल्ली की मोहिनीअट्टम की रही। उन्होंने सर्वप्रथम बाल गणपति से अपनी प्रस्तुति की शुरुआत की। नृत्य बाल गणपति का वर्णन करता है, जब वह हाथी के सिर वाले भगवान के रूप में पैदा हुआ था। जब शिव और पार्वती ने नर और मादा हाथी का रूप धारण किया। बाल गणपति के आह्वान के बाद देवी भगवती का आह्वान किया जाता है। अगले क्रम में नाट्य मुक्काचलम की प्रस्तुति दी गई। मुक्काचलम मोहिनीअट्टम की तकनीक पर प्रकाश डालता है, जहां कुछ विशिष्ट आंदोलनों को जटिल पैटर्न बनाने के लिए एक साथ बुना जाता है। इसमें केरल के कुछ देशी राग और ताल भी शामिल थे। यह रागमालिका में तालमालिका में निबद्ध थी। इसके बाद ओमानथिंकल किदावो की प्रस्तुति हुई। यह रागम नव रसम में थी, जो एक मां के अपने बच्चे के प्रति प्रेम का वर्णन करता है। वह अपने बच्चे की सुंदरता की तुलना चंद्रमा और प्रकृति की अन्य रचनाओं से करती है। वह भगवान नारायण पद्मनाभ से प्रार्थना करती है कि वह उसके बच्चे को एक शक्तिशाली राजा बनने के उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दें, जो वह अंततः बन गया। अगली प्रस्तुति केरल की अष्टपदी की रही। यह प्रस्तुति भगवान कृष्ण की दिव्य सुंदरता और गोपियों के साथ उनके प्रेम-प्रसंग का वर्णन करती है।

रतिकांत ने शबरी पर प्रस्तुत किया मार्मिक अभिनय

अंतिम प्रस्तुति रतिकांत मोहापात्रा, ओडिसा की ओडिसी नृत्य की रही। उन्होंने नव-शास्त्रीय नवाचारों का एक गुलदस्ता प्रस्तुत किया, जिसमें कलाकारों द्वारा 'शिव तांडव स्तोत्रम्' और 'जीवन मधु संगीत माया' की प्रस्तुति दी गई। इसके बाद गुरु रतिकांत महापात्र द्वारा रामचरित मानस से 'शबरी' पर एक गहन मार्मिक अभिनय प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुति का समापन भगवान सूर्य की प्रार्थना 'वंदे सूर्यम' की जीवंत प्रस्तुति के साथ हुआ। मंच पर गुरु रतिकांत महापात्र के साथ राजश्री प्रहराज, ऐश्वर्या सिंगदेव, प्रीतिशा महापात्र, माधबी राउत, दैना घोष, जी संजय, राजकुमार कर, पल्लीश्री प्रियदर्शिनी और सुभाश्री सेनापति शामिल रहीं।

कथक में दर्शाया समय, सृजन, प्रेम एवं मृत्यु का चक्र

दूसरी प्रस्तुति दिल्ली की पद्मश्री शोवना नारायण की कथक की रही। शोवना ने इसमें समय, सृजन, प्रेम और मृत्यु यानी चार शाश्वत चक्रों की महिमा को अभिव्यक्त किया। चित्रगुप्त, कंदरिया महादेव और जगदंबा मंदिरों की दिव्य आभा में इस नृत्य प्रस्तुति ने जीवन के सार को उद्घाटित किया। चित्रगुप्त मंदिर, जो सूर्य देव को समर्पित है, वहां कलाकारों ने उस ऊर्जा स्रोत को नमन किया, जो पृथ्वी पर जीवन का आधार है। कंदरिया महादेव मंदिर, जो भगवान शिव को समर्पित है, उनकी अनंत चेतना और ओमकारेश्वर स्वरूप का प्रतीक है। शिव, जो समय के स्वामी हैं, संहार और सृजन, दोनों के कारक हैं। वहीं, जगदंबा मंदिर, शक्ति स्वरूपा देवी को समर्पित है, जो मां गंगा के रूप में पोषण करती हैं, काव्य की प्रेरणा बनती हैं और जीवन की संरक्षिका हैं। शिव विवाह के उल्लासपूर्ण क्षणों को भी नंदी के भोले अनुरोधों के माध्यम से दर्शाया गया, जब वह अपने दूल्हे शिव के समान स्वयं को भी सजाने का आग्रह करता है। महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर इससे अधिक उपयुक्त दृश्य और क्या हो सकता था। लेकिन समय का पहिया निरंतर घूमता रहता है - जन्म, जीवन और मृत्यु के चक्र को कोई रोक नहीं सकता। अनंत अंधकार से उत्पन्न जीवन, सूर्य की ऊर्जा से प्रकाशित होता है और अंततः उसी अंधकार में विलीन हो जाता है। काल भैरव, शिव के ही एक अन्य स्वरूप, प्रत्येक युग के अंत में संहार करते हैं ताकि सृजन की एक नई यात्रा आरंभ हो सके। इस चक्र की अनुभूति आत्मा को परम आनंद तक ले जाती है, जहां 'सोऽहम् अस्मि' (मैं ही ब्रह्म हूं) का सत्य उद्घाटित होता है।

दैनिक भास्कर
Tue, 25 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76874390

हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Bhopal Main - 25 Feb 2025 - Page 14

भोपाल, मंगलवार 25 फरवरी 2025
haribhoomi.com

जिंदगी लाइव

हरिभूमि 10

बसंत की दस्तक के साथ बिखरा नृत्य का उत्साह और उल्लास

मधुमास के राग में नर्तक-नर्तकियों की थिरकन

घुंघरुओं की झंकार से खजुराहो की आबो-हवा में सुरीला संगीत सुनाई पड़ रहा

नृत्योत्सव के साथ खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव, कलावार्ता, प्रणाम, चित्र कथन, नाद, शिल्प मेला आकर्षण

बुन्देलखंड की ऐतिहासिक भूमि इन दिनों नृत्य की जिज्ञासा, प्रयोग और नवाचारों से सुसज्जित

खजुराहो से मधुरिमा राजपाल

ऋतुओं के राजा बसंत की दस्तक के साथ प्रेम और अध्यात्म की प्राचीन नगरी में नृत्य की उमंग और उल्लास अपने उत्कर्ष पर है। घुंघरुओं की झंकार से खजुराहो की आबो-हवा में सुरीला संगीत सुनाई पड़ रहा है। मधुमास के राग के साथ नर्तक-नर्तकियों की थिरकन आत्मा को आनंद से भर रही है। 51वें खजुराहो नृत्य समारोह में जिज्ञासा, प्रयोग और नवाचारों से सजी प्रस्तुतियों ने दूर-दराज से आए नृत्यप्रेमियों के अंतर्मन को गुदगुदा दिया है। 51वां खजुराहो नृत्य समारोह के पांचवें दिवस की शाम में मोहिनीअट्टम, कथक और ओडिसी के नाम रही।

मोहिनीअट्टम में प्रस्तुत किया नृत्य बाला गणपति

पांचवें दिन पहली नृत्य प्रस्तुति पद्मश्री विदुषी भारती शिवाजी, दिल्ली की मोहिनीअट्टम की रही। उन्होंने सर्वप्रथम बाल गणपति से अपनी प्रस्तुति की शुरुआत की। नृत्य बाला गणपति एक आह्वान था जो बाल गणपति का वर्णन करता है जब वह हाथी के सिर वाले भगवान के रूप मे पैदा हुआ था। जब शिव और पार्वती ने नर और मादा हाथी का रूप धारण किया।

शाश्वत चक्र की महिमा को अभिव्यक्त करती कथक प्रस्तुति

दूसरी प्रस्तुति कथक की रही, जिसे प्रस्तुत करने मंच पर नमूदार थी पद्मश्री शोवना नारायण, दिल्ली। समय, सृजन, प्रेम और मृत्यु - यह सभी जीवन के चक्र में बंधे हैं, जो निरंतर गतिशील है। पद्मश्री शोवना नारायण की नृत्य प्रस्तुति ने इस शाश्वत चक्र की महिमा को अभिव्यक्त किया। चित्रगुप्त, कंदरिया महादेव और जगदंबा मंदिरों की दिव्य आभा में इस नृत्य प्रस्तुति ने जीवन के सार को उद्घाटित किया।

शबरी पर प्रस्तुत किया एक गहन मार्मिक अभिनय

अंतिम प्रस्तुति रतिकांत मोहापात्रा, ओडिसा की ओडिसी नृत्य की रही। उन्होंने नव-शास्त्रीय नवाचारों का एक गुलदस्ता प्रस्तुत किया, जिसमें कलाकारों द्वारा शिव तांडव स्तोत्रम और जीवन मधु संगीत माया" की प्रस्तुति दी गई। इसके बाद गुरु रतिकांत महापात्र द्वारा रामचरित मानस से शबरी पर एक गहन मार्मिक अभिनय प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुति का समापन भगवान सूर्य की प्रार्थना वंदे सूर्यम की जीवंत प्रस्तुति के साथ हुआ।

51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह का पांचवां दिन

बसंत की दस्तक के साथ बिखरी नृत्य की उमंग और उल्लास, मधुमास के राग में नर्तक–नर्तकियों की थिरकन

–बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक भूमि इन दिनों नृत्य की जिज्ञासा, प्रयोग और नवाचारों से सजी है

–नृत्योत्सव के साथ खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव, कलावार्ता, प्रणाम, चित्र कथन, नाद, शिल्प मेला का आकर्षण

छतरपुर भ्रमण न्यूज। खजुराहो। ऋतुओं के राजा वसंत की दस्तक के साथ प्रेम और अध्यात्म की प्राचीन नगरी में नृत्य की उमंग और उल्लास अपने उत्कर्ष पर है। घुंघरूओं की झंकार से खजुराहो की आबो–हवा में सुरीला संगीत सुनाई पड़ रहा है। मधुमास के राग के साथ नर्तक–नर्तकियों की थिरकन आत्मा को आनंद से भर रही है। 51वें खजुराहो नृत्य समारोह में जिज्ञासा, प्रयोग और नवाचारों से सजी प्रस्तुतियों ने दूर–दराज से आए नृत्यप्रेमियों के अंतर्मन को गुदगुदा दिया है। एक हजार वर्ष प्राचीन मंदिरों के आंगन में बनी नृत्य भूमि पर प्रतिदिन कल्पना, कथा और विचार साकार हो रहे हैं।

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग एवं जिला प्रशासन छतरपुर के सहयोग से आयोजित 51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह के पांचवें दिवस की शाम में मोहिनीअट्टम, कथक और ओडिसी के नाम रही।

पांचवें दिन पहली नृत्य प्रस्तुति पद्मश्री विदुषी भारती शिवाजी, दिल्ली की मोहिनीअट्टम की रही। उन्होंने सर्वप्रथम बाला गणपति से अपनी प्रस्तुति की शुरुआत की। नृत्य बाला गणपति एक आह्वान था जो बाला गणपति का वर्णन करता है जब वह हाथी के सिर वाले भगवान के रूप में पैदा हुआ था। जब शिव और पार्वती ने नर और मादा हाथी का रूप धारण किया। यह गणपति के आह्वान के बाद देवी भगवती का आह्वान किया जाता है, जिसमें दोनों देवताओं का आह्वान किया जाता है। यह प्रस्तुति राग नीलांबरी में आदि तालम में निबद्ध थी। अगले क्रम में चाद्रु मुखाचलम की प्रस्तुति दी गई। मुखाचलम मोहिनीअट्टम की तकनीक पर प्रकाश डालता है जहाँ कुछ विशिष्ट आंदोलनों को जटिल पैटर्न बनाने के लिए एक साथ बुना जाता है। इसमें केरल के कुछ देशी राग और ताल भी शामिल थे। यह रागमालिका में तालमालिका में निबद्ध थी। इस प्रस्तुति को मंच पर प्रदर्शन करने वाले कलाकार गुरु भारती शिवाजी, दीप्ति नायर, मेधा नायर, रुक्मणी मृणालिनी सेन और आदित्य आर थे। इसके बाद ओमनाथिंकल किदावो की प्रस्तुति हुई। यह रागम नव रसम में थी, जो एक माँ के अपने बच्चे के प्रति प्रेम का वर्णन करता है। यह अपने बच्चे की सुंदरता की तुलना चंद्रमा और प्रकृति की अन्य रचनाओं से करती है। तुलना की इस प्रक्रिया में उसे एहसास होता है कि इन रचनाओं का आकर्षण उसके बच्चे की सुंदरता की तुलना में कुछ भी नहीं है। यह भगवान नारायण पद्मनाभ से प्रार्थना करती है कि वह उसके बच्चे को एक शक्तिशाली इंसान बनने के उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दें, जो वह अंततः बन गया। इसे इरायमन थम्पी ने लिखा था। अगली प्रस्तुति अष्टपदी की रही। कई शताब्दियों से केरल में मंदिरों के गर्भगृह में कोट्टिपदीसेवा की परंपरा रही है। इसका श्रेय गुरु भारती शिवाजी ने श्री कवलम नारायण पणिक्कर के मार्गदर्शन में मोहिनीअट्टम के सोपान संगीतम में इसे शामिल किया था। यह एक जीवंत परंपरा है, जिसमें केरल के मंदिरों के गर्भगृह में दैनिक अनुष्ठानों के हिस्से के रूप में देवताओं को अष्टपदी चढ़ाई जाती है। यह प्रस्तुति भगवान कृष्ण की दिव्य सुंदरता और गोपियों के साथ उनके प्रेम-प्रसंग का वर्णन करती है। अष्टपदी राग पंतुवराली में निबद्ध थी।

दूसरी प्रस्तुति कथक की रही, जिसे प्रस्तुत करने मंच पर नमूदार थी पद्मश्री शोवना नारायण, दिल्ली। समय, सृजन, प्रेम और मृत्यु - यह सभी जीवन के चक्र में बंधे हैं, जो निरंतर गतिशील है। पद्मश्री शोवना नारायण की नृत्य प्रस्तुति ने इस शाश्वत चक्र की महिमा को अभिव्यक्त किया। चित्रगुप्त, कंदरिया महादेव और जगदंबा मंदिरों की दिव्य आभा में इस नृत्य प्रस्तुति ने जीवन के सार को उद्घाटित किया। चित्रगुप्त मंदिर, जो सूर्य देव को समर्पित है, जहां कलाकारों ने उस ऊर्जा स्रोत को नमन किया, जो पृथ्वी पर जीवन का आधार है। कंदरिया महादेव मंदिर, जो भगवान शिव को समर्पित है, उनकी अनंत चेतना और ओमकार स्वरूप का प्रतीक है। शिव, जो समय के स्वामी हैं, संहार और सृजन, दोनों के कारक हैं। वहीं, जगदंबा मंदिर, शक्ति स्वरूपा देवी को समर्पित है, जो माँ गंगा के रूप में पोषण करती हैं, काव्य की प्रेरणा बनती हैं और जीवन की संरक्षिका हैं। शिव विवाह के उल्लासपूर्ण क्षणों को नंदी के भोले अनुरोधों के माध्यम से दर्शाया गया, जब वह अपने दूल्हे शिव के समान स्वयं को भी सजाने का आग्रह करता है। महाशिवरात्रि की पूर्वसंध्या पर इससे अधिक उपयुक्त दृश्य और क्या हो सकता था। लेकिन समय का पहिया निरंतर घूमता रहता है - जन्म, जीवन और मृत्यु के चक्र को कोई रोक नहीं सकता। अनंत अंधकार से उपजा जीवन, सूर्य की ऊर्जा से प्रकाशित होता है और अंततः उसी अंधकार में विलीन हो जाता है। काल भैरव, शिव के ही एक अन्य स्वरूप, प्रत्येक युग के अंत में संहार करते हैं ताकि सृजन की एक नई यात्रा आरंभ हो सके। इस चक्र की अनुभूति आत्मा को परम आनंद तक ले जाती है, जहां श्लोऽहम् अस्मि% (मैं ही ब्रह्म हूँ) का सत्य उद्घाटित होता है।

अंतिम प्रस्तुति रतिकांत मोहपात्रा, ओडिशा की ओडिसी नृत्य की रही। उन्होंने नव-शास्त्रीय नवाचारों का एक गुलदस्ता प्रस्तुत किया, जिसमें कलाकारों द्वारा ऋषि तांडव सौम्य और ऋजीवन मधु संगीत माधुर्य की प्रस्तुति दी गई। इसके बाद गुरु रतिकांत महापात्र द्वारा रामचरित मानस से ऋषावतिका पर एक गहन मार्मिक अभिनय प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुति का समापन भगवान सूर्य की प्रार्थना आदि सूर्याष्टक की जीवंत प्रस्तुति के साथ हुआ। मंच पर गुरु रतिकांत महापात्र के साथ श्रीमती राजश्री प्रहराज, ऐश्वर्या सिंगदेव, प्रीतिशा महापात्र, माधवी राउत, दैना घोष, जी. संजय, राजकुमार कर, पल्लवी प्रियदर्शिनी और सुभश्री सेनापति शामिल रहीं।

मंदिर लयात्मक ही नहीं, एक आध्यात्मिक अनुभूति – रजनी राव

कलाविदों और कलाकारों के मध्य संवाद का लोकप्रिय संवाद सत्र का चौथा दिन नृत्य का मंदिरों से संबंध विषय के नाम रहा। कथक केंद्र दिल्ली से संबद्ध व नृत्य गुरु पं. पुरु दधीच की शिष्या सुश्री रजनी राव ने व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि मंदिर लयात्मक ही नहीं, एक आध्यात्मिक अनुभूति भी है। इसका धर्म से संबंध नहीं, हमारे भीतरी मन से है। यही वजह है कि खजुराहो मंदिरों में नृत्य करने के बाद मन आध्यात्मिक आनंद से भर जाता है। सुश्री रजनी राव ने कहा कि हमें तो सभागारों और मंचों पर परफॉर्म करने की आदत है। लेकिन पचास साल पहले खजुराहो के मंदिरों को नृत्य समारोह के लिए चुनने वाले मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग के तत्कालीन आयोजक और उसमें निरंतर प्रगति करने वाले अलाउद्दीन खां संगीत अकादमी के सारे वर्तमान पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। रजनी जी ने कहा कि शब्द भले ही नश्वर हों पर ध्वनियां अनश्वर हैं। इसलिए यहां बोले गये शब्दों की अनुगूंज सदा रहेगी। बाद में आपने कथक नृत्य का लघु प्रदर्शन भी किया साथ ही कला रसिकों से संवाद भी किया।

पद्मा सुब्रमण्यम ने पैन एशियाई देशों के कलाकारों को बताया उनकी कलाओं में भी है नाट्यशास्त्र – अरविंद कुमार स्वामी

पद्मविभूषण एवं ख्याति नृत्यांगना डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम के जीवन और कला अवदान पर केंद्रित प्रणाम गतिविधि में व्याख्यान श्रृंखला के दूसरे दिवस तीन सत्र हुए। प्रथम सत्र में सुश्री गायत्री कन्नन ने डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम की प्रस्तुतियों के संगीत पर बात की। उन्होंने बताया कि पद्मा जी अपनी प्रस्तुतियों का संगीत खुद रचती थीं। उन्होंने मुद्राओं के आधार पर रचित संगीत को भी विस्तार से बताया साथ ही पद्मा जी के कुछ प्रोडक्शन के संगीत पर भी बात की। इसके बाद श्रीमती महती कन्नन ने करण उज्जीवनम — पुनर्निर्माण एवं पुनरीक्षण विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि पद्मा जी ने वेद, शास्त्र एवं मूर्तियों से लिए करनास में अंतर्संबन्ध स्थापित किया। इन अंतर्संबन्ध से अपने करनास की निर्माण किया। अंत में सिंगापुर से पधारे अरविंद कुमार स्वामी ने डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम का पैन एशियाई परिप्रेक्ष्य पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि पैन एशियाई देशों के लोग ये जानते थे कि उनकी कलाओं में नाट्यशास्त्र कहां पर है पद्माजी ने उन्हें बताया कि वे जो कर रहे हैं उसमें भी नाट्यशास्त्र है। क्योंकि उन देशों में कोई नाट्यशास्त्र नहीं है।

बाल नृत्य कलाकारों के नृत्य में भाव, अभिनय का सौंदर्य

नई पीढ़ी को नृत्य के प्रति प्रेरित करने और युवाओं को भारतीय संस्कृति एवं कलाओं से जोड़ने के उद्देश्य के साथ खजुराहो नृत्य समारोह में पहली बार आयोजित किए जा रहे खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का मंच भी अब लोकप्रिय होता जा रहा है। इस महोत्सव के पांचवें दिन बड़ी संख्या में नृत्य प्रेमी बाल नृत्य कलाकारों का उत्साहवर्धन करने पहुंचे। पहली प्रस्तुति भरतनाट्यम की रही। इंदौर की अवनी जहीन ने सर्वप्रथम मल्लारी की प्रस्तुति दी। मल्लारी एक पारंपरिक नृत्य है जो मंदिर उत्सव में देवता किशोभायात्रा को दर्शाता है। उसके साथ ही नटेश कौथवम की प्रस्तुति दी। यह राग गंभीर नट्टई और आदि ताल में निबद्ध था। इसके बाद प्रसिद्ध संगीतकार मदुरै एम मुरलीधरन द्वारा रचित विनायगर की प्रस्तुति दी, जो एक प्रसिद्ध रचना है। यह भगवान गणेश को समर्पित थी। यह हंसध्वनी राग और आदि ताल में निबद्ध थी। अंतिम प्रस्तुति राग रेवती और आदि ताल में रचित एक कीर्तनम और तिल्लाना का मिश्रण की थी। यह देवी दुर्गा को समर्पित था और उनके विभिन्न स्वरूपों के बारे में बताता है। तिल्लाना के बोलो को कीर्तनम के साथ बहुत ही सुंदर तरीके से पिरोया गया। इसके बाद जबलपुर की राघवी नायडू की कथक प्रस्तुति का आस्वादन दर्शकों ने किया। उन्होंने सर्वप्रथम सरस्वती वंदना से प्रस्तुति का आगाज किया। तत्पश्चात तीन ताल में शुद्ध नृत्य किया, जिसमें आमद, उठान, तोड़े, टुकड़े, परन, तिहाईयां इत्यादि शामिल थीं। अंत में उन्होंने कृष्ण भजन से नृत्य का सौंदर्य दिखाया और वृंदावन के कुंज भवन में नाचे गिरिधर... भजन पर प्रस्तुति दी।

51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह का पांचवां दिन

बसंत की दस्तक के साथ बिखरी नृत्य की उमंग और उल्लास, मधुमास के राग में नर्तक—नर्तकियों की थिरकन

-बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक भूमि इन दिनों नृत्य की जिज्ञासा, प्रयोग और नवाचारों से सजी है

-नृत्योत्सव के साथ खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव, कलावार्ता, प्रणाम, चित्र कथन, नाद, शिल्प मेला का आकर्षण

परिहार गर्जना न्यूज। खजुराहो। ऋतुओं के राजा बसंत की दस्तक के साथ प्रेम और अध्यात्म की प्राचीन नगरी में नृत्य की उमंग और उल्लास अपने उत्कर्ष पर है। घुंघरुओं की झंकार से खजुराहो की आबो—हवा में सुरीला संगीत सुनाई पड़ रहा है। मधुमास के राग के साथ नर्तक—नर्तकियों की थिरकन आत्मा को आनंद से भर रही है। 51वें खजुराहो नृत्य समारोह में जिज्ञासा, प्रयोग और नवाचारों से सजी प्रस्तुतियों ने दूर—दराज से आए नृत्यप्रेमियों के अंतर्मन को गुदगुदा दिया है। एक हजार वर्ष प्राचीन मंदिरों के आंगन में बनी नृत्य भूमि पर प्रतिदिन कल्पना, कथा और विचार साकार हो रहे हैं।

मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग एवं जिला प्रशासन छतरपुर के सहयोग से आयोजित 51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह के पांचवें दिवस की शाम में मोहिनीअट्टम, कथक और ओडिसी के नाम रही।

पांचवें दिन पहली नृत्य प्रस्तुति पद्मश्री विदुषी भारती शिवाजी, दिल्ली की मोहिनीअट्टम की रही। उन्होंने सर्वप्रथम बाल गणपति से अपनी प्रस्तुति की शुरुआत की। नृत्य बाला गणपति एक आह्वान था जो बाल गणपति का वर्णन करता है जब वह हाथी के सिर वाले भगवान के रूप में पैदा हुआ था। जब शिव और पार्वती ने नर और मादा हाथी का रूप धारण किया। बाल गणपति के आह्वान के बाद देवी भगवती का आह्वान किया जाता है, जिसमें दोनों देवताओं का आह्वान किया जाता है। यह प्रस्तुति राग नीलांबरी में आदि तालम में निबद्ध थी। अगले क्रम में नाट्य मुक्ताचलम को प्रस्तुत दी गई। मुक्ताचलम मोहिनीअट्टम की तकनीक पर प्रकाश डालता है जहाँ कुछ विशिष्ट आंदोलनों को जटिल पैटर्न बनाने के लिए एक साथ चुना जाता है। इसमें केरल के कुछ देशी राग और ताल भी शामिल थे। यह रागमालिका में तालमालिका में निबद्ध थी। इस प्रस्तुति को मंच पर प्रदर्शन करने वाले कलाकार गुरु भारती शिवाजी, दीप्ति नायर, मेघा नायर, रुकमणी मृणालिनी सैन और आदित्य आर थे। इसके बाद ओमानग्रिकल किदावो की प्रस्तुति हुई। यह रागम नव रसम में थी, जो एक माँ के अपने बच्चे के प्रति प्रेम का वर्णन करता है। यह अपने बच्चे की सुंदरता की तुलना चंद्रमा और प्रकृति की अन्य रचनाओं से करती है। तुलना की इस प्रक्रिया में उसे एहसास होता है कि इन रचनाओं का आकर्षण उसके बच्चे की सुंदरता की तुलना में कुछ भी नहीं है। यह भगवान नारायण पद्मनाभ से प्रार्थना करती है कि वह उसके बच्चे को एक शक्तिशाली राजा बनने के उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दें, जो वह अंततः बन गया। इसे इरयमन थम्पी ने लिखा था। अगली प्रस्तुति अष्टपदी की रही। कई शताब्दियों से केरल में मंदिरों के गर्भगृह में कोट्टीपदीसेवा की परंपरा रही है। इसका श्रेय गुरु भारती शिवाजी ने श्री कवलम नारायण पणिक्कर के मार्गदर्शन में मोहिनीअट्टम के सोपान संगीतम में इसे शामिल किया था। यह एक जीवंत परंपरा है, जिसमें केरल के मंदिरों के गर्भगृह में दैनिक अनुष्ठानों के हिस्से के रूप में देवताओं को अष्टपदी चढ़ाई जाती है। यह प्रस्तुति भगवान कृष्ण की दिव्य सुंदरता और गोपियों के साथ उनके प्रेम-प्रसंग का वर्णन करती है। अष्टपदी राग पंथुवरली में निबद्ध थी।

दूसरी प्रस्तुति कथक की रही, जिसे प्रस्तुत करने मंच पर नमूदार थी पद्मश्री शोभना नारायण, दिल्ली। समय, सृजन, प्रेम और मृत्यु - यह सभी जीवन के चक्र में बंधे हैं, जो निरंतर गतिशील है। पद्मश्री शोभना नारायण की नृत्य प्रस्तुति ने इस शाश्वत चक्र की महिमा को अभिव्यक्त किया। चित्रगुप्त, कंदरिया महादेव और जगदंबा मंदिरों की दिव्य आभा में इस नृत्य प्रस्तुति ने जीवन के सार को उद्घाटित किया। चित्रगुप्त मंदिर, जो सूर्य देव को समर्पित है, वहां कलाकारों ने उस ऊर्जा स्रोत को नमन किया, जो पृथ्वी पर जीवन का आधार है।कंदरिया महादेव मंदिर, जो भगवान शिव को समर्पित है, उनकी अनंत चेतना और ओमकारेश्वर स्वरूप का प्रतीक है। शिव, जो समय के स्वामी हैं, संहार और सृजन, दोनों के कारक हैं। वहीं, जगदंबा मंदिर, शक्ति स्वरूपा देवी को समर्पित है, जो मां गंगा के रूप में पोषण करती हैं, काव्य की प्रेरणा बनती हैं और जीवन की संरक्षिका हैं। शिव विवाह के उल्लासपूर्ण क्षणों को नंदी के भोले अनुवेषों के माध्यम से दर्शाया गया, जब वह अपने दूल्हे शिव के समान स्वयं को भी सजाने का आग्रह करता है। महाशिवरात्रि की पूर्व संध्या पर इससे अधिक उपयुक्त दृश्य और क्या हो सकता था। लेकिन समय का पहिया निरंतर घूमता रहता है - जन्म, जीवन और मृत्यु के चक्र को कोई रोक नहीं सकता। अनंत अंधकार से उत्पन्न जीवन, सूर्य की ऊर्जा से प्रकाशित होता है और अंततः उसी अंधकार में विलीन हो जाता है। काल भैरव, शिव के ही एक अन्य स्वरूप, प्रत्येक युग के अंत में संहार करते हैं ताकि सृजन को एक नई यात्रा आरंभ हो सके। इस चक्र की अनुभूति आत्मा को परम आनंद तक ले जाती है, जहां%सोऽहम् अस्मि% (मैं ही ब्रह्म हूँ) का सत्य उद्घाटित होता है।

अंतिम प्रस्तुति रतिकांत मोहापात्रा, ओडिसा की ओडिसी नृत्य की रही। उन्होंने नव-शास्त्रीय नवाचारों का एक गुलदस्ता प्रस्तुत किया, जिसमें कलाकारों द्वारा %शिव तांडव स्तोत्र% और %जीवन मधु संगीत माया% की प्रस्तुति दी गई। इसके बाद गुरु रतिकांत महापात्र द्वारा रामचरित मानस से %शबरी% पर एक गहन मार्मिक अभिनय प्रस्तुत किया गया। प्रस्तुति का समापन भगवान सूर्य की प्रार्थना %बंदे सूर्यम% की जीवंत प्रस्तुति के साथ हुआ। मंच पर गुरु रतिकांत महापात्र के साथ श्रीमती राजश्री प्रहराज, ऐश्वर्या सिंगदेव, प्रीतिशा महापात्र, माधवी राऊत, दैना घोष, जी. संजय, राजकुमार कर, पल्लवी प्रियदर्शिनी और सुभाश्री सेनापति शामिल रहीं।

मंदिर लयात्मक ही नहीं, एक आध्यात्मिक अनुभूति : रजनी राय

कलाविदों और कलाकारों के मध्य संवाद का लोकप्रिय संवाद सत्र का चौथा दिन नृत्य का मंदिरों से संबंध विषय के नाम रहा। कथक केंद्र दिल्ली से संबद्ध व नृत्य गुरू पं. पुरू दधीच की शिष्या सुश्री रजनी राय ने व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि मंदिर लयात्मक ही नहीं, एक आध्यात्मिक अनुभूति भी है। इसका धर्म से संबंध नहीं, हमारे भीतरी मन से है यही वजह है कि खजुराहो मंदिरों में नृत्य करने के बाद मन आध्यात्मिक आनंद से भर जाता है। सुश्री रजनी राय ने कहा कि हमें तो सभागारों और मंचों पर परफॉर्म करने की आदत है। लेकिन पचास साल पहले खजुराहो के मंदिरों को नृत्य समारोह के लिए चुनने वाले मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग के तत्कालीन आयोजक और उसमें निरंतर प्रगति करने वाले अलाउद्दीन खां संगीत अकादमी के सारे वर्तमान पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं।रजनी जी ने कहा कि शब्द भले ही नश्वर हों पर ध्वनियां अनश्वर हैं। इसलिए यहां बोले गये शब्दों की अनुगूंज सदा रहेगी। बाद में आपने कथक नृत्य का लघु प्रदर्शन भी किया।साथ ही कला रसिकों से संवाद भी किया।

पद्मा सुब्रह्मण्यम ने पैन एशियाई देशों के कलाकारों को बताया उनकी कलाओं में भी है नाट्यशास्त्र : अरविंद कुमार सामी

पद्मविभूषण एवं वरिष्ठ नृत्यांगना डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के जीवन और कला अवदान पर केंद्रित प्रणाम गतिविधि में व्याख्यान श्रृंखला के दूसरे दिवस तीन सत्र हुए। प्रथम सत्र में सुश्री गायत्री कनन ने डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की प्रस्तुतियों के संगीत पर बात की। उन्होंने बताया कि पद्मा जी अपनी प्रस्तुतियों का संगीत खुद रचती थीं। उन्होंने मुद्राओं के आधार पर रचित संगीत को भी विस्तार से बताया। साथ ही पद्मा जी के कुछ प्रोडक्शन के संगीत पर भी बात की। इसके बाद श्रीमती महती कनन ने करण उज्जीवनम — पुनर्निर्माण एवं पुनरीक्षण विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि पद्मा जी ने वेद, शास्त्र एवं मूर्तियों से लिए करनास में अंतर्संम्बन्ध स्थापित किया। इन अंतर्सम्बन्ध से अपने करनास की निर्माण किया। अंत में सिंगापुर से पधारे अरविंद कुमार सामी ने डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम का पैन एशियाई परिपेक्ष्य पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि पैन एशियाई देशों के लोग ये जानते थे कि उनकी कलाओं में नाट्यशास्त्र कहां पर है। पद्मा जी ने उन्हें बताया कि वे जो कर रहे हैं उसमें भी नाट्यशास्त्र है। क्योंकि उन देशों में कोई नाट्यशास्त्र नहीं है।

बाल नृत्य कलाकारों के नृत्य में भाव, अभिनय का सौंदर्य

नई पीढ़ी को नृत्य के प्रति प्रेरित करने और युवाओं को भारतीय संस्कृति एवं कलाओं से जोड़ने के उद्देश्य के साथ खजुराहो नृत्य समारोह में पहली बार आयोजित किए जा रहे खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव का मंच भी अब लोकप्रिय होता जा रहा है। इस महोत्सव के पांचवें दिन बड़ी संख्या में नृत्य प्रेमी बाल नृत्य कलाकारों का उत्साहवर्धन करने पहुंचे। पहली प्रस्तुति भरतनाट्यम की रही। इंदौर की अवनी जादौन ने सर्वप्रथम मल्हारी की प्रस्तुति दी। मल्हारी एक पारंपरिक नृत्य है जो मंदिर उत्सव में देवता कि शोभायात्रा को दर्शाता है। उसके साथ ही नटेश कौथवम की प्रस्तुति दी। यह राग गंभीर नाट्टई और आदि ताल में निबद्ध था। इसके बाद प्रसिद्ध संगीतकार मदुरै एम मुरलीधरन द्वारा रचित विनायगर को प्रस्तुति दी, जो एक प्रसिद्ध रचना है। यह भगवान गणेश को समर्पित थी। यह हंसध्वनी राग और आदि ताल में निबद्ध थी। अंतिम प्रस्तुति राग रेवती और आदि ताल में रचित एक कीर्तनम और तिल्लाना का मिश्रण की थी। यह देवी दुर्गा को समर्पित था और उनके विभिन्न स्वरूपों के बारे में बताता है। तिल्लाना के बोलों को कीर्तनम के साथ बहुत ही सुंदर तरीके से पिरोया गया। इसके बाद जबलपुर की राधवी नायडू की कथक प्रस्तुति का आस्वादन दर्शकों ने किया। उन्होंने सर्वप्रथम सरस्वती वंदना से प्रस्तुति का आगाज किया। तत्पश्चात तीन ताल में शुद्ध नृत्य किया, जिसमें आमद, उठान, तोड़े, टुकड़े, थाट, परने, तिहाईयां इत्यादि शामिल थीं। अंत में उन्होंने कृष्ण भजन से नृत्य का सौंदर्य दिखाया और वृंदावन के कुंज भवन में नाचे गिरिराज.... भजन पर प्रस्तुति दी।

बसंत की दस्तक के साथ बिखरी नृत्य की उमंग और उल्लास, मधुमास के राग में नर्तक–नर्तकियों की थिरकन

देवेन्द्र चतुर्वेदी/नवजागरण खजुराहो। ऋतुओं के राजा बसंत की दस्तक के साथ प्रेम और अध्यात्म की प्राचीन नगरी में नृत्य की उमंग और उल्लास अपने उत्कर्ष पर है। घुंघरुओं की झंकार से खजुराहो की आबोहवा में सुरीला संगीत सुनाई पड़ रहा है। मधुमास के राग के साथ नर्तक-नर्तकियों की थिरकन आत्मा को आनंद से भर रही है। 51वें खजुराहो नृत्य समारोह में जिज्ञासा, प्रयोग और नवाचारों से सजी प्रस्तुतियों ने दूर-दराज से आए नृत्यप्रेमियों के अंतर्मन को गुदगुदा दिया है। एक हजार साल पुराने चंदेलकालीन मंदिरों के आंगन में प्रतिदिन कल्पना, कथा और विचार साकार हो रहे हैं।

खजुराहो नृत्य समारोह के पांचवें दिवस की शाम में मोहिनीअट्टम, कथक और ओडिसी के नाम रही। पहली नृत्य प्रस्तुति पद्मश्री विदुषी भारती शिवाजी, दिल्ली की मोहिनीअट्टम की रही। उन्होंने सर्वप्रथम बाल गणपति से अपनी प्रस्तुति की शुरुआत की। नृत्य बाला गणपति एक आह्वान था जो बाल गणपति का वर्णन करता है जब वह हाथी के सिर वाले भगवान के रूप में पैदा हुआ था। जब शिव और पार्वती ने नर और मादा हाथी का रूप धारण किया। बाल गणपति के आह्वान के बाद देवी भगवती का आह्वान किया जाता है, जिसमें दोनों देवताओं का आह्वान किया जाता है। यह प्रस्तुति राग नीलांबरी में आदि तालम में निबद्ध थी। अगले क्रम में नाट्य मुक्काचलम की प्रस्तुति दी गई। इस प्रस्तुति का मंच पर प्रदर्शन करने वाले कलाकार गुरु भारती शिवाजी, दीप्ति नायर, मेघा नायर, रुक्मणी मृणालिनी सेन और आदित्य आर थे। इसके बाद ओमानथिंकल किदावो की प्रस्तुति हुई। यह रागम नव रसम में थी, जो एक माँ के अपने बच्चे के प्रति प्रेम का वर्णन करता है। वह अपने बच्चे की सुंदरता की तुलना चंद्रमा और प्रकृति की अन्य रचनाओं से करती है। तुलना की इस प्रक्रिया में उसे एहसास होता है कि इन रचनाओं का आकर्षण उसके बच्चे की सुंदरता की तुलना में कुछ भी नहीं है। वह भगवान नारायण पद्मनाभ से प्रार्थना करती है कि वह उसके बच्चे को एक शक्तिशाली राजा बनने के उज्ज्वल भविष्य का आशीर्वाद दें, जो वह अंततः बन गया। इसे इरयामन थम्पी ने लिखा था। अगली प्रस्तुति अष्टपदी की रही। कई शताब्दियों से केरल में मंदिरों के गर्भगृह में कोट्टीपदीसेवा की परंपरा रही है।

दिनांक 26 फरवरी, 2025

THE TIMES OF INDIA, BHOPAL
WEDNESDAY, FEBRUARY 26, 2025

Sattriya steals the show at Khajuraho festival

Vinita.Chaturvedi
@timesofindia.com

Bhopal: It was a heady mix of three diverse genres that kept the audience mesmerised on day-6 of the ongoing Khajuraho Festival. With Kandariya Mahadev and Jagdamba temples of Khajuraho, in the backdrop, the event organised by department of culture and tourism, MP and Ustad Allauddin Khan Sangeet Evam Kala Academy, has been getting rave reviews from the classes as well as the masses.

Classical dance fest will end today

A major draw on Tuesday was Bharatanatyam performance by Kamna Naik and her troupe, where the dancers brought to life Jaidev's 'Dashavatar' and presented a magnificent picture of serenity, beauty, poise and opulence, all at the same time, with various rasas woven beautifully in the piece that was choreographed and executed to perfection.

Sattriya recital by Jatin Das and his group gave a new dimension to the richness of Indian culture and its vast repertoire.

The artistes bewitched the onlookers with their awe-inspiring energy, zest and verve. The dance drama 'Priya Madhav' also got a lot of appreciation from the discerning audience.

Manipuri dance performance 'Jaidev Hare' was a sight for the sore eyes thanks to seamless grace, lyrical movements and delicate traditional attire of the performers.

खजुराहो नृत्य समारोह • छठवें दिन भरत नाट्यम, सत्रीया व मणिपुरी नृत्य, हैंडीक्राफ्ट प्रदर्शनी में भी पहुंचे लोग

भरतनाट्यम में भगवान के दशावतार, मणिपुरी नृत्य से श्री कृष्ण की लीला व शिव स्तुति का चित्रण किया

भास्कर संवाददाता | छतरपुर/खजुराहो

नृत्य समारोह की छठवीं संध्या पर भरतनाट्यम, सत्रीया और मणिपुरी नृत्य की प्रस्तुति हुई। वहीं समारोह स्थल पर लगी प्रदर्शनियों में भी लोगों की भीड़ देखने को मिली। फेस्टिवल के पास ही एक हैंडीक्राफ्ट की प्रदर्शनी लगाई है जिसमें विभिन्न प्रकार की वस्तुएं बनाई जा रही हैं। यहां एक दुकान पर लाख की चूड़ियां बनाकर बेची जा रही है और एक दुकान पर हैंडीक्राफ्ट मिट्टी और गोबर से वस्तुएं बनाई जा रही हैं। जिसे देखने के लिए लोग स्टॉल में पहुंचते हैं और सामग्री की खरीदी भी कर रहे हैं।

नृत्य महोत्सव में पहली प्रस्तुति मध्यप्रदेश की कामना नायक एवं साथियों की रही। जिसमें भरतनाट्यम नृत्य के माध्यम से दशावतार प्रस्तुति दी गई। दशावतार नृत्य जयदेव की गीत गोविंद नामक ग्रंथ से रचित है। जयदेव ने दशावतार में श्री कृष्ण का वर्णन नहीं किया है, क्योंकि वह कृष्ण को परम अवतार वर्णित करते हैं। प्रस्तुति में वीर रस, भक्ति रस, करुण रस और रौद्र रस के अंश दिखाई दिए। अंत में उन्होंने राग गंभीर नटई और ताल खंड त्रिपुट में मल्लारी की प्रस्तुति दी।

अगली प्रस्तुति सत्रीया नृत्य की थी। जिसे जतिन दास एवं साथी ने प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुति में सत्रीया नृत्य की समृद्ध परंपरा को सुधिजनों ने न सिर्फ देखा बल्कि अनुभव भी किया। नृत्य साधकों ने इस नृत्य में अभिनय और शुद्ध नृत्य दोनों का समावेश किया। इस प्रस्तुति में भगवान श्री कृष्ण की वंदना दिखाई। इसके बाद झूमुरा नृत्य प्रस्तुत किया गया, जो सत्रीया नृत्य की पुरुष नृत्य शैली का एक अन्य महत्वपूर्ण भाग है।

अंतिम प्रस्तुति मणिपुरी नर्तनालय द्वारा पूर्णाय की प्रस्तुति मणिपुरी नृत्य के माध्यम से दी गई। पद्मश्री गुरु कलावती देवी और बिम्बावती देवी के निर्देशन में यह प्रस्तुति दी गई। इसकी शुरुआत जयदेव हरे से हुई। पूर्वोत्तर की आध्यात्मिक चेतना को सांस्कृतिक स्वरूप में बड़े ही आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया। आषाढ़ मास में मणिपुर में कांग चिंगबा या रथयात्रा बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है।

छतरपुर | समारोह के दौरान कामना नायक अपने समूह के साथ भरतनाट्यम की प्रस्तुति देते हुए।

बाल नृत्य: अनुकृति मिदरवाल ने नृत्य की यात्रा 8 साल की आयु से की

बाल नृत्य कलाकारों ने भी प्रस्तुतियां दीं। पहली प्रस्तुति अनुकृति मिरदवाल के कथक की रही। उन्होंने अपनी कथक नृत्य की यात्रा की शुरुआत अपनी गुरु दमयंती भाटिया मिरदवाल के मार्गदर्शन में मात्र 8 वर्ष की आयु में प्रारंभ की। अनुकृति ने रास ताल की प्रस्तुति दी। 13 मात्रा के इस अप्रचलित ताल की शिक्षा उन्होंने अपने दादा गुरु पद्म श्री डॉ. पुरु दाधीच से प्राप्त की है। उनके साथ संगत करने वाले कलाकार तबले पर मृणाल नागर, गायन एवं हारमोनियम पर मयंक स्वर्णकार, सारंगी पर आबिद हुसैन और पड़न्त पर दमयंती भाटिया मिरदवाल साथ थे। इसके बाद प्रगति झा ने कथक नृत्य से उपस्थित सुधिजनों को नृत्य के सौंदर्य की अनुभूति कराई।

खजुराहो नृत्य समारोह का छठवां दिन : मप्र की कामना नायक ने भरतनाट्यम, जतिन दास ने सत्रीया की प्रस्तुति दी

भरत नाट्यम में हरि के दशावतार, असम के सत्रीया नृत्य में दिखे नाट्य शास्त्र के अष्ट रस

भास्कर न्यूज | खजुराहो

खजुराहो के प्राचीन मंदिरों के आंगन में इन दिनों कलाओं का आनंद बिखरा हुआ है। 51वें खजुराहो नृत्य समारोह की छठवीं शाम भरतनाट्यम, सत्रीया और मणिपुरी के नाम रही। मंगलवार को पहली प्रस्तुति मप्र की कामना नायक एवं साथियों की रही। उन्होंने भरतनाट्यम नृत्य में दशावतार प्रस्तुति दी। दशावतार नृत्य जयदेव के गीत गोविन्द नामक ग्रंथ से रचित है। जयदेव ने हरि के दशावतार का वर्णन गीत गोविंद में संस्कृत भाषा में किया है। जयदेव ने दशावतार में श्री कृष्ण का वर्णन नहीं किया है, क्योंकि वह कृष्ण को परम अवतार वर्णित करते हैं। कृष्ण ही एक ऐसा रूप है, जिन्होंने कहा कि वे स्वयं ईश्वर हैं। इस नृत्य में नृत्य साधिकाओं ने दशावतार हस्त दर्शाए। जयदेव ने श्री कृष्ण को सर्वश्रेष्ठ कहा है। वे कहते हैं हे केव तुम मीन हो, कच्छ हो, शुकर हो, नरहरि हो, तुम वामन हो, भृगुपति यानि परशूराम हो, तुम राम हो, हलधर (बलराम) हो; तुम बुद्ध हो और तुम कल्कि हो। इसी कारण वह कृष्ण को अवतारों की आकृति मानते हैं। इसलिए वह बार-बार वर्णन करते हैं केशव जय जगदीश हरे। इस नृत्य प्रस्तुति में वीर रस, भक्ति रस, करुण रस एवं रौद्र रस के अंश दिखाई दिए। कामना ने अंत में राग गंभीर नटई और ताल खंड त्रिपुट में मल्लारी की प्रस्तुति दी।

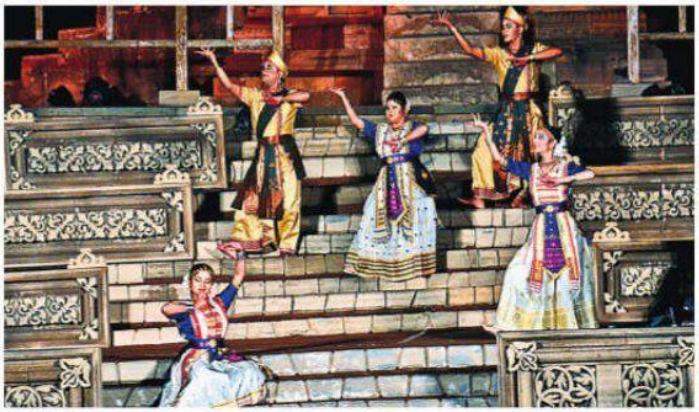

सत्रीया नृत्य में जतिन दास ने जीवंत की असम की परंपरा

अगली प्रस्तुति सत्रीया नृत्य की थी। जिसे प्रस्तुत किया जतिन दास एवं साथी, असम के कलाकारों ने। इस प्रस्तुति में सत्रीया नृत्य की समृद्ध परंपरा को सुधिजनों ने न सिर्फ देखा बल्कि अनुभव भी किया। असम की विरासत और भक्ति परंपरा का एक अभिन्न अंग, जिसमें सौंदर्य और लय का संगम भी दिखता है। प्रस्तुति की शुरुआत 'सूत्रधारी नृत्य' से हुई, जो सत्रीया नृत्य की पुरुष नृत्य शैली का एक विशेष भाग है। यह नृत्य 'अंकीय नाटक' के प्रारंभ में किया जाता है। नृत्य साधकों ने इस नृत्य में अभिनय और शुद्ध नृत्य दोनों का समावेश किया। इस प्रस्तुति में भगवान श्री कृष्ण की वंदना दिखाई। इसके बाद 'झूमुरा नृत्य' प्रस्तुत किया गया, जो सत्रीया नृत्य की पुरुष नृत्य शैली का एक अन्य महत्वपूर्ण भाग है। अगली प्रस्तुति नृत्य नाटिका प्रिया माधव की थी। यह नृत्य सत्रीया नृत्य की महिला नृत्य शैली का हिस्सा है। इसके बाद एक आहत्या अभिनय का प्रदर्शन किया गया, जिसमें नाट्य शास्त्र के नायक और नायिकाओं को दर्शाया गया। इस प्रस्तुति में धीरोधात नायक के रूप में भगवान श्रीकृष्ण, धीरप्रशांत नायक के रूप में नारद मुनि और खंडिता नायिका के रूप में रानी सत्यभामा की झलक दिखी। यह प्रस्तुति महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित नाटक पारिजात हरण से ली गई थी। अंत में 'तुमि हरी रसरा सागर' की प्रस्तुति हुई। एक ऐसी नृत्य रचना जो नवरसों पर आधारित थी। इसमें नाट्यशास्त्र के अष्ट रस श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और अद्भुत तथा साहित्य दर्पण का शांत रस प्रस्तुत किया गया।

मणिपुरी नृत्य में दिखी भगवान कृष्ण के विभिन्न रूपों की झलक

छठवें दिन की अंतिम प्रस्तुति मणिपुरी नर्तनालय द्वारा 'पूर्णाय' की प्रस्तुति मणिपुरी नृत्य के माध्यम से दी गई। पद्मश्री गुरु कलावती देवी और बिम्बावती देवी के निर्देशन में यह प्रस्तुति दी गई। इसकी शुरुआत जयदेव हरे से हुई। पूर्वोत्तर की आध्यात्मिक चेतना को सांस्कृतिक स्वरूप में बड़े ही आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया। आषाढ़ मास में मणिपुर में कांग चिंगबा या रथयात्रा बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाई जाती है। वहां के लोग इस पर्व को गीतों और नृत्यों के माध्यम से और भी विशेष बनाते हैं। यह नृत्य मणिपुर की रथयात्रा से जुड़े पारंपरिक तत्वों को समेटे हुए था। इसमें कवि जयदेव के दशावतार और अन्य मणिपुरी भक्तिगीतों का संकलन किया गया था। इसके बाद शिव वंदना की गई। यह नृत्य भगवान शिव की शक्ति और उनकी महिमा को समर्पित रहा। अगली प्रस्तुति नमः कृष्णाय थी। इस नृत्य में कृष्ण के विभिन्न रूपों की झलक प्रस्तुत की गई। जिसमें वे राक्षसी पूतना का वध करते हैं, अर्जुन के सारथी बनकर उन्हें धर्मयुद्ध का मार्ग दिखाते हैं। अंतिम प्रस्तुति पूर्ण पुरुषोतम भगवान विष्णु के नरसिंह अवतार को समर्पित थी, जो अधर्म का अंत कर धर्म की स्थापना करते हैं।

दैनिक भास्कर
Wed, 26 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76880267

भारत में चौथी शताब्दी से पूर्व अस्तित्व में आ चुके थे मंदिर

कलावार्ता : खजुराहो में मंदिरों के इतिहास के बारे में जानकारी दे रहे पुरातत्वविद्, नृत्य और मंदिरों का संबंध बता रहे कलाविद्

सिटी भास्कर | खजुराहो

भारत में कलाविदों और कलाकारों के मध्य संवाद के लोकप्रिय सत्र कलावार्ता में पांचवें दिन जबलपुर से आए पुरातत्वविद् शिवकांत वाजपेयी ने खजुराहो के मंदिरों के सहस्त्राब्दी पूर्ण होने एवं ऐतिहासिक यात्रा विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि खजुराहो के मंदिरों का निर्माण 925 ईस्वी से 1200 ईस्वी तक माना जाता है। जिन्हें चंदेलवंशी शासकों द्वारा बनवाया गया था। इसमें राजा विद्याधर प्रमुख थे। उन्होंने बताया कि ये मंदिर नागर शैली में बनवाए गए थे। वाजपेयी ने संधार और निरंधार शैली में अंतर को भी स्पष्ट किया। संधार शैली में बने मंदिरों में एक चौकोर गर्भगृह होता है, जो प्रदक्षिणा के लिए स्तंभों की एक गैलरी से घिरा होता है। इस प्रकार संधार मंदिरों में एक प्रदक्षिणा पथ होता है। निरंधर शैली में बने मंदिरों में प्रदक्षिणा पथ नहीं होते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि भारतीय इतिहास में भारत में मंदिरों का अस्तित्व चौथी शताब्दी से माना गया है, जबकि यह सत्य नहीं है। विदिशा में मिले अवशेषों के आधार पर यह बात कही जा सकती है कि भारत में मंदिर चौथी शताब्दी से पूर्व अस्तित्व में आ चुके थे। इसके बाद वरिष्ठ कथक नृत्यांगना रजनी राव ने भारतीय नृत्य और मंदिरों के बीच संबंध पर व्याख्यान दिया।

हम भारत के सांस्कृतिक योद्धा हैं : डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम

वरिष्ठ नृत्यांगना एवं पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के जीवन और कला अवदान पर केंद्रित प्रणाम के अंतर्गत पियाल भट्टाचार्य ने भारतीय नृत्य परिदृश्य पर डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम का प्रभाव और डॉ. राजश्री वासुदेवन ने डॉ. पद्मा की दैव भक्ति और देशभक्ति पर व्याख्यान दिया। इसके पूर्व डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम ने कहा कि हम भारत के सांस्कृतिक योद्धा हैं। हमारे कंधों पर बहुत महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। हमें अनुशासित होकर भारतीय कलाओं के लिए काम करना पड़ेगा और सम्मान भी बढ़ाना होगा।

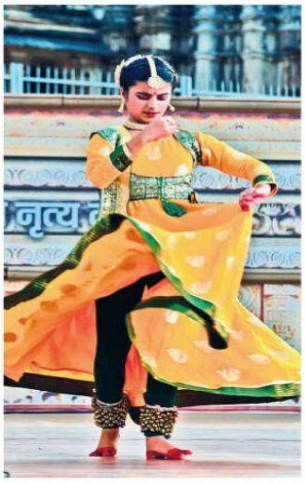

बाल नृत्य कलाकारों ने दी प्रस्तुति

खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव में छठवें दिन भी बाल नृत्य कलाकारों ने अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुतियां दीं। अल्प आयु में ही नृत्य के प्रति गहरी आस्था और समर्पण इन बाल कलाकारों के भविष्य की कहानी कह रहा था। पहली प्रस्तुति अनुकृति मिरदवाल के कथक की रही। अपनी कथक नृत्य की यात्रा की शुरुआत अपनी गुरु दमयंती भाटिया मिरदवाल के मार्गदर्शन में मात्र 8 वर्ष की आयु में प्रारंभ करने वाली अनुकृति ने रास ताल की प्रस्तुति दी। 13 मात्रा के इस अप्रचलित ताल की शिक्षा उन्होंने अपने दादा गुरु पद्मश्री डॉ. पुरु दधीच से प्राप्त की है। इसके अलावा उन्होंने दुरत तीन ताल भी प्रस्तुत किया और अंत में शिव धुपद शंकर अति प्रचंड जो कि पंडित राजेन्द्र गंगानी द्वारा रचित हैं, का प्रदर्शन किया। इसके बाद प्रगति झा ने कथक नृत्य से उपस्थित सुधिजनों को नृत्य के सौंदर्य की अनुभूति कराई। प्रगति ने शुद्ध कथक की प्रस्तुति दी, जिसमें पारंपरिक पढ़ंत, विलंबित एवं मध्य लय की बंदिशें तथा एक भावपूर्ण ठुमरी शामिल थी। उनकी प्रस्तुति उनकी तकनीकी दक्षता, लयकारी, भाव-भंगिमा और गहरी अभिव्यक्ति को दर्शा रही थी।

दैनिक भास्कर
Wed, 26 February 2025
https://epaper.bhaskarhindi.com/c/76880277

पत्रिका

51वें खजुराहो नृत्य समारोह का छठवां दिन: भारतीय संस्कृति और भक्ति परंपरा का आनंद

ऐतिहासिक मंदिरों के आंगन में बिखरा कलाओं का रंग, नृत्य ने किया मंत्रमुग्ध

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

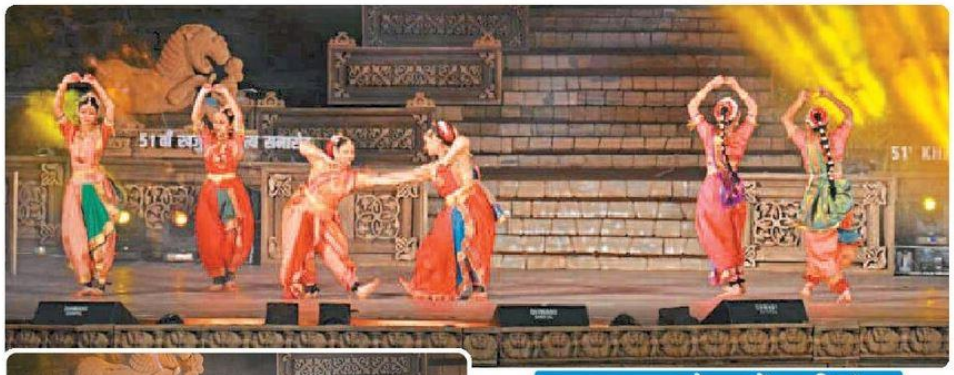

छतरपुर. हमारी संस्कृति में नृत्य केवल एक नयनाभिराम प्रस्तुति नहीं, बल्कि यह कलाकार के गहन चिंतन को साकार करने वाला एक सार्थक प्रयास है। भारत में कला का स्वरूप परंपरानिष्ठ संस्कार के समान है, जो कठोर साधना से पल्लवित होकर, कलाकार के स्व की अभिव्यक्ति के साथ समकालीन सांस्कृतिक परिदृश्य का भी वर्णन करता है। इस परंपरा को जीवित रखते हुए, खजुराहो के प्राचीन मंदिरों के आंगन में इन दिनों कलाओं का अद्भुत आनंद बिखरा हुआ है। 51वें खजुराहो नृत्य समारोह का छठा दिन नृत्य और कला की उत्कृष्टता का प्रतीक बनकर सामने आया। इस दिन की प्रस्तुतियों ने भारतीय संस्कृति, भक्ति परंपरा और नृत्य की विविधता को बखूबी प्रस्तुत किया।

पहली प्रस्तुति भरतनाट्यम नृत्य के माध्यम से हुई, जिसे मध्यप्रदेश की कामना नायक और उनके साथियों ने प्रस्तुत किया। इस नृत्य का विषय 'दशावतार' था, जो जयदेव की प्रसिद्ध काव्य रचना 'गीत गोविंद' पर आधारित था। दशावतार में भगवान श्री कृष्ण के अवतारों की कथा का सुंदर चित्रण किया गया। नृत्य की प्रस्तुतियां वीर रस, भक्ति रस, करुण रस और रौद्र रस से भरपूर थीं। कामना नायक और उनके साथी कलाकारों ने दर्शकों को अवतारों की कहानियां और उनके अद्भुत कार्यों का अनुभव कराया। इसके बाद, उन्होंने राग गंभीर नटई और ताल खंड त्रिपुट में मल्लारी की प्रस्तुति ने दर्शकों के मन को मंत्रमुग्ध कर गया।

दूसरी प्रस्तुति सत्रिया नृत्य की थी, जिसे असम के कलाकार जतिन दास और उनके साथियों ने प्रस्तुत किया। असम की सांस्कृतिक विरासत और भक्ति परंपरा का यह एक अभिन्न अंग है, जिसमें सौंदर्य और लय का अद्भुत संगम दिखता है। 'सूत्रधारी नृत्य' से लेकर 'झूमुरा नृत्य' और 'गूपी नृत्य' तक की प्रस्तुतियों ने सत्रीया नृत्य की समृद्ध परंपरा का समर्पण किया। यह प्रस्तुति दर्शकों को भारतीय नृत्य की समृद्ध और विविध परंपरा से परिचित कराती है। अंतिम प्रस्तुति मणिपुरी नृत्य की थी, जिसे मणिपुरी नर्तनालय ने प्रस्तुत किया। यह प्रस्तुति पद्मश्री गुरु कलावती देवी और बिम्बावती देवी के निर्देशन में दी गई। मणिपुर की रथयात्रा से जुड़े पारंपरिक तत्वों और भक्तिगीतों के माध्यम से नृत्य प्रस्तुत किया गया, जिसमें भगवान कृष्ण की वंदना दिखाई गई।

बाल नृत्य महोत्सव में प्रस्तुतियां

खजुराहो के बाल नृत्य महोत्सव में छठे दिन भी बाल कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। कम उम्र में नृत्य के प्रति गहरी आस्था और समर्पण इन बच्चों के भविष्य के सुनहरे संकेत दे रहे थे। पहले प्रदर्शन में अनुकृति मिरदवाल ने कथक नृत्य की एक सुंदर प्रस्तुति दी। अनुकृति ने 8 वर्ष की आयु से अपनी कथक नृत्य यात्रा शुरू की थी, और इस बार उन्होंने 'रास ताल' और 'शिव ध्रुपद' प्रस्तुत किए। उनके साथ संगत करने वाले कलाकारों ने भी प्रस्तुति में सामंजस्य और तालमेल का बेहतरीन उदाहरण पेश किया। इसके बाद, प्रगति झा ने भी कथक नृत्य से दर्शकों को नृत्य के सौंदर्य की अनुभूति कराई। उनके प्रदर्शन में पारंपरिक पढ़ंत, विलंबित और मध्य लय की बंदिशें और एक भावपूर्ण ठुमरी शामिल थी। उनकी प्रस्तुति ने उनकी तकनीकी दक्षता, लयकारी, भाव-भंगिमा और गहरी अभिव्यक्ति को दर्शाया।

26/02/2025 | Chhatarpur | Page : 4
Source : https://epaper.patrika.com/

हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Bhopal Main - 26 Feb 2025 - Page 16

भारतीय संस्कृति और भक्ति परम्परा के अद्भुत दर्शन

51वें खजुराहो नृत्य समारोह का छठवां दिन

प्राचीन मंदिरों के आंगन में बिखरा कलाओं का आनंद

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भोपाल

खजुराहो के प्राचीन मंदिरों के आंगन में इन दिनों कलाओं का आनंद बिखरा हुआ है। देश के सुप्रसिद्ध नृत्य कलाकार प्रतिदिन अपनी गुरु परम्परा, साधना और कल्पना को देहगति, भाव भंगिमाओं और मुद्राओं में रेखांकित कर रहे हैं। 51वें खजुराहो नृत्य समारोह के छठवें दिन भी नृत्य और कलाओं की उत्कृष्टता से सुधिजन रूबरू हुए। मंगलवार का दिन भरतनाट्यम, सत्रीय और मणिपुरी के नाम रहा।

भरतनाट्यम नृत्य में दिखाया दशावतार

छठवें दिन की पहली प्रस्तुति मध्यप्रदेश की कामना नायक एवं साथियों की रही। उन्होंने भरतनाट्यम नृत्य के माध्यम से दशावतार प्रस्तुति दी। दशावतार नृत्य जयदेव की गीत गोविन्द नामक ग्रंथ से रचित है।

सत्रीया नृत्य की समृद्ध परंपरा को किया प्रस्तुत

अगली प्रस्तुति सत्रीया नृत्य की थी। जिसे प्रस्तुत किया जतिन दास एवं साथी, असम के कलाकारों ने। इस प्रस्तुति में सत्रीया नृत्य की समृद्ध परंपरा को सुधिजनों ने न सिर्फ देखा बल्कि अनुभव भी किया। असम की विरासत और भक्ति परंपरा का एक अभिन्न अंग, जिसमें सौंदर्य और लय का संगम भी दिखता है।

मणिपुरी नर्तनालय द्वारा 'पूर्णाय' की प्रस्तुति रही खास

छठवें दिन की अंतिम प्रस्तुति मणिपुरी नर्तनालय द्वारा 'पूर्णाय' की प्रस्तुति मणिपुरी नृत्य के माध्यम से दी गई। पद्मश्री गुरु कलावती देवी और बिम्बावती देवी के निर्देशन में यह प्रस्तुति दी गई। इसकी शुरुआत जयदेव हरे से हुई। पूर्वोत्तर की आध्यात्मिक चेतना को सांस्कृतिक स्वरूप में बड़े ही आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया।

दिनांक 27 फरवरी, 2025

THE TIMES OF INDIA, BHOPAL
THURSDAY, FEBRUARY 27, 2025

Khajuraho fest ends: Guv lauds it for strengthening cultural warp & weft

Vinita.Chaturvedi
@timesofindia.com

Bhopal: Seven day and several power-packed performances that did not allow the onlookers' attention to waver a bit. But, like all good things, the weeklong Khajuraho festival finally came to an end on Wednesday, in the presence of governor of Madhya Pradesh, Mangubhai Patel.

The classical dance fest organised at UNESCO Heritage Site, Khajuraho in Chhatarpur, by department of culture and tourism, MP and Ustad Allauddin Khan Sangeet Evam Kala Academy, left the audience (many of them foreign nationals) feeling sad.

Lakita Sahu, a classical dance and music connoisseur, who had gone there from Gwalior, said, "This is the third time I have visited this classical fest and like old wine it gets better every year. My husband and I were totally engrossed last one week with pottery workshops, village tours and shopping in the day time and amazing dance recitals in the night. Now when the fest has concluded, we are feeling lost."

The classical dance fest was held at Khajuraho in Chhatarpur

The governor, who watched the classical dance performances on the concluding day was quite impressed. "I'm happy to attend the finale of 51st edition of Khajuraho festival, it is an event that has become synonym of culture and conserves divine aura of our ancient performing art forms. I'm also proud of the world record made by the young artistes of MP on the inaugural day of the fest. Such endeavours strengthen the warp and weft of culture," said the governor.

The highlights of the finale were dance recital by Dr Piyush Raj and Mitali Karadkar which was a melange of Kathak and Odissi. Bollywood actress Meenakshi Sheshadri's Odissi performance was quite scintillating and the audience showeredlove on the glamorous star.

The last performance of the event by Padma Bhushan Radha and Raja Reddy — representing the divine love of Radha and Krishna — was definitely the dessert served last and enjoyed the most by all those present.

खजुराहो नृत्य समारोह- 2024 में 25 समूहों में 120 कलाकार हुए थे शामिल, इस बार 21 समूहों में 105

आखिरी दिन कथक, भरत नाट्यम और कुचीपुड़ी नृत्य की प्रस्तुतियां, समापन समारोह में राज्यपाल हुए शामिल

भास्कर संवाददाता | छतरपुर/ खजुराहो

नृत्य समारोह के आखिरी दिन कथक, भरत नाट्यम और कुचीपुड़ी नृत्य की प्रस्तुतियां हुई। वहीं मध्य प्रदेश के राज्यपाल मंगू भाई पटेल समापन कार्यक्रम में उपस्थित हुए। उन्होंने भरतनाट्यम की विख्यात नृत्यांगना डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम का सम्मान किया और खजुराहो नृत्योत्सव एवं 139 नृत्यकारों द्वारा 24 घंटे से अधिक नृत्य करने पर गिनीज बुक रिकॉर्ड ब्रेक करने की सराहना की। इस मौके पर क्षेत्रीय सांसद वीडी शर्मा, क्षेत्रीय विधायक अरविंद पटेरिया, संस्कृति विभाग और जिला प्रशासन के अधिकारी मौजूद रहे।

बुधवार संध्या की पहली प्रस्तुति डॉ. पियूष राज और मिताली वरदकर की रही। कथक और ओडिसी के सौंदर्यपूर्ण संमिश्रण से उन्होंने महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर पार्वती परिणय की कथा की प्रस्तुति दी। अगली प्रस्तुति अभिनेत्री और नृत्यांगना मीनाक्षी शेषाद्रि ने ओडिसी नृत्य में दी। उन्होंने कहा कि आज मैं बहुत खुश हूं कि, दुनिया मे अपनी पहचान बना चुके खजुराहो नृत्य समारोह में नृत्य करने का मौका मिला। वह 25 साल पहले यहां नृत्य करने आई थी।

दूसरी प्रस्तुति रथ यात्रा पल्लवी थी। यह शुद्ध नृत्य की अनुपम प्रस्तुति रही। जिसमें श्रीजगन्नाथ पुरी की भव्य रथयात्रा का सौंदर्य और उल्लास नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। तीसरी प्रस्तुति अष्टपदी संकलन की थी। यह कवि जयदेव द्वारा रचित तीन अष्टपादियों का संयोग था। जिसमें राधा और कृष्ण की प्रेम गाथा अभिव्यक्त की गई। अगली प्रस्तुति पद्मभूषण राधा राजा रेड्डी दिल्ली ने कुचिपुड़ी नृत्य की दी। अंतिम प्रस्तुति तरंगम की थी। यह पारंपरिक कुचिपुड़ी नृत्य का एक प्रमुख भाग है, जो भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित था।

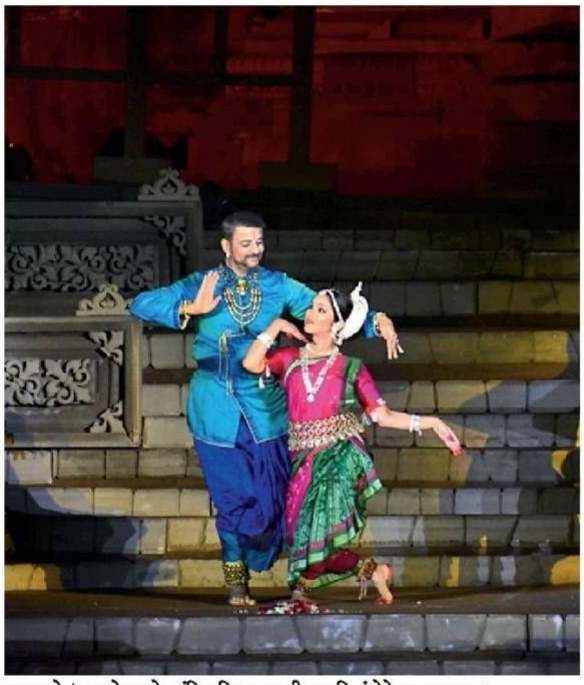

खजुराहो | आयोजन के अंतिम दिन नृत्य की प्रस्तुतियां देते हुए कलाकार।

वर्ष 2024 में शास्त्रीय नृत्यों के 25 समूहों ने एकल एवं समूह मे नृत्य किए। कथक में नलनी कमलनी, सुचित्रा हलमलकर, अमीरा पाटनकर, अनुराधा सिंह सहित अन्य ने समूह एवं शेफी सिंह, साक्षी शर्मा राजेन्द्र गंगानी आदि ने एकल नृत्य किया था। ओडिसी में छह नृत्यकारों ने नृत्य किए जिनमें रंजना गोहर कस्तूरी पटनायक सोनल मान सिंह ने समूह नृत्य किए। भरतनाट्यम नृत्य में सुधाना शंकर सायली कांडे आदि ने समूह एवम एकल नृत्य किए थे। मणिपुर नृत्य में में सिर्फ एक शेफाली राजकुमारी ने समूह में कुचिपुड़ी नृत्य में राजश्री डोलला रेखा सतीश ने युगल नृत्य किया। मोहिनीअट्टम नृत्य में विद्या प्रदीप ने नृत्य किया। नृत्योत्सव 25 समूहों में 120 से अधिक नृत्यकारों ने एकल और समूह में नृत्य किए। वहीं वर्ष 2025 में 21 समूह एवं नाम के नृत्यकारों ने भरतनाट्यम कथक सत्रीया, कुचिपुड़ी, मोहिअट्टम, कथकली, मणिपुरी, ओडिसी, छाऊ शास्त्रीय नृत्य विधाओं में समूह में नृत्य किए। नृत्यकारों की संख्या 105 रही।

51 वें खजुराहो नृत्य समारोह का समापन : राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने किया आह्वान- नृत्य की भावी पीढ़ी तैयार करें कला साधक

मीनाक्षी शेषाद्रि ने अष्टपदी में व्यक्त की राधा-कृष्ण के प्रेम और विरह की पीड़ा, राजा-राधा रेड्डी ने की शिव स्तुति

भास्कर न्यूज | खजुराहो

51वें खजुराहो नृत्य समारोह की आखिरी शाम प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री मीनाक्षी शेषाद्रि की प्रस्तुतियों से यादगार हो गई। भारतीय संस्कृति के प्रतीक शास्त्रीय नृत्यों का भव्य उत्सव बुधवार को अपने अंजाम पर पहुंच गया। यहां महाशिवरात्रि के पर्व पर नृत्य प्रस्तुतियों में शिव और शक्ति के सुंदर स्वरूपों की छवियां मंच पर साकार हुईं। समापन अवसर पर राज्यपाल मंगुभाई पटेल बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। साथ ही खजुराहो के सांसद वीडी शर्मा और विधायक अरविंद पटेरिया विशेष रूप से उपस्थित थे।

समापन समारोह में राज्यपाल ने कहा कि यहां 139 नृत्य कलाकारों ने 24 घंटे, 9 मिनट, 26 सेकंड तक लगातार नृत्य कर जो विश्व रिकॉर्ड बनाया है, वह हमारी संस्कृति की गौरवशाली धरोहर का प्रतीक है। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में प्रदेश के नाम 6 कीर्तिमान दर्ज कराने की विशेष उपलब्धि के लिए राज्य सरकार के प्रयास सराहनीय है। इस बार के समारोह में बाल नृत्य महोत्सव, नाद प्रदर्शनी जैसे नवाचार सराहनीय है। बुंदेलखंड की धरती में शस्त्र और शास्त्र के समन्वय का संगम देखने को मिलता है। खजुराहो नृत्य समारोह, हमारी शास्त्रीय नृत्य की विविधता और समृद्धता को विस्तारित करने में बड़ा योगदान दे रहा है। जिसने भारतीय कला और संस्कृति की विविधता में एकता को देश-विदेशों में मजबूत और बढ़ावा देने का अभूतपूर्व कार्य किया है। नृत्य समारोह में विभिन्न कलाओं के अद्भुत समागम से खजुराहो अब कलाकारों की नगरी के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित हो गया है। इसी का सुखद परिणाम है कि आज यह आयोजन, कला प्रेमियों के अद्भुत समागम के साथ पर्यटन का विशेष आकर्षण केंद्र भी बन गया है।

कांसे की थाली पर संतुलन बनाकर प्रस्तुत की तरंगम

अंतिम दिवस की तीसरी प्रस्तुति पद्मभूषण राधा-राजा रेड्डी, दिल्ली की कुचिपुड़ी की थी। प्रथम प्रस्तुति 'शिव स्तुति' थी, जो नटराज के रूप में भगवान शिव को समर्पित है। शिव जिन्हें 'चिदंबरम नटराज' के नाम से भी जाना जाता है, उनके तांडव नृत्य से सम्पूर्ण सृष्टि गतिशील रहती है। यह प्रस्तुति शिव के उस दिव्य नृत्य की आराधना स्वरूप समर्पित थी, जिसमें सृजन, पालन और संहार का अनूठा समन्वय देखने को मिलता है। अगली प्रस्तुति 'जतीस्वरम' शुद्ध नृत्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण था। जिसमें कोई गीत या शब्द नहीं, बल्कि नृत्य साधकों द्वारा ताल और स्वर के माध्यम से एक अनोखी भंगिमा प्रस्तुत की गई। नेत्र, भौंहों, ग्रीवा और पद संचालन की अद्भुत अभिव्यक्ति ने इस प्रस्तुति को विशेष बनाया। अंतिम प्रस्तुति 'तरंगम' की थी। यह पारंपरिक कुचिपुड़ी नृत्य का एक प्रमुख भाग है, जो भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित था। नृत्य साधकों ने कांसे की थाली के किनारे पर संतुलन बनाते हुए अपने पैरों की उत्कृष्ट गति और लयबद्धता के साथ इसे प्रदर्शित किया।

पार्वती परिणय में दिखा कथक और ओडिसी का मिश्रण

अंतिम दिवस की पहली प्रस्तुति डॉ. पियूष राज और मिताली वरदकर की रही। कथक और ओडिसी के सौंदर्यपूर्ण समिश्रण से उन्होंने महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर 'पार्वती परिणय' की कथा की प्रस्तुति दी। इस रचना का लेखन पद्मश्री डॉ. पुरु दाधीच ने किया है। नृत्य निर्देशन पद्मश्री डॉ. पुरु दाधीच ने एवं उनका सहयोग गुरु शुभदा वराडकर ने किया। इसकी संगीत रचना कार्तिक रमन और कौशिक बासु की थी।

मीनाक्षी ने किया जगन्नाथ पुरी की रथयात्रा का चित्रण

अगली प्रस्तुति सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और नृत्यांगना सुश्री मीनाक्षी शेषाद्रि की ओडिसी नृत्य की थी। 80 और 90 के दशक रंगीन पर्दे की सबसे लोकप्रिय अभिनेत्री मीनाक्षी शेषाद्रि जब मंच पर नमूदार हुईं तो पूरे उल्लास के साथ सुधिजनों ने उनका स्वागत किया। मीनाक्षी चार प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैलियों-भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी और ओडिसी में निष्णात हैं। वे उत्तरी और दक्षिणी भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी निपुण हैं। वर्तमान में वे मुंबई में गुरु रवींद्र अटिबुद्धि से ओडिसी नृत्य का प्रशिक्षण ले रही हैं। उनकी पहली प्रस्तुति इष्ट देव आराधना की थी। इस नृत्य में उन्होंने भगवान शिव की स्तुति नृत्य के माध्यम से की, जो नटराज के रूप में नृत्य के अधिपति हैं। यह आराधना उनकी असीम भक्ति और दिव्य ऊर्जा का सजीव चित्रण था। दूसरी प्रस्तुति रथ यात्रा पल्लवी थी। यह शुद्ध नृत्य की अनुपम प्रस्तुति रही, जिसमें श्रीजगन्नाथ पुरी की भव्य रथयात्रा का सौंदर्य और उल्लास नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। तीसरी और अंतिम प्रस्तुति थी अष्टपदी संकलन। इसमें राधा और कृष्ण की प्रेमगाथा अभिव्यक्त की गई। प्रथम भाग में राधा की कृष्ण से मिलने की व्याकुलता को दर्शाया, फिर उनके प्रेम में विश्वासघात से उत्पन्न पीड़ा को प्रकट किया और अंततः कृष्ण स्वयं राधा से क्षमायाचना करते हैं।

जो नित्य नहीं है, वह नृत्य नहीं है : आनंदवर्धन

कलावार्ता और बाल नृत्य महोत्सव का हुआ समापन

सिटी भास्कर | छतरपुर

खजुराहो नृत्य समारोह में इस बार कलावार्ता, बाल नृत्य समारोह सहित अन्य आयोजन भी रखे गए थे। 51वें खजुराहो नृत्य महोत्सव के साथ ही बुधवार को बाल नृत्य महोत्सव ओर कलावार्ता का भी समापन हो गया। मध्य प्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा इस बार आयोजित नृत्य समारोह नवाचारों से कई मायनों में विशेष रहा। इस बार नृत्य समारोह में काफी दर्शक भी उमड़े।

ऊर्जा और क्रिया का समन्वय नृत्य : आनंदवर्धन

कलाविदों एवं कलाकारों के मध्य संवाद का लोकप्रिय सत्र कलावार्ता का छठवां एवं अंतिम दिवस मंदिर स्थापत्य और नृत्य कला का दार्शनिक और आध्यात्मिक परिप्रेक्ष्य विषय पर केंद्रित रहा। इस विषय पर व्याख्यान के लिए आनंदवर्धन नई दिल्ली से पधारे। उन्होंने कहा कि देवालय से हम केवल इतना समझते हैं कि जहां देव विराजमान हैं, वह देवालय है, जबकि इसे दो भागों में समझना होगा। जिसके अभ्यंतर में लय है वह आलय है और जो दिव्य है वह देव है। उन्होंने कहा कि जो नित्य नहीं है वह नृत्य नहीं है। काल की गति नित्य है। शिव नट राज राजेश्वर हैं, वह निरन्तर नृत्य कर रहे हैं। अर्थात शिव ही नृत्य है। ऊर्जा और क्रिया का समन्वय नृत्य है, जो परमानंद की ओर ले जाती है, जो संपूर्ण रूप से सौंदर्य है, वह कला है। शिव विलय के देवता हैं, वे तांडव करते हैं, लेकिन पार्वती के लास्य के बिना शिव का तांडव पूर्ण नहीं है। शिव का एक नाम मतंग भी है और खजुराहो में मतंगेश्वर विराजमान हैं। मतंग से तात्पर्य यह है कि जिसे श्रुति नहीं है, जो आत्म में है, वह मतंग है। खजुराहो में स्नेह से मातृत्व तक की यात्रा दिखाई पड़ती है।

बाल नृत्य महोत्सव के मंच पर अंतिम दिन दिखा शिव का सौंदर्य

युवा नृत्य कलाकारों को भारतीय संस्कृति की प्रति प्रेरित करने और मंच प्रदान करने के उद्देश्य से पहली बार आयोजित खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव के अंतिम दिन दो नृत्य प्रस्तुतियां हुईं। जिसमें कथक और भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुतियां शामिल थीं। पहली प्रस्तुति भरतनाट्यम की थी, जिसे तनिष्का हतवलने ने प्रस्तुत किया। सुप्रसिद्ध नृत्य गुरु मंजूमणि हतवलने की शिष्या तनिष्का ने अपनी प्रस्तुति का आरम्भ डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम द्वारा कोरियोग्राफ्ड विवेक चुरामणि की प्रस्तुति दी। अगली प्रस्तुति शिव पक्षाक्षर की थी। शिवरात्रि के अवसर पर इस प्रस्तुति ने नृत्य प्रेमियों को प्रभावित कर दिया। अंतिम प्रस्तुति नवरस विरुथम की रही। विरुथम एक तमिल शब्द है, जो भक्ति छंद को संदर्भित करता है। इसके बाद कथक नृत्य की प्रस्तुति हुई। जिसे नित्या बत्रा ने प्रस्तुत किया। हर्षिता दाधीच की शिष्या नित्या ने गायन की एक प्राचीन और दुर्लभ ध्रुपद शैली के साथ ताल धमार में एक पारंपरिक नृत्य प्रस्तुत किया। इस अनूठी कृति की रचना और कोरियोग्राफी पद्मश्री डॉ. पुरु दाधीच ने ब्रह्म ताल में की है, जिसे हिंदुस्तानी संगीत प्रणाली में सबसे लंबे ताल में से एक माना जाता है, जिसमें एक जटिल 28-बीट चक्र शामिल है।

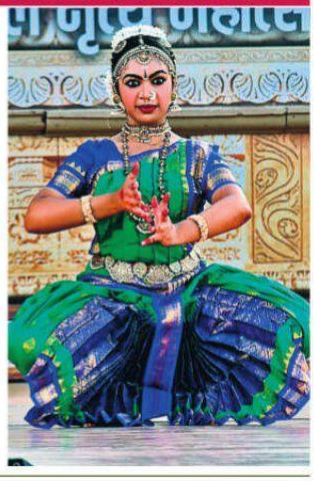

51वें खजुराहो नृत्य समारोह का समापन

अभिनेत्री मीनाक्षी शेषाद्री ने राधा-कृष्ण की प्रेमगाथा को अभिव्यक्त कर मनमोहा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

छतरपुर. खजुराहो नृत्य समारोह का 51वां संस्करण बुधवार को अपनी संपूर्ण भव्यता में समाप्त हुआ, जहां भारतीय शास्त्रीय नृत्य की शाश्वत शक्ति और सौंदर्य का अद्वितीय मेल देखने को मिला। इस ऐतिहासिक महोत्सव के अंतिम दिन की पहली प्रस्तुति कथक और ओडिसी का अद्भुत संगम थी, जिसमें डॉ. पियूष राज और सुश्री मिताली वरदकर ने महाशिवरात्रि के अवसर पर 'पार्वती परिणय' की कथा को सजीव किया। इस प्रस्तुति का लेखन पद्मश्री डॉ. पुरु दाधीच ने किया, और नृत्य निर्देशन भी उन्हीं के द्वारा किया गया था, साथ ही उनका सहयोग गुरु शुभदा वरदकर ने किया। संगीत रचना कार्तिक रमन और कौशिक बासु की थी और प्रस्तुति में गायन वैभव मांकड़, तबला कौशिक बसु, मर्दलरोहन दहाले, सितार अलका गुजर और मंजीरा गुरु शुभदा वरदकर ने संगत दी।

इसके बाद मीनाक्षी शेषाद्री की ओडिसी नृत्य प्रस्तुति ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। 80 और 90 के दशक की प्रसिद्ध अभिनेत्री और नृत्यांगना मीनाक्षी शेषाद्रि ने अपनी नृत्य कला से खजुराहो के सिद्ध मंच पर आध्यात्मिकता, भक्ति और प्रेम की एक अनूठी यात्रा कराई। मीनाक्षी, जो चार प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैलियों - भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी और ओडिसी में निष्णात हैं, ने अपनी प्रस्तुति की शुरुआत भगवान शिव की स्तुति के साथ की, जो नटराज के रूप में नृत्य के अधिपति माने जाते हैं। इस नृत्य के माध्यम से उन्होंने अपनी असीम भक्ति और दिव्य ऊर्जा का अभिव्यक्त किया। उनके अगले नृत्य 'रथ यात्रा पल्लवी' में श्रीजगन्नाथ पुरी की भव्य रथयात्रा का उल्लास और सौंदर्य नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। अंतिम प्रस्तुति 'अष्टपदी संकलन' थी, जिसमें राधा और कृष्ण के प्रेमगाथा को अभिव्यक्त किया गया।

तीसरी और अंतिम प्रमुख प्रस्तुति 'कुचिपुड़ी' शैली में पद्मभूषण राधा-राजा रेड्डी की थी। इस प्रस्तुति में दिव्य और आध्यात्मिकता का अद्वितीय समन्वय देखने को मिला। राधा-राजा रेड्डी ने 'शिव स्तुति' नृत्य प्रस्तुत किया, जो नटराज रूप में भगवान शिव को समर्पित था। इसके बाद, 'जतीस्वरम' नृत्य प्रस्तुत किया गया, जिसमें नृत्य के माध्यम से ताल और स्वर के अद्भुत समन्वय को दर्शाया गया। अंतिम प्रस्तुति थी, जो भगवान श्रीकृष्ण को समर्पित एक पारंपरिक कुचिपुड़ी नृत्य था, जिसमें कठिन तकनीक और संतुलन की अद्वितीय प्रदर्शन को देखा गया।

बाल नृत्य महोत्सव का भी समापन

पहली बार आयोजित खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव ने युवा नृत्य कलाकारों को भारतीय संस्कृति से प्रेरित करने और मंच प्रदान करने का अद्वितीय प्रयास किया। इस महोत्सव के अंतिम दिन दो नृत्य प्रस्तुतियां हुईं। पहली प्रस्तुति भरतनाट्यम थी, जिसे तनिष्का हतवलने ने प्रस्तुत किया। यह प्रस्तुति शिव पक्षाक्षर पर आधारित थी, जो महाशिवरात्रि के अवसर पर विशेष रूप से प्रभावी रही। अगले नृत्य में "नवरस विरुथम" पर आधारित तमिल भक्ति छंद का अभिव्यक्त किया गया। इसके बाद कथक नृत्य की प्रस्तुति हुई, जिसे नित्या बत्रा ने प्रस्तुत किया। इस कृति की रचना और कोरियोग्राफी पद्मश्री डॉ. पुरु दाधीच ने की थी, जो हिंदुस्तानी संगीत प्रणाली के सबसे लंबे और जटिल ताल चक्र ब्रह्म ताल में आधारित थी।

शास्त्रीय नृत्य की समृद्धता के विस्तार में खजुराहो समारोह का योगदान: राज्यपाल

छतरपुर @ पत्रिका. भारतीय संस्कृति की अनुपम धरोहर, शास्त्रीय नृत्य की पावन भूमि और दिव्य कला के भव्य उत्सव के रूप में आयोजित 51वां खजुराहो नृत्य समारोह बुधवार को अपने ऐतिहासिक समापन की ओर बढ़ा।

महोत्सव का समापन प्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल की उपस्थिति में हुआ। राज्यपाल के साथ खजुराहो सांसद वीडी शर्मा और विधायक अरविंद पटेरिया भी उपस्थित रहे। राज्यपाल ने अपने उद्बोधन में खजुराहो नृत्य समारोह की सराहना करते हुए कहा कि यह आयोजन भारतीय शास्त्रीय नृत्य की समृद्धि और विविधता को प्रदर्शित करने के साथ-साथ हमारे सांस्कृतिक धरोहर को वैश्विक मंच पर उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने खजुराहो नृत्य महोत्सव में शामिल सभी नृत्य कलाकारों, गुरुओं और आयोजकों को बधाई दी, विशेष रूप से गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में मध्यप्रदेश के नाम दर्ज 6 कीर्तिमानों की उपलब्धि को सराहा।

राज्यपाल ने कहा कि इस बार के नृत्य समारोह में 139 नृत्य कलाकारों द्वारा आयोजित 24 घंटे 9 मिनट और 26 सेकंड की नृत्य मैराथन ने न केवल एक नया रिकॉर्ड स्थापित किया है, बल्कि यह हमारी संस्कृति की गौरवशाली धरोहर का प्रतीक बन गया है। राज्यपाल ने इस प्रकार के आयोजन को सांस्कृतिक समृद्धि की दिशा में बड़ा कदम बताया और आयोजकों के प्रयासों को सराहा।

समापन अवसर पर खजुराहो के सांसद वीड़ी शर्मा ने कहा कि राज्यपाल का स्नेह खजुराहो के प्रति सदैव बना रहता है। उन्होंने कहा कि खजुराहो धर्म, अध्यात्म और कला का अद्वितीय केंद्र है। खजुराहो नृत्य समारोह के मंच पर प्रस्तुति देना हर नृत्य कलाकार के लिए सौभाग्य होता है और यहां प्रस्तुति देने के बाद ही वह स्वयं को परिपूर्ण मानता है।

हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Bhopal Main - 27 Feb 2025 - Page 10

राज्यपाल की उपस्थिति में 51वें खजुराहो नृत्य समारोह का समापन

अभिनेत्री मीनाक्षी शेषाद्रि के ओडिसी नृत्य में दिखी शिव आराधना

हरिभूमि न्यूज ⏭ भोपाल

भारतीय संस्कृति की अनुपम धरोहर, शास्त्रीय नृत्य की पावन भूमि और दिव्य कला के भव्य उत्सव 51वें खजुराहो नृत्य समारोह का सिलसिला बुधवार को अपने अंजाम पर पहुंच गया। महाशिवरात्रि के पावन। पर्व पर नृत्य प्रस्तुतियों में शिव और शक्ति के सुंदर स्वरूपों की छवियां मंच पर साकार हुईं। समापन अवसर पर मध्यप्रदेश के राज्यपाल मंगूभाई पटेल बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। अंतिम दिवस की पहली प्रस्तुति डॉ. पियूष राज और मिताली वरदकर की रही। कथक और ओडिसी के सौंदर्यपूर्ण सम्मिश्रण से उन्होंने महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर पार्वती परिणय की कथा की प्रस्तुति दी।

रथ यात्रा पल्लवी को दर्शाती मीनाक्षी की प्रस्तुति

अगली प्रस्तुति सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और नृत्यांगना मीनाक्षी शेषाद्रि की ओडिसी नृत्य की थी। 80 और 90 के दशक रंगीन पर्दे की सबसे लोकप्रिय अभिनेत्री मीनाक्षी शेषाद्रि जब मंच पर नमूदार हुईं तो पूरे उल्लास के साथ सुधिजनों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने पहली प्रस्तुति में भगवान शिव की स्तुति नृत्य के माध्यम से की, जो नटराज के रूप में नृत्य के अधिपति हैं। दूसरी प्रस्तुति रथ यात्रा पल्लवी की थी। तीसरी और अंतिम प्रस्तुति थी अष्टपदी संकलन।

नटराज के रूप में भगवान शिव को समर्पित शिव स्तुति रही खास

अंतिम दिवस की तीसरी प्रस्तुति पद्मभूषण राधा-राजा रेड्डी, दिल्ली की कुचिपुड़ी की थी। आपने प्रथम प्रस्तुति 'शिव स्तुति' की थी, जो नटराज के रूप में भगवान शिव को समर्पित है। शिव, जिन्हें 'चिदंबरम नटराज' के नाम से भी जाना जाता है, उनके तांडव नृत्य से सम्पूर्ण सृष्टि गतिशील रहती है। यह प्रस्तुति शिव के उस दिव्य नृत्य की आराधना स्वरूप समर्पित थी, जिसमें सृजन, पालन और संहार का अनूठा समन्वय देखने को मिलता है।

5वें खजुराहो नृत्य समारोह का समापन, अंतिम दिवस राज्यपाल महोदय की गरिमामयी उपस्थिति रही

शास्त्रीय नृत्य की विविधता और समृद्धता को प्रदर्शित करने और विस्तारित करने में खजुराहो नृत्य समारोह का उल्लेखनीय योगदान : राज्यपाल

■ शिव-शक्ति की शाश्वत उपस्थिति के साथ खजुराहो के सिद्ध मंच पर झिलमिल हुई भारतीय संस्कृति और दिव्य कला

(कुलदीप सक्सेना)

आम सभा, छतरपुर। भारतीय संस्कृति की अनुपम धरोहर, शास्त्रीय नृत्य की पावन भूमि और दिव्य कला के भव्य उत्सव 51वें खजुराहो नृत्य समारोह का सिलसिला बुधवार को अपने अंजाम पर पहुंच गया। महाशिवरात्रि के पावन पर नृत्य प्रस्तुतियों में शिव और शक्ति के सुंदर स्वरूपों की छवियां मंच पर साकार हुईं। देश के सुप्रसिद्ध नृत्य साधकों ने अपनी साधना और कल्पना से नृत्य कला में शिव–शक्ति को इतने आकर्षक और प्रभावी ढंग से दिखाया कि मंच शिव–शक्ति की शाश्वत उपस्थिति को सुधिजनों ने अनुभूत किया। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग एवं जिला प्रशासन छतरपुर के सहयोग से आयोजित 51वाँ खजुराहो नृत्य समारोह अनन्त स्मृतियों के साथ समापन हुआ। समापन अवसर पर मध्यप्रदेश के महामहीम राज्यपाल श्री मंगूभाई पटेल बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। साथ ही खजुराहो के माननीय सांसद श्री वी.डी.शर्मा और माननीय विधायक श्री अरविंद पटेरिया विशेष रूप से उपस्थित थे। सभी अतिथियों का स्वागत संचालक संस्कृति श्री एन.पी.नामदेव द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल महोदय ने अपने उद्बोधन में कहा कि शिल्प कला की तीर्थ नगरी में आयोजित 51वें खजुराहो नृत्य समारोह में एक बार फिर शामिल होकर बहुत खुशी हो रही है। मध्यप्रदेश संस्कृति विभाग के तत्वावधान में 139 नृत्य कलाकारों ने 24 घंटे, 9 मिनट, 26 सेकंड तक लगातार नृत्य कर, जो गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड बना है, वह हमारी संस्कृति की गौरवशाली धरोहर का प्रतीक है। प्रदेश का मान बढ़ाने वाले वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन में शामिल सभी नृत्य कलाकारों, समन्वयकों, गुरुओं और आयोजकों को बधाई देता हूँ। गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में प्रदेश के नाम 6 कीर्तिमान दर्ज कराने की विशेष उपलब्धि के लिए राज्य सरकार के प्रयास सराहनीय है। समारोह में बाल नृत्य महोत्सव,600 से अधिक वाद्ययंत्रों पर केंद्रित नाद प्रदर्शनी और भरतनाट्यम नृत्यांगना पद्मविभू?षण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के कला अवदान पर केन्द्रित प्रदर्शनी-सह-व्याख्यान गतिविधि प्रणाम के नवाचार सराहनीय है। साथ ही चित्र-कथन, रूपंकर कला पुरस्कार से पुरस्कृत चित्रकारों और शिल्पकारों की प्रदर्शनी, शिल्प और व्यंजन मेले के आयोजन, समारोह की विविधता को समृद्ध करने के प्रशंसनीय प्रयास हैं। बुंदेलखंड की धरती में शौर्य और साहस के साथ कला और संस्कृति का ऐसा संगम है, जहाँ शस्त्र और शास्त्र के समन्वय की पराकाष्ठा देखने को मिलती है। अद्वितीय वास्तुकला, सांस्कृतिक धरोहर और ऐतिहासिक विरासत की नगरी खजुराहो, भारतीय संस्कृति और कला का अद्वितीय गौरव है। खजुराहो नृत्य समारोह, हमारी शास्त्रीय नृत्य की विविधता और समृद्धता को प्रदर्शित करने और विस्तारित करने में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है। जिसने भारतीय कला और संस्कृति की विविधता में एकता को देश-विदेशों में मजबूत और बढ़ावा देने का अभूतपूर्व कार्य किया है। नृत्य समारोह में विभिन्न कलाओं के अद्भुत समागम से खजुराहो अब कलाकारों की नगरी के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित हो गया है। इसी का सुखद परिणाम है कि आज यह आयोजन, कला प्रेमियों के अद्भुत समागम के साथ पर्यटन का विशेष आकर्षण केन्द्र भी बन गया है। सभी कला साधकों से मेरा अनुरोध है कि भारतीय लोक संस्कृति के आध्यात्मिक और भौतिक पक्षों को अपनी कला के विभिन्न रुपों में प्रस्तुत करें। हमारी कला के एकत्व भाव को अपनी कला साधना में प्रस्तुत कर भारत की सांस्कृतिक समृद्धता को विश्व के हर कोने तक ले जाने के लिए भावी पीढ़ी को तैयार करें। भारत की समृद्ध गौरवशाली प्राचीन और ऐतिहासिक कला संस्कृति के साथ यह कला और संस्कृति की अनुपम और अद्वितीय प्रदर्शन स्थली के रूप में खजुराहो नृत्य समारोह विश्व में अपनी पहचान बनाये। आशा है कि खजुराहो नृत्य महोत्सव हमारी उत्कृष्ट पाषाण शिल्पकला के साथ हमारी शास्त्रीय कलाओं को विश्व पटल पर और विस्तारित करने में सफल होगा। मैं एक बार पुनः समारोह में शामिल सभी पद्म पुरस्कार और संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से विभूषित कलाकारों को बधाई और शुभकामनाएं देता हूँ। समापन अवसर पर खजुराहो के सांसद श्री वी.डी.शर्मा ने कहा कि माननीय राज्यपाल महोदय का स्नेह खजुराहो के प्रति सदैव बना रहता है। उन्होंने कहा कि खजुराहो धर्म, अध्यात्म और कला का अद्वितीय केंद्र है। खजुराहो नृत्य समारोह के मंच पर प्रस्तुति देना हर नृत्य कलाकार के लिए सौभाग्य होता है और यहां प्रस्तुति देने के बाद ही वह स्वयं को परिपूर्ण मानता है।

नृत्य प्रस्तुतियां : अंतिम दिवस की पहली प्रस्तुति डॉ.पियूष राज और सुश्री मिताली वरदकर की रही। कथक और ओडिसी के सौंदर्यपूर्ण समिश्रण से उन्होंने महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर %पार्वती परिणय% की कथा की प्रस्तुति दी। इस रचना का लेखन पद्मश्री डॉ.पुरु दाधीच ने किया है। नृत्य निर्देशन पद्मश्री डॉ. पुरु दाधीच ने एवं उनका सहयोग गुरु शुभदा वराडकर ने किया। इसकी संगीत रचना श्री कार्तिक रमन और श्री कौशिक बासु की थी। इसमें गायन - श्री वैभव मांकड़, तबला - श्री कौशिक बसु, मर्दल श्री रोहन दहाले, सितार - श्रीमती अलका गुजर, मंजीरा- गुरु शुभदा वरदकर ने संगत दी। अगली प्रस्तुति सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और नृत्यांगना सुश्री मीनाक्षी शेषाद्रि की ओडिसी नृत्य की थी। 80 और 90 के दशक रंगीन पर्दे की सबसे लोकप्रिय अभिनेत्री मीनाक्षी शेषाद्रि जब मंच पर नमूदार हुईं तो पूरे उल्लास के साथ सुधिजनों ने उनका स्वागत किया। मीनाक्षी चार प्रमुख शास्त्रीय नृत्य शैलियों– भरतनाट्यम, कथक, कुचिपुड़ी और ओडिसी में निष्णात हैं। वे उत्तरी और दक्षिणी भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी निपुण हैं। वर्तमान में वे मुंबई में गुरु रवींद्र अटिबुद्धि से ओडिसी नृत्य का प्रशिक्षण ले रही हैं। खजुराहो के सिद्ध मंच पर उन्होंने सुधिजनों को अपने नृत्य से आध्यात्मिकता, भक्ति और प्रेम की एक अनूठी यात्रा कराई। पहली प्रस्तुति इष्ट देव आराधना की थी। इस नृत्य में उन्होंने भगवान शिव की स्तुति नृत्य के माध्यम से की, जो नटराज के रूप में नृत्य के अधिपति हैं। यह आराधना उनकी असीम भक्ति और दिव्य ऊर्जा का सजीव चित्रण था। दूसरी प्रस्तुति रथ यात्रा पल्लवी थी। यह शुद्ध नृत्य की अनुपम प्रस्तुति रही, जिसमें श्रीजगन्नाथ पुरी की भव्य रथयात्रा का सौंदर्य और उल्लास नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। तीसरी और अंतिम प्रस्तुति थी अष्टपदी संकलन। यह कवि जयदेव द्वारा रचित तीन अष्टपदियों का संयोग था, जिसमें राधा और कृष्ण की प्रेमगाथा अभिव्यक्त की गई। प्रथम भाग में राधा कृष्ण से मिलने की व्याकुलता को दर्शाया, फिर उनके प्रेम में विश्वासघात से उत्पन्न पीड़ा को प्रकट किया और अंततः कृष्ण स्वयं राधा से क्षमायाचना करते हैं।अंतिम दिवस की तीसरी प्रस्तुति पद्मभूषण राधा–राजा रेड्डी, दिल्ली की कुचिपुड़ी की थी। भारतीय शास्त्रीय नृत्य अपनी दिव्यता, सौंदर्य और आध्यात्मिकता के लिए प्रसिद्ध हैं और इस प्रस्तुति में यही देखने को भी मिला। प्रथम प्रस्तुति 'शिव स्तुति' थी, जो नटराज के रूप में भगवान शिव को समर्पित है। शिव, जिन्हें 'चिदंबरम नटराज' के नाम से भी जाना जाता है, उनके तांडव नृत्य से सम्पूर्ण सृष्टि गतिशील रहती है। यह प्रस्तुति शिव के उस दिव्य नृत्य की आराधना स्वरूप समर्पित थी।

खजुराहो नृत्य समारोह

नृत्यों के माध्यम से ईश्वरीय चेतना से जोड़ता है दर्शन : प्रो. मीनाक्षी जोशी

विवेक सावरीकर मृदुल

खजुराहो। खजुराहो नृत्य समारोह की चौथी कड़ी में दिन में दो महत्वपूर्ण आयोजन हुए। पहला था 'कलावार्ता' में विदुषी प्रो मीनाक्षी जोशी का 'नृत्य का दर्शन' विषय पर व्याख्यान और अनौपचारिक संवाद सत्र। इसे सुनने कला रसिक और मर्मज्ञ अच्छी संख्या में हाजिर थे। इसी पंडाल के सामने 'प्रणाम' कला वीथि में भरतनाट्यम नृत्यगुरू पद्मविभूषण सुश्री पद्मा सुब्रह्मण्यम को सुनने और उनकी सुदीर्घ कला यात्रा के अनुभवों का पाथेय बटोरने युवा नृत्यांगनाएं भक्तिभाव से नीचे पंक्तिबद्ध बैठी थीं। दोनों का समय एक होने से मन असमंजस में था कि 'हम इधर जाएं या उधर जाएं'। पर वयोवृद्ध पद्माजी के विमान प्रवास की थकावट के चलते कुछ विलंब से पहुंचने की खबर मिली तो राहत की साँस मिली।

प्रो. मीनाक्षी जोशी

नृत्य में दर्शन पर अपनी बात रखते हुए प्रयागराज से पधारी प्रो. मीनाक्षी जोशी ने कहा कि नृत्यों का या सभी प्रदर्शनकारी व ललित कलाओं का दर्शनशास्त्र से गहरा संबंध है। कारण जैसे दर्शन का कार्य हमे स्थूल से सूक्ष्म अवस्था को समझाना होता है, वैसे ही सभी कलाओं का उद्देश्य ईश्वरीय चेतना या ब्रम्हांड की चेतना से हमे जोड़ना होता है। प्रो. जोशी ने कहा कि नृत्य में हम दक्षिणावर्त यानी घड़ी की दिशा में घूमते हैं तो हम ऊपर उठना चाहते हैं। जबकि कुआँ हम वामावर्त खोदते हैं क्योंकि हमें नीचे जाना होता है। इसी तरह मंदिर में हम सीधी हाथ की दिशा में प्रदक्षिणा करते हैं। इस तरह घूमने से जो स्पंदन तरंगें उठती हैं, वे ऊर्ध्वगामी होती हैं। इसीलिए हमारी चेतना ऊपर की ओर उठती हैं और हमें ईश्वरीय अनुभूति होती है। डॉ मीनाक्षी जोशी ने बताया कि नृत्य के शुद्ध पक्ष 'नृत्त' में ताल पर पैरों के लयबद्ध थिरकने से उठने वाली तरंगें जब एक खास आवृत्ति में दर्शकों तक पहुंचती हैं तो कला, कलाकार और दर्शकों में एक अनूठा तादात्म्य स्थापित होता है, जो आनंद की सृष्टि करता है। बाद में डॉ. मीनाक्षी जोशी ने मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार जैसे दर्शन के विषयों को लेकर भी दिलचस्प विचार साझा किए। संचालन रंगकर्मी और फिल्म समीक्षक सुदीप सोहनी ने किया।

नर्तन करती मूर्तियों में गति की खोज

पद्मा सुब्रमण्यम

'प्रणाम' वीथि के सुसज्जित सभा मंडप में पद्मविभूषण डॉ पद्मा सुब्रह्मण्यम ने बहुत सहजता से अपनी नृत्य साधना के प्रारंभिक संघर्ष और चुनौतीपूर्ण पड़ावों पर प्रकाश डाला। उन्होंने चिदंबरम, तंजाऊर और कुंभकोणम के मंदिरों में नर्तन करती स्थिर मूर्तियों का गहन अध्ययन कर स्थापित किया कि ये मुद्राएं (करण) चलायमान नृत्य अवस्थाओं का स्थिर चित्रण (मूर्तिकरण) है। सात्विक तेज और संतोष से भरी पद्माजी ने बताया कि कैसे अपने गुरू डॉ. टी. एन रामचंद्रन की प्रेरणा से उन्होंने चिदंबरम मंदिर के गोपुर (बड़े प्रवेश द्वार) में उत्कीर्णित नृत्यरत प्रतिमाओं की मुद्राओं को भरतनाट्यम में शामिल करना प्रारंभ किया और कैसे अनेक आलोचनाओं का सामना कर अंततः सर्वमान्यता पाई। पद्माजी ने बताया कि कुल 108 करण (नृत्य की मूल इकाइयां) मुद्राओं की डिजाइन तैयार करने के बारह वर्ष बाद जब वे इंडोनेशिया के मध्य जावा में प्रंबनन मंदिर पहुंची तो यह देखकर दंग रह गई कि वहां के गोपुर में लगी पचास से अधिक मूर्तियां मेरे बनाए करण रूपाकारों से हूबहू मिलती थीं। पद्माजी के संक्षिप्त उद्बोधन के बाद डॉ. जयश्री राजगोपालन और सुश्री अनुराधा विक्रांत ने डॉ पद्मा सुब्रह्मण्यम के कला अवदान पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर पद्माजी पर दूरदर्शन द्वारा निर्मित एक विशेष वृत्तचित्र भी प्रदर्शित किया गया। पूरे संवाद सत्र को भोपाल की सुपरिचित भरतनाट्यम नृत्यगुरू डॉ. मंजुमणि हातवलने ने हिंदी और अंग्रेजी में बहुत कुशलता से संचालित किया।

प्रवत कुमार की ओजस्वी ओडीसी प्रस्तुति

नृत्य समारोह में रविवार की चौथी शाम दो कथक और एक ओडीसी, कुल तीन प्रस्तुतियां हुईं मगर भुवनेश्वर से पधारे प्रवत कुमार स्वाईन और दल की ओडीसी प्रस्तुति सब पर भारी पड़ी। कमाल की ऊर्जा, पूरे मंच का उपयोग, मोहक वेशभूषा और शास्त्रीय पक्ष को नाट्यमय ढंग से पेश करने की खूबी ने इस दल की प्रस्तुतियों को यादगार बना दिया।

शाम की सभा मध्यप्रदेश के उज्जैन से पधारी नृत्यांगना सुश्री पलक पटवर्धन के कथक से हुई। जयपुर घराने से संबद्ध पलक और उनके नर्तन दल ने 'भक्त वत्सलम' की प्रस्तुति दी। पद 'नरतक राधा नंद किशोर' जो राग केदार पर था, में सुंदर लय ताल भरे और शांत रसभाव जगाते इस नृत्य के बाद होली पर आधारित नृत्य संरचना अच्छी रही। सुश्री पलक पटवर्धन ने अपने कथक प्रदर्शन का समापन सूरदासजी लिखित 'आश्रय का पद' से किया। नृत्य के बीच में पं. माधव तिवारी की पढंत, डॉ. विनीता माहुरकर की सितार, ऐश्वर्य आर्य की पखावज और विनायक शर्मा की तबला संगत उत्तम थी। पर अच्छी हारमोनियम संगत दे रहे कुलदीप दुबे का गायन उतना प्रभावी नहीं रहा। लेकिन भुवनेश्वर के प्रवत कुमार स्वाईन और उनके नर्तकों की टीम ने इतने ऊर्जस्वी ढंग से ओडीसी प्रस्तुति दी कि दर्शक बारबार दाद देने के लिए विवश हुए। प्रवत कुमार के नृत्य में शास्त्रोक्त निपुणता के साथ मंच के कुशल नियोजन और प्रकाश संयोजन का भी बड़ा हाथ रहा। कंदरिया महादेव मंदिर के मध्य में मंच के पीछे एक और मंदिर के लिए सीढियां जाती हैं। तो दाहिने और बांयी ओर से प्रवेश और निर्गम नीचे से ऊपर आकर होता है। इस कारण मंच के इस असामान्य फैलाव का प्रयोग अनेक गुणी नर्तकों ने किया है, लेकिन इसका कोरियोग्राफी में सबसे प्रभावी इस्तेमाल करने में प्रवत कुमार सफल हुए। नवरस पर केंद्रित 'रसविचित्र' की उनकी पहली प्रस्तुति रागमालिका और तालमालिका में निबद्ध थी। इसमें भगवान शंकर द्वारा क्रोधावेश में बालक गणेश का सिर काटने और बाद में हाथी का शीश जोड़ देने पौराणिक कथा को पेश किया गया। उन्होंने क्लासिक नाटकों में प्रयुक्त होने वाली रंगपटी का प्रयोग कर प्रस्तुति को काफी नाट्यमय बनाया। षड़रिपू याने काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह व मत्सर पर प्रवत कुमार की प्रस्तुति भी सुंदर थी।

अदिति मंगलदास की आकर्षक प्रस्तुति

रविवार शाम की अंतिम पेशकश दिल्ली से आईं सुश्री अदिती मंगलदास की थी। पंचतत्व पर केन्द्रित उनकी प्रस्तुति आकर्षक और समकालीन विचार और विषमताओं को बताने वाली थी। 'सावन आयो' पर अदिति के पैरों का काम और लयकारी के साथ अभिनय का संतुलन देखते ही बनता था। अलबत्ता नेपथ्य से उद्घोषकों द्वारा प्रस्तुतियों के तकनीकी विवरण कभी देने, कभी छोड़ देने या गलत उच्चारित करने (षड़रिपू को सदारिपू या रागमालिका को राग मलिका)से रस भंग होता रहा।

हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Bhopal Main - 02 Mar 2025 - Page 13

51वें खजुराहो नृत्य समारोह ने बिखेरी शास्त्रीय नृत्यों की मनमोहक छटा

संध्या बेला में नजर आया कल्पना से नृत्य का सुंदर स्वरूप

दिव्य कला के भव्य उत्सव में रचा गिनीज विश्व रिकॉर्ड

24 घंटे 9 मिनट 26 सेकंड तक 139 नृत्यांगनाओं का नृत्य

बाल नृत्य समारोह ने युवा कलाकारों को दिया मंच

खजुराहो से लौटकर मधुरिमा राजपाल

नेपथ्य में मंदिर की पाषाण मूर्तियां, ऊपर खुला आसमान, सामने देश और विदेश से आए सुधि कला रसिक देश विदेश से आए कलाकारों के साथ एक अविस्मरणीय अद्भुत प्रस्तुतिकरण का साक्षी बना 51वां खजुराहो नृत्य समारोह। गिनीज विश्व रिकॉर्ड के रूप में इस वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन में 24 घंटे 9 मिनट 26 सेकंड तक प्रदेश की 139 नृत्यांगनाओं द्वारा तराना 'अनंत' की प्रस्तुति देकर कलारसिकों को भावविभोर कर दिया। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग के लिए उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग एवं जिला प्रशासन-छतरपुर के सहयोग से आयोजित नृत्य समारोह का शुभारंभ प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया तो वहीं दिव्य कला के इस भव्य उत्सव का समापन प्रदेश के राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने किया।

दो नई कड़ियां जुड़ीं

स्वयं में नवीन को तराशते इस समारोह में इस बार दो नई कड़ियां जुड़ीं, जिसके तहत पहली कड़ी 'बाल नृत्य समारोह' की रही तो दूसरी कड़ी प्रणाम की रही।

- अविस्मरणीय प्रस्तुतिकरण का साक्षी बना खजुराहो नृत्य समारोह
- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किया था नृत्य समारोह का शुभारंभ
- कार्यक्रम का समापन राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने किया था

नृत्य साधकों ने कल्पना से दर्शाया नृत्य का सुंदर स्वरूप

संध्या कालीन नृत्य प्रस्तुतियों में जहां राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त शोभना नारायण और अदिति मंगलदास ने कथक नृत्य प्रस्तुत किया तो वहीं प्रवत्त कुमार और रतिकांत मोहपात्रा के ओडिसी नृत्य प्रस्तुतियां भी खास रहीं। इस छटा को ओर भी रमणीय और मनभावन बनाया असम के गुरु जतिन गोस्वामी के सत्रिया नृत्य और गुरु कलावती के मणिपुरी नृत्य प्रस्तुतियों ने। शास्त्रीय नृत्य के क्रम में भारती शिवाजी, पल्लवी कृष्णन और गायत्री मधुसूदन के मोहिनीअट्टम के रुप में देश के सुप्रसिद्ध नृत्य साधकों ने अपनी साधना और कल्पना से नृत्य की सुंदर स्वरूपों की छवियां प्रस्तुत की।

'प्रणाम' में दिखी डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की सुदीर्घ कला यात्रा

51वें खजुराहो नृत्य समारोह में विशेष रूप से वरिष्ठ नृत्यांगना और पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के कला अवदान पर केंद्रित 'प्रणाम' प्रदर्शनी भी संयोजित की गई, जिसमें डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम की कला यात्रा की स्मृतियां छायाचित्रों में दिखाई दी। साथ ही डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम द्वारा डिजाइन की गई नृत्य पोशाक, उनके शोध आधारित पुस्तकें इत्यादि भी प्रदर्शित प्रणाम में प्रस्तुत की गईं। यह प्रदर्शनी उन नृत्य कलाकारों के लिए प्रेरणा स्त्रोत रही, जो नृत्य में अपना भविष्य तलाशते हैं। प्रणाम में डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम स्वयं उपस्थित रहीं।

शुभारंभ व समापन बेला में प्राची शाह और मीनाक्षी शेषाद्रि की प्रस्तुतियां

बासंती बयार के साथ बुंदेलखंड की ऐतिहासिक धरती खजुराहो की आबो-हवा में घुंघरुओं की झंकार और कला-संस्कृति की मनमोहक रंगत घुलती नजर आई शाम की बेला में। एक हजार वर्ष प्राचीन मंदिरों में छह दिनों तक सजी नृत्य की आभाओं ने दर्शकों के भीतर नवरंगी उमंगें भरीं, जिसमें देश-विदेश के प्रसिद्ध कलाकारों ने नृत्य प्रस्तुतियों में कहीं शिव और शक्ति का सुंदर स्वरुप दर्शाया तो कहीं काम, क्रोध, लोभ और मोह जैसे मानसिक विकारों को नृत्य में पिरोकर कलारसिकों का रसास्वादन किया। संध्या बेला की नृत्य प्रस्तुतियों का शुभारंभ जहां सुप्रसिद्ध अभिनेत्री व नृत्यांगना प्राची शाह ने किया तो वहीं इस समारोह की समापन बेला में सुप्रसिद्ध अभिनेत्री और नृत्यांगना मीनाक्षी शेषाद्रि की नृत्य प्रस्तुति ने नृत्य की विविध शैलियों से कलारसिकों को अवगत कराया।

सुबह सवेरे
A Daily News Magazine
19 Feb 2025 - Page 8

खजुराहो नृत्य समारोह 2025

चंदेलों के गाँव में फिर चहकेगा कलाओं का वसंत

विनय उपाध्याय
वरिष्ठ कला समीक्षक

संस्कृति के द्वार पर उत्सव कलाओं के वंदनवार सजाते हैं और समय के साथ जुगलबंदी करते हुए इतिहास रच देते हैं। विरासतों के महादेश भारत में परंपराएँ संस्कृति का महागान करती हैं और उत्सवों की रंगतें दूर दिशाओं तक उन्हें फैलाती हैं। खजुराहो नृत्य समारोह भारत की मधुमय संस्कृति का एक ऐसा ही स्वर्णिम अध्याय है। दुनिया के मानचित्र पर खजुराहो की पहचान पाषाण पर बनी प्रेम-प्रतिमाओं के सघन मंदिरों से रही है लेकिन बीती आधी सदी में बुंदेलखंड की सरज़मी पर बसी चंदेलों की इस ऐतिहासिक बस्ती को सारी कायनात नृत्य की अलौकिक रंगभूमि की वजह से भी जानती है। वर्ष 2025 इस उत्सव की इक्यानवीं सीढ़ी तय करने की तस्दीक कर रहा है। लिहाज़ा इस उत्सव का परिसर फिर दमक उठा है। यह अवसर है जब भारतीय शास्त्रीय नृत्यों का संदर्भ लेते हुए, विचार और मंथन से गुज़रते हुए सांस्कृतिक अस्मिता, कलात्मक उन्मेष और उस विविधता को भी ठीक से देखा, समझा और गुना जाए जो भारत के उत्कर्ष का प्रतीक रहे हैं।

पचास पार के इस समागमी विन्यास में संस्कृति और कला के उन तमाम रंगों का उजास है जहाँ नृत्य अपनी समग्रता में अनेक आयामों को समेटते दिखाई देते हैं। एक कीर्तिमान गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड का भी जुड़ रहा है। शास्त्रीय नृत्यों के साथ नर्तकों की विशाल मैराथन रैली खजुराहो के सिद्ध मंच पर रोमहर्षक अनुभव होगी।

नृत्य मैराथन (रिले) बनेगा विश्व रिकॉर्ड

सबसे लंबे वृहद शास्त्रीय नृत्य मैराथन (रिले) प्रस्तुति में निरन्तर 24 घंटे से भी अधिक नृत्य प्रस्तुतियाँ होंगी। यह गतिविधि आदिवर्त संग्रहालय, खजुराहो में होगी। गतिविधि का शुभारम्भ 19 फरवरी को दोपहर 2:00 बजे होगा जो निरन्तर 20 फरवरी को सायं 5:00 बजे तक आयोजित की जाएगी। इसका नृत्य निर्देशन/संयोजन कथक नृत्यांगना तथा फ़िल्म अभिनेत्री श्रीमती प्राची शाह, मुम्बई एवं संगीत निर्देशन/संयोजन श्री कौशिक बसु, मुम्बई द्वारा किया जाएगा। प्रारंभिक रूप से 5-5 कलाकारों के मान से 25 ग्रुप तैयार किये जायेंगे, जिसमें लगभग 125 कलाकार प्रतिभागिता करेंगे। विभागीय संगीत महाविद्यालय-विश्वविद्यालय एवं नृत्य के वरिष्ठ कलागुरुओं के साधनारत शिष्यों को प्रस्तुति के लिए अमंत्रित किया गया है।

बाल नृत्य महोत्सव

खजुराहो नृत्य समारोह जैसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आयोजन से नई पीढ़ी को जोड़ने के लिए मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग ने पहली बार एक नई गतिविधि जोड़ी है। जिसका नाम 'खजुराहो बाल नृत्य महोत्सव' है। इस नृत्य महोत्सव के अन्तर्गत मध्यप्रदेश के मूल निवासी 10 से 16 साल के युवा नृत्य कलाकार एक पृथक मंच पर अपनी प्रस्तुति दे सकेंगे।

51वें खजुराहो नृत्य समारोह में इस वर्ष एक नई अनुषांगिक गतिविधि 'प्रणाम' को जोड़ा गया है। इस गतिविधि के अंतर्गत सुविख्यात नृत्यांगना और पद्मविभूषण डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम के जीवन और कला अवदान को अभिव्यक्त करते आयोजन होंगे। व्याख्यान एवं संवाद हेतु डॉ. जयश्री राजगोपालन, अनुराधा विक्रांत, महती कन्नन, अरविंथ कुमारस्वामी, पियाल भट्टाचार्य, डॉ. राजश्री वासुदेवन, अर्जुन भारद्वाज एवं डॉ. सच्चिदानंद जोशी उपस्थित रहेंगे।

इसी के साथ कुचिपुड़ी की सुप्रसिद्ध नृत्यांगना पद्मभूषण विदुषी राधा-राजा रेड्डी, मणिपुरी नृत्य कलाकार पद्मश्री दर्शना झवेरी, छाऊ नृत्य कलाकार पद्मश्री शशधर आचार्य, ओडिसी नृत्य कलाकार प्रवत कुमार स्वाइन, मोहिनीअट्टम नृत्य कलाकार पद्मश्री विदुषी भारती शिवाजी, कथक नृत्य कलाकार पद्मश्री विदुषी शोभना नारायण, सत्रीय नृत्य कलाकार पद्मश्री गुरु जतिन गोस्वामी शामिल हैं। वहीं एसएनए अवॉर्डी में मोहिनीअट्टम नृत्य कलाकार सुश्री पल्लवी कृष्णनन, भरतनाट्यम नृत्य कलाकार डॉ.संध्या पुरेचा, कुचिपुड़ी नृत्य कलाकार सुश्री दीपिका रेड्डी, कथकली नृत्य कलाकार श्री सदानम के.हरिकुमार, कथक नृत्य कलाकार सुश्री अदिति मंगलदास, मणिपुरी नृत्य कलाकार गुरु कलावती देवी-बिम्बावती देवी के नाम शामिल है। फ़िल्म अभिनेत्री और भरतनाट्यम की सुप्रसिद्ध नृत्यांगना मीनाक्षी शेषाद्रि की एकल नृत्य प्रस्तुति भी होगी।

नृत्य समारोह में इस वर्ष संस्कृति विभाग द्वारा संकलित 600 से अधिक वाद्ययंत्रों की प्रदर्शनी 'नाद' भी आकर्षण का केन्द्र होगी। देश के ख्यातिलब्ध 10 चित्रकार खजुराहो नृत्य समारोह के मंच पर होने वाली नृत्य प्रस्तुतियों को रंग और कूची की सहायता से कैनवास पर सजीव चित्रण करेंगे। इसी बीच मध्यप्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा इस वर्ष समारोह के दौरान स्काई डाइविंग-एमपीटी पायल रिसोर्ट खजुराहो, हॉट एयर बैलून, कैम्पिंग-पन्ना, विलेज टूर-पुराना खजुराहो गाँव, ई-बाईक टूर-खजुराहो मंदिर, सेगवे टूर-खजुराहो, वॉटर स्पोर्ट्स-कुटनी जैसी रोमांचकारी गतिविधियाँ आयोजित की जाएंगी।

दरअसल खजुराहो नृत्य समारोह किसी उत्सव का सतही रोमांच नहीं है। यह किसी गंतव्य तक पहुँचने वाले पाँवों की यात्रा भी नहीं है। यह तो 'चरामेति' की भारतीय आकांक्षा का रूपक है। चलते रहने का संस्कार है। यह यात्रा है विरासत और उत्तराधिकार की। साधना और समर्पण की। दीक्षा और ज्ञान की। बंधनों से कला की मुक्ति की। अभिव्यक्ति के आयामों की। भाव-रस भीगी लय-ताल भरी भंगिमाओं की। लालित्य और सौन्दर्यबोध की। देह, मन और आत्मा के अंतरसंबंधों की। अनंत में पंख पसारती पवित्र कामनाओं की यह यात्रा है, जो घुँघरूओं की झंकारों में संस्कृति के महादेश को जगाती है। मौसम की चौखट पर मधुमास की दस्तक होती है तो धरोहर की धरती पर एक बार फिर यह पुरातन वैभव जी उठता है। एक उत्सव कला के घुँघरु बांधकर जीवन के उल्लास को नाचने लगता है। राग-रागिनियों में भावों की कलियाँ मुस्कुराने लगती हैं। परनों-तानों की लय-गतियों में पाँव थिरक उठते हैं। यूँ कंदरिया और जगदंबी मंदिरों का पवित्र परिसर संस्कृति के सुनहरे छंदों से गमक उठता है। परम्परा की उंगली थामकर साधक मन अनंत की यात्रा पर निकल पड़ता है। खजुराहो... जहाँ पत्थरों के खुरदुरे दामन पर प्रेम की मूरतें रचते हुए शिल्पियों ने कभी सोचा न होगा कि मंदिर की दीवारों से उठते शिखर एक दिन सारे संसार के लिए इंसानी तहज़ीब का पैगाम बन जाएंगे।

मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग की उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत एवं कला अकादेमी ने इक्यावनवें पचासवें उत्सव का विन्यास करते हुए उन सभी विधाओं और अनुशासनों को जगह दी है जहाँ रचनाशीलता, दरअसल मनुष्यता के आदर्श को हासिल चाहती है। निश्चय ही संभावनाओं के दरीचों पर एक जलसा अपनी अहमियत साबित करता नए समय को पुकारता रहा है।

मंदिर का किनारा, मुक्ताकाशी मंच, हवा की हौली-हौली हिलोरें, फलक पर खिलखिलाता चाँद...। सहसा दूर ठिठके अँधेरे को चीरकर मंच पर प्रकट होती है नर्तकी। मानों साँझ एक सुंदर परी बनकर धरती पर उतर आई हो।

प्रेम प्रतिमाओं की प्रसिद्ध नगरी खजुराहो की वादियों में हर साल वसंत ऐसा ही दिलकश रंग उँड़ेलता है। पत्थरों के खुरदुरे दामन पर लिखी जीवन की वासंती कविता पढ़ने आए हज़ारों सैलानियों को दावत देती शामें लय-ताल की अनूठी खुमारी में बदल जाती हैं। भारत की संस्कृति के गौरवशाली अतीत की रोमांचक स्मृतियों का झरना फूट पड़ता है।

खजुराहो के नृत्य परिसर में उमड़ने वाले अनेक देशी-विदेशी कला प्रेमी इस उत्सव के शिल्प और उसके कल्पनाशील संयोजन पर रीझते रहे हैं। मंदिरों की पृष्ठ भूमि उन्हें नृत्य प्रस्तुतियों के साथ रूहानी रिश्ता जोड़ने में मदद करती है। खजुराहो आना किसी भी सैलानी के लिए बूझ और बोझिल अहसास नहीं है। धरातल का सोच रखने वाले दर्शकों को 900 से 1400वीं सदी के काल में बनी इन मूर्तियों में देह-राग का संगीत सुनाई पड़ सकता है, पर अध्यात्म का सिरा पकड़कर चलें तो ये प्रतिमाएँ मोक्ष की ओर ले जाती हैं। मूर्धन्य नृत्य गुरु पंडित बिरजू महाराज कहते हैं- 'खजुराहो में मंदिर और मन की साधना के मंदिर का मिलन होता है।' इक्यानवें सोपान पर यह उत्सव एक बार फिर अपनी स्वर्णिम स्मृतियों को समेटता संस्कृति के भाल पर कला के अक्षत-चंदन का अभिषेक कर रहा है।

डिजिटल न्यूज लिंक

ईटीवी

https://www.etvbharat.com/en/!state/khajuraho-dance-festival-2025-enters-guinness-book-of-world-records-enn25022605569

साधना न्यूज

https://youtu.be/BWT3YBlws3U?si=r9h3VIxL4sq58CFK

द सूत्र

https://thesootr.com/state/madhya-pradesh/51st-khajuraho-dance-festival-kuchipudi-kathak-mohiniyattam-kathakali-8747854

लल्लूराम

https://lalluram.com/51st-khajuraho-dance-festival-third-day-evening-adorned-with-kuchipudi-mohiniyattam-and-kathakali-dances/

लाइव न्यूज

https://livevns.news/state/madhyapradesh/third-evening-of-kuchipudi-mohiniyattam-and-kathaphp/cid16266952.htm

हिन्दुस्थान समाचार

https://www.hindusthansamachar.in/Encyc/2025/2/22/Third-evening-of-Kuchipudi-Mohiniyattam-and-Katha.php

24 घंटे न्यूज

https://www.facebook.com/share/v/1BYhaFN4Ad/